[illegible]

नं०

2

५८

#5467

नं. ६४२७

रत्न परीक्षा

१०८ पत्राणि

विषयः प्रकीर्णः

Part 1st
F — 62

Part 2nd — 17

Part 3rd = 29

Totle = 108

Complete

Sharma

१ ॐश्रीगणेशायनमः ....
.... हिले परीक्षा करके जो वि
शुद्ध और गुणयुक्त वोयहोय ...... सव
विजानेमे रखनेके योगहै १ । वेअथैव रत्न
जिसप्रकार मनुष्यके नाना प्रकारके
सुखका निदानहै उसीप्रकारसे दोषयु
क्तरत्न नानाप्रकारके दुःखका देतेहै अ
तएव रत्नका यथार्थ लक्षणादि लिखा
जाताहै २ ॥ रत्नोंकीजात रत्नपरीक्षा
पण्डित करतेहैं के हीरा मोती गोमेदक
माणिक पन्ना नीलम या लीला लसुन
पोखराज कर्केतकका तामड़ा नरम स्फ
टिक और मूंगा पदार्थकी रत्नमें गणति
है अरु यत्न पूर्वक संचय करतेहै ३ ।
रत्नपरीक्षक पण्डित पहिले रत्नका कई
रङ्ग शिल्प दोष और लाभ हानि परीक्षा
करके फेर उसको कीमत करेङ्ग ४
जो रत्न कुदिन और कुलग्नमें उत्पन्न
होताहै सोई रत्न गुणहीन और दोषी
होतेहैं ५ ॥ जोराजा अपने मंगलकी
कामना करतेहैं उनको उचितहै कि
पहिले रत्नकी परीक्षा करके उसमें

जो निर्दोष होय उसीको संग्रह और धारा
ण करैं ॥ ७ ॥ जो मनुष्य रत्न शास्त्रमें
निपुण सर्वदा रत्नका व्यवहार करते हैं
किस रत्नका क्या मोल उचित है इसके
विशेष जाननेवाले अरु रत्न छेदनेमें प
रिपक्क हैं वही लोक रत्न पारखी हैं ८ ।
रत्नोंके गुणदोषके प्रभावसे मनुष्योंके
शुभ अरु अशुभ होनेसे यहबात प्रकाश
करणेकेवास्ते यह जगहोंमें स्यमंतकके
बयान योगकियाहै ॥ ....

....

वेदका नाम .... न छोटेकानाम प्रसे
न भगवान् सूर्य्यदेव सत्राजितके परम मि
त्र थे ९ । एकसमै सत्राजित समुद्रके कि
नारे बैठकर सूर्य्यकी आराधना करतेथे
एकाग्रचित होकर सूर्य्यका स्तोत्र पाठ
करतेथे एकाग्रचित होकर सूर्य्यका स्तो
त्र पाठ करतेथे उससमें सूर्य्य उनके पास
आये । सत्राजितने सूर्य्यकी मूर्त्ति स्पष्ट
भावनाही देखकर कहा हेभगवन् मैं आ
काशमें आपको जिसतरहसे अग्निके पि
ण्डके समान देखताहूं आज आप हमारे

सामने प्रत्यक्ष है परंतु उसपरभी मैं आप
को उसी तरहसे देखताहूं आपकी कृपा
का कोई चिह्न मैंने नहिं देखा १० । सत्राजि
तके इसप्रकार कहनेसे सूर्य्यभगवानने
2 अपने कण्ठसे स्यमन्तकनाम मणि खो
लकर रखदिया । अनन्तर सत्राजितने सूर्य्य
देवका प्रत्यक्ष दर्शनकिया । उनका रङ्ग
तांबेके समान थोड़ा लाल और उज्जल
छोटा आकार नेत्र थोड़ा पिङ्गल वर्ण अर्था
त थोड़ा नीला और बहुत पीला मिलाहुया
अनंतर सत्राजितने प्रणामकरके स्तुतिकि
या जब सूर्य्यभगवानने उसको कहा कि
सत्राजित तुम नित्य अपने इच्छापूर्वक व
रमांगो । सत्राजितने सूर्य्यदेवताकी यह
वार्त्ता सुनकर उसी मणिरत्नको मांगा ।
फेर सूर्य्यदेवताने सत्राजितको वहमणि दे
कर अपने स्थानको गमनकिया ११ । स
त्राजित उस अमोल मणिरत्नको अपने
कण्ठमें धारकर सूर्य्यके समान तेजस्वी
होकर अपने तेजको चारों ओर प्रकाश
करतेहुये द्वारका नगरमें पहुंचतेभये १२ ॥
और द्वारकानिवासी मनुष्य सत्राजितको

आवेते देखकर पृथ्वीके भार नाश करने
वाले अंशरूप मनुष्यरूप आनादि पुरुषोत्त
मकेपास जाकर प्रणाम करकेबोले भग॰
वन् आपके देखनेकेवास्ते सूर्य्यदेव आते
हैं श्रीकृष्ण उनकी वह वार्त्ता सुनकर
हसे हसते बोले तुमलोक जिसको सू
र्य्यदेव जानतेहो वह सूर्य्यनहिहै यह रा
जा सत्राजितहै उसने सूर्य्यकी दीईहुयी
स्यमन्तकनाम ....
..........................याहै इसलिये तुम निर्भय
उसकोदेखो । अनंतर श्रीकृष्णकी इस
वार्त्ताको सुनकर सब द्वारका निवासी च
लेगाई ... ।२ ।। सत्राजितने वही स्यम॰
न्तकनाम महामणिको अपने स्थानको
रखाथा ।४ वही श्रेष्ठमणिरत्न प्रतिदिन
आठ भार सुवर्णदेताथा ।५ उस स्यमन्त॰
मणिके प्रभावसे राजमें पाणिका वर्ष॰
ना सांप अग्नि चोर और दुर्भिक्ष इस सब
का भय नथा ।६ उसमहारत्नको राजा
उग्रसेनके लायक समझकर श्रीकृष्णने
उसके लेनेके अभिलाषी होकरभी जान
के झगड़ेके पंरंतु शक्तिथी उसको जोर

से नलिया १७ स्यमणि पर श्रीकृष्णको
लोभ उत्पन्नहुयाहै पर समझतेहै कि पी·
छे हमारेपास यह प्रार्थनाकरेगा इस भ
यसे सत्राजितने अपने भाई प्रसेनको व
ह मणि देदयी १८ ॥ नवरत्नानि हीरा
माणिक लसनिया मोति गोमेदक मुङ्गा
पन्ना पोखराज और नीलम वा नीला य
ही नौ प्रकारके रत्नोंको नवरत्न कहते
है ॥ गुणादि हीरेके देवता ओंने समस्त
रत्नोंमे हीरेको श्रेष्ठकहाहै तदनुसार प
हिले हीरका विषय लिखाजाताहै १।
हेम हिमालय प्रवेश मातङ्ग दाक्षिणात्य
के अन्तर्गत ऋष्यमूक पर्वतके निकट
पम्पा नदीके किनारेका देश सौराष्ट्र पो
ए रङ्गपुर दिनाजपुर राजसाही वीरभू
म मुरसिदाबाद नवद्वीप वर्द्धमान और मे
दिनीपुर वगयरह प्रदेश कलिङ्ग द्राविड़
और उड़िष्याके मध्यवर्ती देश कोशल
अयोध्या महाराष्ट्र देशके

शतद्रु अर्थात शतलंज अरु सिन्धु नदि के मध्यदेश इहीआर जोगोंमे हीरेकी खा नेंहें १ हिमालय प्रदेश अर्थात हिमालय पर्वतके निकटके स्थानोमें जो हीरा उत पन्न होताहे उसके रङ्गमे तांबापन फ लकता है वेणगङ्गाके किनारे जो हीरा उत्पन्न होताहे वह चन्द्रमाके समान उज्व ल चमकताहे सौवीर देशमें जो हीरा निकलताहे उसका रङ्ग श्वेत कमलके समान अथवा श्वेत बदलके समान हो ताहे सुराष्ट्र देशमें जो हीरा उत्पन्न होता हे उसकारङ्ग तांबेके समानहोताहे क लिङ्ग देशमें जो हीरा उत्पन्न होता उस का रङ्ग स्वर्णके समान होताहे । अ योध्यामे जो हीरा उत्पन्न होता उसका र ङ्ग पीला होताहे पौण्ड्र देशमे जो हीरा

उसन्नहोता उसकारंग श्यामवर्ण होताहै
अरु मातंग देशमें जो हीरा पैदा होताहै उ
सकारंग पीला होताहै ३ ॥ पन्नालाली
मन और फरना १ परना २ मटराजमें ३
गोलकुंड ४ इसीखानसेकोहनूरभीहोता
है इसेखानका पांचतोला हीरानवाबके
पासरहेथा । सूरतमेंजा गोलकुंडसे एक
रत्तीसे पांचसौरत्ती ५०० तकमिलताहै ।
वेणानदीकारूरजेसा निकलताहै प
करतीका मोल १ । रुपैयए वा ५ । रुपयाहै
फरने परनेका पांच विशेससे सौ रत्तीतक
मिलताहै इसवेले । अरु इस वर्तमानका
लमें केपके मुलकसे बहुत हीरे होतेहै
न ॥ वज्र विद्याके पण्डित कहतेहैं कि
हीरेमें पृथ्वी जल आकाश तेज और वा
यु यही पञ्च महाभूत सामान्य विशेष
करकेहै ४ ॥ जिस हीरेमें पृथ्वीका
अंश ज्यादाहै वहहीरा मोटा होताहै जिस
में जलका अंश ज्यादाहै वह हीरा चन्द्र
समान अर्थात चमकदार अरु निर्मल
होताहै ५ ॥ उत्पत्ति अंगरेजी मत वि
शेष क्या कि कहतेहैं ग्रेनके जजीरेमें

उत्पत्ति एक पुरुषका नामहैथा जब उ
ह बालपनेमें हिंडोलेमें ही था अरु बृहस्प
ति तिसके अनुकूलथा कालांतरमें उस पु
रुषको अशुभ निवारण करके बृहस्पति
ने वज्रदेह बनाया ओही हीरेका प्रथम
कारण उत्पत्तिकाहै १ ॥ मलोली नदीसे
भी हीरे होतेहैन ८ ॥ जिसमें आव ......
....
विच्छ और तीक्ष्णाग्र होताहै जिसमें तेजका
अंश अ...... कहै वह हीरा रक्तवर्ण हो
ताहै अरु जिसमें वायुका ...... शस्याद
है वह हीरा हलका तीक्ष्णाग्र और ढ़िराहो
ताहै ९ ॥ जिस हीरेमें पृथ्वीका अंश अ
धिकहै उसको जो धारणकरे वह राजाहै ।
जिस हीरेमें जलका अंश अधिकहै वह
हीरा धारण करणेसे मनकी तृप्ति लक्ष्मी
यश और कीर्ति लाभ होताहै ~ ॥ अरु
जिस हीरेमें वायुका अंश अधिकहै वह ही
रा धारण करनेमें उत्साहकी वृद्धि और
लोकोंसे प्रिय होयगा जिस हीरेमें आका
शका अंश अधिकहै उस हीरेको धारण
करनेसे संपत्ति लाभ होयगा ॥ जिस

हीरेमें तेजका अंश अधिकहै वह हीरा
धारण करनेसे प्रतापी वीरत्व और उत्सा
ह वृद्धि होताहै ८ ॥ जो हीरा वरफ कु
न्दफूल सफेद बदल और चन्द्रमाके स
मान शुक्लवर्ण होताहै और छै कोण
अथवा अठ कोण युक्त तीक्ष्णधार जल
में उत्पन्न होताहै और अंधेरेमें प्रकाश
मान होताहै वह हीरा अति उत्तमहै ९ ।
गुणयुक्त और तीक्ष्णधार हीरा धारण
करनेसे सर्पकी विष और विषधर जन्तु
का विष नष्ट होताहै १० ॥ पन्नालाले
मत संस्कृतपाठशाले और तीन प्रकारके
हीरे पुरुष स्त्री नपुंसक हैं तिनका
विवरण इहहै कि सुंदर गोल अरु फल
श्री तेज युक्त मोटे होवें उह पुरुष ही
रे जानने रेखातथाबिंदु सहित उह जो
पुरुषों ने धारण उनका धारणेसे बल
अरु पुरुषार्थ बधता है । जो हीरा रेखा
तथा बिंदु सहित उह जो हीरा रेखा
तथा बिंदुओं रहित होवे छे कोणों वा
ला होवे उह स्त्री हीरा होताहै उस हीरे
के धारणेसे स्त्रियों की सुंदरता बधतीहै

इस्त्रियोंने धारण करने उचित है २ अरु जो त्रि
कोण वा लंबा होवे उह नंपुसक हीरे
वीर्य्यहीन धैर्य्य रहित होते हैं उह नंपु
स हीरे नंपुसक धारें २ ॥ ....

....

और कोटे चन्द्रमाके समान शीतल
अरु अंधेरेमें प्रकाश मान होवे वह
हीरा सबसे श्रेष्ठ है और इसके धारने
से सब बिमारी नष्ट होती है ११ ॥
जो हीरा गरम जल वा गरम दूध अथवा
गरम घृत और गरम तेलमें पाइदेवे उसी
समय उन वस्तुकी गरमी दूर हो जाय
ऐसा हीरा देवताको दुर्लभ है १२ ॥
मनुष्य गणमें जिस प्रकारके ब्राह्मण
क्षत्रि वैश्य अरु शूद्र यही चार वर्ण है उ
सी प्रकार हीरेमेंभी ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य
और शूद्र यही चार वर्ण है इथक् इथ
क् करके उनका लक्षण लिखेतांहुं १२
जो हीरा शंख कुमुद पुष्प और स्फटिक
के समान शुक्ल वर्ण वह हीरा ब्राह्मण
वर्ण है ब्राह्मणवर्ण हीरा रसायणमें श्रे
ष्ठ है और जो हीरा ससेके नेत्रके समान

रक्त वर्ण वह हीरा क्षत्रिय वर्ण है क्षत्रिय
वर्ण हीरा व्याधि जरा मृत्यु हरणे हारा
होता है जो हीरा नवीन केले के पत्र के
समान सब्ज वर्ण वह हीरा वैश्य वर्ण
है वैश्य वर्ण हीरा धन द्रव्य करके देह
को पुष्ट करता है जो हीरा परिष्कार ख
ड्ग के समान वह हीरा शूद्र वर्ण है १४ ॥
शूद्र वर्ण हीरा व्याधियां हरा करता है अरु
अवस्था थ्य मदा है ब्राह्मण वर्ण हीरे की
छाया सफेद क्षत्रिय वर्ण हीरे की छाया
रक्त वर्ण वैश्य वर्ण हीरे की छाया पीला
वर्ण और शूद्र वर्ण हीरे की छाया कृष्ण
वर्ण होती है १५ ॥ यह दान ......
....
फल लाभ करता है गुण युक्त ब्राह्मण
वर्ण हीरा ... धारण करनेसे वही फल
पावता है १६ ॥ गुणयुक्त क्षत्रि वर्ण
हीरा जिसके ग्रह में होता है उसके सब
कार्यों मे जय लाभ पराक्रम वृद्धि पाव
ता है और शत्रु का नाश होता है १७ ॥
जो मनुष्य गुण युक्त वैश्य वर्ण हीरे को
धारण करे वह मनुष्य कला कुशल

वह्रदर्शी अरोगी अरु यशस्वी होता है १८
जो मनुष्य गुण युक्त शूद्र वर्ण हीरेको धा
रण करे वह मनुष्य अत्यन्त बड़ो पकारी अ
रोगी और धन धान्य आदिसे समृद्धि शील
होयगा १९ ॥ सवर्णमें जड़ा हुया हीरा
देवता लोकभी पसन्द करते है और बना
नेकी सत्तासे ही हीरेकी भिन्नता ......
इदेतिहै २० ॥ वाराहाम नारायण १ वरु
ण २ इंद्र ३ अग्नि ४ यम ५ वायु ६ कदली
कांड सम स्त्रीयोनि सदृश छे कोण होता
है नेत्र तुल्य चतुष्पाद जैसा व्याघ्र सर्प
मुख समान काला मेघोंके आकार होता
है अशोक पुष्पसमान । सब्ज सफेद
पीला पिंगल नीला और पीला मिश्रित
लोमके समान और श्याम यही छे प्रकार
का रंग हीरेमें होता है नारायण वरुण इं
न्द्र अग्नि यम अरु वायु इस छे रंग सुर्कोक्र
करके ऊवेके छे देवता है २१ ॥ वही छे
प्रकार वर्णयुक्त हीरेके मध्य कनेर गंधी
रा अथवा मुंगेके समान रक्त वर्ण अथवा
हलदीके समान पीलारंग यही दोवर्ण
विशिष्ट हीरा राजे लोकोंको अभ्युदयकरे

अंगरेजीमत गुलावीरंग हीरेसे सवजरंग
नीचेके दर्जेकाहै अरु उससे नीचे असमानी
तथा उससे नीचे दर्जेका नीला अरु उससे
नीचे दर्जेका काला अरु हीरेयोंकी संज्ञा
रंगके अनुसार नीचे लिखी जातीहै । वं
शीपत्री कि जिसको हरतालके न्याई व
र्ण जाने जातेहैं परंतु इसको परीक्षिक
लोक पहिचान सकतेहैन नोसादरी कि
जिसकारंग नोसादरीकी न्याईं होवे क
वरासी कि जिसकारंग चांदीकी न्याईं
होताहै । और जो नोसादरीसे थोडा रंग
रखता होवे उसको करनी अरु जेतूनी
कहतेहै ।

का रंग पाया जाता उस हीरेको राजा
धारण कर सकताहै परंतु छ प्रकार रंग
के छे हीरे एकवारी कदी धारण नहि क
रेगा २३ ॥ जिस प्रकार मनुष्यमें ब्राह्म
ण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रके परस्पर सं
योग होनेसे संकर वर्णकी उत्पति होती
है उसी प्रकार हीरेके भी भिन्न वर्ण सं
योग होनेसे संकर वर्ण हीरा होताहै व

ही संकर वर्ण हीरा मनुष्यको कष्ट दायक
कहे २४ ॥ छे कोण अष्टपार्श्वता धारांको
ण धारा धार तिरद्धा चाट गट्ठा समान श्रो
र तीक्ष्णाग्रता यही सब गुण हीरेमे स्वभा
विक पैदा होतेहै २५ ॥ पन्नालालीमत
हीरेके चाटोंके नाम ऊतबी १ अठमास २
छेमास ३ चोरस ४ तलानी अठमास ५
तिर्द्धी ६ त्याला ७ सरू ८ सिंघाड़ा ९ त्रिको
ण १० वदामी ११ इहकेपके हीरेयोंका छ
सातेहै । रत्न शास्त्रके पण्डित हीरेके पांच
गुण पञ्ज दोष अरु चार छाया विवरण
कियाहै २६ ॥ छे कोण हल्का आरो अस
चाट तीक्ष्णाग्रता अरु निर्मलता यही पञ्च
गुण हीरेमे होताहै २७ ॥ जो हीरा विशु
द्ध छे कोण युक्त अत्यन्त निर्मल अर्थात्
वहुत साफ तीक्ष्ण धार उत्तम वर्ण विशिष्ट
हल्का अच्छा चाटदार निर्दोष श्रोर जिस
से इन्द्रधनुषके समान आभा निकले पे
सा हीरा पृथ्वी पर वहुत दुर्लभहै २८ ॥
वहुत हल्का उत्तम वर्णयुक्त गुणयुक्त व
राबर चाट तीक्ष्णाग्र अर्थात् धारीदार इह
श्रेष्ठहै आगे पांच दोष कहतेहै वीर छिद्र

उगा काकपद गडहा यहीसब वर्जित दुः
खदायकहैं और हीरे छोटेभी तोरेके समा
न जिस जगहमें रहे उसी जगामें जरूर
देवतोंका वास होयगा २९ ॥ जो मनुष्य
. . . .

करके पहिरे वह मनुष्य जितने
दिन जीता रहैगा उ...ने दिन द्रव्य संपत
औलाद धन धान्य गो और पशुका मालि
क रहकर जिन्दगानीमें बहुत सुखसे
वास करेगा ३० जो हीरा सबनों शिल्प.
कारोंसे अत... समय होकर पाणीपर
तरेगा वही सब रत्नोंमें बडाहै और उसके
पहिरनेसे बहुत लाभहै ३१ ॥ जो हीरा
बहुत साफ अभेद्य अर्थात् जिसका भेदना
करसके छे कोण बहुत हल्का पाणीपर
तरताहोवे और सूर्यके सन्मुख रखनेसे
इन्द्र धनुषके समान आभा देवे वही ही
रा धारणेसे राजा लोक सब जगह जय
पावने वाले होतेहैं ३२ ॥ जो हीरा जल
से उत्पन्न होताहै अरु जिसका रंग सब
जे ग्रामके ऊपर जेलके हृदके समान
अरु वजनमें एकतोला भारीहोवे उस

हीरेका मोल क्रोड़ १०००००० रुपैया होता
है २३ ॥ मोलकरणे वाला हीरेका कैसा
होवे पंडित हीरेका तर्जनी अंगुली पर ले।
के खिंचे नेत्रकी वक्र दृष्टिसे देखकर रूप रंग
छाया लक्षण विचारे यथोक्त मोल प्रमा।
णसे मोलकरे अन्यथा रौरवनामा नरक
भोगेगा ॥ जो कुतवी छाटका हीराहै सो
लंवा ईके ऊपर चोरस होताहै जेकर उसका
एक कोणा टूटजावेतो त्यागने जोग्यहै उ
ह सर्वस्वनासकारी कहाहै ॥ टूटाकोणा
छिटा और कुवर्ण यही सब दोषवाला ही
रेसे यद्यपि इन्द्र धनुषके समान आभा प्र
काश पावे तोभी धारणेसे धन और संपदा
अरु पुत्र पोत्रा दिकोंकी हानि होवेगी २४ कह
तेहै जोराजा दोषके रहित और विजली।
के समान आभा प्रकाशित हीरा धारे वह
वडा बलवान होकर सब पृथ्वीका राज
लाभ करेगा २५ ॥ रत्न परीक्षक पण्डित
हीरेको पांच ५ दोष कहतेहैं सो कौन कौन
कि मैला छिंटा चिरि गड्डा और काकपद ३
ही पांचहैन २६ ॥ अव इनका फल न्यारा
न्यारा कहतेहै कि प्रथम जो मलिन हीरा

है जिसके पहिरनेसे मन भ्रष्ट होताहै १ छि
टदार हीरेके पहिरणेसे सर्वनाश होताहै २
चिरदार हीरा पहिरणे करके सर्पका भय
होताहै ३ गड्ढा हीरा पहिरणेकर नित्यप्रति
मन दुःखी रहताहै ४ काकपद चिह्नवा।
ला हीरा धारण करे तो पुरुष तुरत न
ष्ट होताहै ५ और छिद्र चार ४ प्रकारका
है बिंदु आवर्त परिवर्त और यवाकृति
तिन चारोंका इह वरवा कहतेहैं कि ला
लरंग गोल चिह्नको बिंदु नाम छिद्र क
हतेहैं १ मध्य गोलाकार चिह्नको आवर्त
कहतेहैं २ सामान्य रक्तवर्ण चिह्नको परि
वर्त कहतेहैं ३ और रक्तवर्ण जो चिह्नवा
ला जवा कृति कहावताहै ४ छिद्र हीरेके
धारणेसे आयु तथा संपदा नष्ट होतीहै १
आवर्त दोष वाला हीरा धारणेसे बहुत प्र
कार भय प्राप्तहोताहै २ परिवर्त दोषवाले
हीरेके धारणेकर रोग करताहै ३ अरु ज
वाकृति दोष वाले हीरेके धारणे सेभी इ
ही फलहै ४ कई पंडितोंके मत इहीहैन
का कि मैंसोंके समान चिह्न लाल होवणे
से हानि होतीहै अरु घोड़े इत्यादि नष्ट होव

नगो ग्रौर पील ··························

······························ रत्ताहै ५ चीर

जेकर सजेतरफ टेढ़ा होवे वह उत्तम ···

फलदेवे खेमे तरफ टेढ़ा होवे तो बहुत

प्रकार के ··· उत्पन्न होताहै जिस चिरमे

फटा मलूम होवे वह चीर होनेसे तल

वारका भय होताहै ६ हीरेमे जो चिर प

क्षीके परके समान होय उसे छेदा कह

तेहै छेदा लक्षण जेकर खब्बे तरफ टे

ढ़ा होय तो अपने कुलके साथमे कल

ह उत्पन्न करे दक्षिण तरफ टेढ़ा होय तो

धनका नाशकरेगा ग्रौर सिधा होय तो

मित्रसे शत्रुभाव करावेगा ८ ॥ जो दा

ग काकके पाग्रोंके समान होय ग्ररु व

ही दाग मलिन होवे उसे काकपद दोष

कहतेहै जो मनुष्य ऐसा हीरा धारे उस

का सर्वस्व नाश होवेगा उसकी स्वामिता

नष्टहोतीहै ग्ररु मृत्यु होवेगा ९ ॥ जि

सहीरेका ग्रगेका हिस्सा ग्रथवा कोई त

रफ टूटा होय ग्रौर जो हीरा दलहीन ग्र

र्थात पलचा तेजहीन ग्ररु देखनेमे गो

लाकार यही हीरा वड़ा दोष तरह तरह

१०

के उसन्न करने वालाहै ९ ॥ जिस का
रण हीरेको टुटा समझ कर संदे उसन्न
होय उसको त्रास कहतेहै और त्रासयु
क्त हीरा सदैव सब कार्योंमें त्रास अर्था
त भयदेवे सोमराज पण्डितने इसी प्र
कारसे हीरेका लक्षण अरु दोषको लि
खाहै ॥ ॥ . . . .

होय वहुत अब एगयुक्त
अर्थात् सव तरफोंसे भरा होय तभी
वही हीरा अपना स्वाव चाहने वाला
कदाचित् अपने पासरखे नहि १२ ॥
जिस हीरेका अगेका हिस्सा फूटा वै
ग टुटा और मध्यका हिस्सा मलिन
होवे ऐसा हीरा इन्द्रके समान कोभी
धनका नष्ट करने वालाहै १२ ॥
जिस हीरेका कोई हिस्सा रक्तके समा
न बिंदके दाग होय या कुल हिस्सा ल
हूके छिंटके समान भराहोय वह ही
रा अच्छे भले मनुष्यका सिताबी का
लका कारणहै १४ ॥ जो हीरा पहि
ले गुणयुक्त समझा जाय और फेर
सोनेसे जड़ावनेसे उस हीरेमें दोष उ

त्पन्न होय अर्थात् वह पाणि अरु चमक
ताकी नारहे तो पेसा हीरा जवहेमें जडा
वनेके लायक नहि किस लियेकि दोष
वाली वस्तु कदी भूषणके योग नहिहे १५
जिस हीरेको जखम पर छुहा वनेसे ज
खमेंमें सोजन उत्पन्नहोवे बुखारमें दाहकी
वृद्धि और अंग चिस चिस करे वह हीरा
अत्यंत खरावहे इसकारके उसको स्थानमें
रखना यथा योग नहि और जो हीरा तो
लमें भारा अत्यंतहोवे भी अरु वनाया
होयाभी नहोवे वहुत कर्कश होवे वह
हीरा काजोंको किसी प्रकार धारना उ
चित नहिहे १६ ॥ तीन कोण ....

....

हुत प्रकारके भयका पांच कोण हीरा
ऐश ...... कारण होवे और छे को
ण हीरा मंगल करणे वालाहे १७ ॥
अग्नि पुराणके मतसे दो दलका हीरा
फगडेका कारण तीन दलका हीरा स
खको नाश करणे वाला चौ दलका ही
रा भाव देनेवाला पांच दलका हीरा क
वीकवी शोक उत्पन्न करने वाला १८ ॥

॥

छे दलका हीरा राजभय करणेवाला सा
त दलका हीरा मृत्युका कारणहै ओर
अष्ट दलका हीरा बहुत अछाहै १९ ॥
अरु चमक हीन हीरा आपदाका कारण
है मलिन हीरा चिंता देने वालाहै अरु ना
हंवार अर्थात ऊंचा नीचा हीरा दुःख देने
वालाहै कम पाणि हीरा खेफखोन होने
का कारण श्यामवर्ण हीरा दुःख देने वा
लाहै अरु चिर काकपद ओर छिद्रादार
हीरा मृत्युका कारणहै इसवास्ते पहिले
खूदर अछी तरह परख करके पीछे धा
रण करना मुनासिबहै २० ॥ जो ही
रा थोड़े दोषसे दूषितहै अरु वह दोष दे
खनेमें आवे या ना आवे परंतु उस ही
रेका मूल निर्दोष हीरेके अधे मोल ब
राबर भी नहि होसक्ता २१ ॥ इस्त्रीको
परीक्षा हीरे . . . .
राजो इस्त्रीके सराणे छपाइ राखे तब उ
ह स्वपने पाप इत्यादि जो भूतके . . . .
. . . . सो स्वप्नेमे कह देतीहै
तिस करके हीरे वाली शुद्ध बातको नि-
कालकर . . . .

जो हीरा बहुत दोषोंसे दोषीहै अरु वह
सब दोष बहुत थोड़ा होय या जाता हो
य इस हीरेका मोल निर्दोष हीरेके मुका
बलेमें शत भागके बराबर नहिंहै २२ ॥
जिस जिस वर्णमें दोषी हीरा जड़ा होय
वह सब जेवर यद्यपि देखनेमें बहुत
अच्छा होवे परंतु उसका मोल बहुत
थोड़ा होवेगा २३ ॥ खराब हीरा गर
भिणी स्त्रीके वास्ते बहुत दुःख दायीहै
इस कारण दोषवाले हीरेका पास रखे
नेसे गर्भ नष्ट जानेका भयहै २४ ॥
लोहा माणिक गोमेद लसनिया स्फटि
क अरु सब प्रकारके कांच इस सब वस्तो
के अनुसार अच्छे कारिगर मनुष्य फिर
बी हीरा बनातेहै इसकारण हीरा मोल
लेनेके समें अच्छे जौहरीओंके द्वारा
हीरेकी परीक्षा करना उचितहै २५ ॥
चूर्ण आदि खारसे वसनेसे और शाण
से इन तीन चीजोंमें हीरेकी परीक्षा हो
तिहै फिरबी हीरा होवनेसे चूर्ण आदि
खारके संयोगमे चूर होवेगा अरु घस
नेसे और शाणसे सिताबी घस जायेगा

परंतु असल्ल हीरा होवनेसे कटी घटे वटेगा. नहि अर्थात् समान रहेगा २९ । अरु कई लोक छलसे पुषराज पन्ना और नीलम् फटक गोमेद इनोंको ही रेके घोषसे बनाउट बनावेतेहै हीर रत्न रेती इत्यादि वस मलके देवे जाते है हीरेकी अपणी चमक चमक नही छूटतीहै ॥ तार और खटाई दोनोंको मिलाकरके हीरेपर लेपकरके धूप में सुकावे पाणिसे धोइडाले तो झूठा हीरा मैलाहो जावेगा परंतु असली हीरा इस मसालेसे और भी चमकदार हो जायेगा ३० ॥ पृथ्वीपर जितने प्रकारके रत्न और लोहा वहु दहलाका लिया चीजे है उन सारे चीज हीरेसे कटतेहै परंतु हीरा किसी चीजसे कट नहि सक्ता ३१ ॥ जेकर निश्चे करना होवे इस रत्नमें छिद्र है ... सन हीरे तब रत्न अंगुलीपर लेके उसको फूकमारे उस फूकसे उसकी आभा क्षणमात्र हट जातीहै तब जानना इह अच्छा है ॥ अकृत्रिम अर्थात सच्चे हीरेके अनुसार

कृत्रिम अर्थात् झूटा हीरा कट जाताहै
अरु असल हीरा करुविन्द अथवा असल
हीरेके अनुसारसे कट जाताहै परंतु औ
र किसी चीजसे नहि कटेगा ३० ॥ और
सच्चा हीरा ऊंडे वा हरी आवली साथ
काटेआ जाताहै और वस्तुसें नहिं काटे
आ जाताहै केवल अपणी मिटीसेभी
कटिया जाताहै ॥ अरु अपणे चूरसे फ
लाही खरलमें रगड़के भी सिद्ध होताहै
विशेष करके श्यामरंग हीरे अपणे चूर
के विना कटे नही जातेहै अरु शाणभी
नही किए जातेहैन ॥ अंगरेजीमत मो
ल हीरेका ग्रीन तोलके प्रमाण विकता
है वा कैरात के तोलसे होताहै पंद्रा ग्री
न की आट रती होतीहै चार ४ ग्रीनका
एक किरात होताहै मोटे दर्जेका हीरा ए
ककिरात होवे तिसका मोल चाली ४०)
स रुपयोंसे साठ रुपय ६० तक होताहै ।
पीछले दर्जेका हीरा एक किरात होवे मो
ल साठ ६० रुपयोंसे ८० ऽ सीरुपेएतक
होताहै अछे दर्जेका एक किरात हीरा
होवे तिसका मोल असी रुपेएसे ८० सौ १००

रुपैए तक जो उत्तम दर्जेका हीरा दो रती
नसे अधिक होवे एकसौ बीससे १२० डे
डसौ रुपैए तक मोल होताहै । और जे
13 कर हीरा तीन रतीवसे अधिक होवे तो
उसका मोल डेडसौसे १५० दोसौ तक
जो एक किरात होवे हीरा तिसका मो
ल दोसौसे २०० दोसौ तीस तक है २३०
हीरा मोती माणिक इत्यादि जेकर बन्दा
जडाऊ होवे तो उसकी किरण ऊपर
को ना जावेगी १ ॥ ब्राह्मण हीरेका
जो मोल होवेगा सो क्षत्रियवर्ण हीरे
का बारआना ।/ मोल घट जावेगा अरु
वैश्यवर्ण हीरेका अधा मोल = होताहै
अरु शूद्रवर्ण हीरेका चौथाई मोल हो
वेगा २ ॥ जो तीन रतीनसे अधिक होवे
डेडसौते १५० दोसौ तक मोल जेकर एक
किरात होवे दोसौ २०० ते दोसौ तीस २३०
तक मोल होताहै । ब्राह्मणवर्ण हीरा
ब्राह्मणको क्षत्रिवर्ण हीरा क्षत्रिको वै
श्यवर्ण हीरा वैश्यको और शूद्रवर्ण ही
रा शूद्रको धारण चाहिए उसको विप
रीत धारनेसे बिमारी चिंता अरु भयका

सब वहोताहै २ ॥ अगरेजीमत अशु
द्धहीरा जो कोई खा जावे उह मरजाताहै
परंन्तु जेकर गऊका दूध कचा पिलावे वा
किसी औषधीसे उलटी कराई जावे वा
मछीकी चरबीकी सहूना खिवाई जावे
तो वच सकताहै । अशुद्ध हीरा औषध
में व्यवहार करनेसे कुष्ट पार्श्वकी वेदना
नाम वखी पडि पाण्डुरोग और पंगुता हो
तीहै इसवास्ते पहिले हीरेका संशोधन
करके पीछे औषधमे व्यवहार करना
चाहिए ४ ॥ शुभदिनमे हीरेको कण्टे
यारी रसमे भिजोकर माहिषका गोहा ले
प देकर गोहटोंकी अग्निमे दग्ध करना शु
द्धासिदहै ५ ॥ सारीरात वही प्रकारसे
दग्धकर प्रभातमे घोडे के मूत्रमें भिजो
कर फिर अग्निमे दग्ध करना उचितहै ६
सी प्रकारसे सात दिन दग्ध करनेसे हीरा
संशोधितहो जावेगा ९ ॥ अगरेजीमत
और हीरा अपने तोलकरके कांरंडमसे
पछाना जाताहै कांरंडम ऊपरउको कह
तेहैन उह कांरंडम हीरेसे सातमा हिस्सा
अधिक होताहै अर्थात् दोनोंके तोलमें

सात आठका संबंधहै प्राचीन परीछिक
लोक सच्चे हीरेको और कृत्रिम हीरेको
रंग देखनेसे पछान लेतेहैंन सो कृत्रिम
हीरे सफेद विलोरादिसे काटे जोटेहैंन ॥
हिंग और सैंधव लवण संयुक्त माष कु
लथ्थ काथमें भिजोकर इक्कीस वार तप
करनेसे हीरा भस्म हो जाताहै ७ ॥
संशोधित हीरा मनुष्यकी आयु शरीर
की पुष्टि वल अरु वीर्य रंग और सुख
ऋद्धि सम्प्रदायका वृद्धि और सर्व प्रकार
रोगकी शांति करेगा ८ ॥ पहिले हीरे
को कटियारीके रसमें डुबाकर सात वा
री पुट करे एक मिटिके पियालेमें जो
चीज भस्म करनाहो वह रखकर दूसरे
पियालेमें बन्द करके मिटी और गोवर
मिलाकर अच्छा लेप करके अग्निमें ज
लानेको पुटपाक कहतेहैं फेर उसको
सात वार आग देवे और एक डूंडू पकड़
उसको एक कांसीके वर्तनमें पालके ढ
क रखना चाहिए ९ ॥ वह भीडक भय
करके उस वर्तनमें मूत्र देवेगा पीछे उस
के उसी मूत्रमें वह जलाया हुया हीरा

मिगोवे कर अग्निमें वह जलायो ज्यों या
वे इस तरहसे बहुत बार करनेसे वह ही
रा भस्म हो जावेगा ९ ॥ हीरेके संयोग
से जो दवाईयां तैयार हो जातीहै वह
अमृतके समानहै इसकारण वही दवा
ईयां खानेसे शरीर हीरेके समान हो।
ताहै ॥ ॥ इतिवज्रनिर्णयः ॥
अथ माणिक्य फारसीमें इसको या कू
त कहतेहैं । अंग्रेजीमत हीरेसे दूसरे
दर्जेपर माणक सब रत्नोंसे कठनहै
अरु इह कारंडमका भेदहै रंग अनुसा
र उत्पन्नहोतेहैं जैसे किरमची रंगके कु
रंडको रूबी माणक कहतेहैं अंगारेके
सदृश होतेहैं पर जलन हार नही होताहै
अंधेरेमें भी चमकताहै थोड़े कालजो धु
परवे तो प्रज्वलित जैसा होताहै ॥
पन्नालालीमत रत्न परीक्षा पण्डित लो
क कहतेहैं सिन्धु रावण गंगा और सिं
हल देश इनाही तीन जगहोंमें माणिक
उत्पन्न होताहै १ ॥ अकेली माणिक सू
रजका रत्नहै और ब्रह्माके देसमें आभा
नगरके पास पेगू नाम जंगलमें माणक

पैदा होताहै और जंजीर से लानमें पै-
दा इसहै इह दो उत्तमहै और शाम देस
में मशाकत देसमें कावल देसमे हिमा
लय देसमे माणिक पैदा होताहै जबखा
नसें निकलताहै तब कंकर मिटी साथ
मिलेहूए त्याय धोनेसें लाल कंकर
चुन लेतेहै तब नाम खिड वोलतेहै ॥
अगरेजीमत पेगू देशका माणिक अछा
और भारा होताहै वराजील देशकामा
णिक बड़ा और निर्मल होताहै ॥
अगरेजीमत कि बदख्शानेमेंभी होतेहै
सो अछे और लाल तथा कठिन होतेहै
अरु दक्षिणमेंभी निकलतेहै न उह को
मल अरु श्यामा भास होतेहै अरु जल
गऊओंके भुवमेंभी होताहै सिंहल द्वी
पमें घास वर्णके वेले उनसे शुक्तियां
कोई कोई पंडित कहतेहै के सिंहल
कालपुर और तुंबुर देश यही तीन दे-
शोंमें माणिक खान मिलतीहै उसी
मेंसे सिंहल देशमें जो माणिक उत्पन्न
होताहै वह बहुत उत्तम और सुरख रंग

होताहै कालपुरमें जो माणिक उत्पन्न
होताहै उसका पीलारंग श्रोर उसको कु-
रुविन्द कहतेहै जेकर अशोक पुष्पके
पल्लवके समान रंगदार होय तो उसको
सौगन्धिक बोलतेहै श्रोर तुंबुरदेशमें
जो माणिक उत्पन्न होताहै उसका रंग
नीला होताहै श्रोर उसको नीलगन्धिक
हतेहै २३ ॥ माणकके गुण रंग आकृ-
ति पर नामहै लालरुमानी वलाल २ ॥
कहतेहै जो एक रत्तीसे तोलमें घटहोवे
उसकानाम चूंनीहै जो एक रत्तीसे ज्यादा
होवे उसका नाम माणिकहै ॥ सिंहल
देशमें जो माणिक उत्पन्न होताहै वही
सबसे अच्छाहै श्रोर तुंबुर देशमें जो मा
णिक उत्पन्न होताहै सो वहुत माड़ाहै
श्रोर कालपुर देशका मध्यम श्रोर जग
हाके बदलनेसे माणिक तीन प्रकारका
होताहै ४ ॥ अगरजीमत श्रोर किसे
देशके दाणदार चूनेसेभी माणक निक
लताहै १६ असाधारणहै । श्रोर चीणदे
शमें इस्त्रियोंकी जूतियों पर माणक ला-
गाए जातेथे । माणिकमेंसे वहुतसे मा

णिक चमकके फूल कितने गुंजा
घुंघची कितने बीज बहूटी कितने क
नेर फूल कितने लहूके समान रंगवा
ले होतेहैं अरु कितने बडे चमकवाले
अनार दानेके समान कितने पलाश
पुष्पके समान होतेहैं ५ ॥ अंग्रेजी
मत १ सुपेद्किस्मकी रंग २ शफतालू
रंग ३ आडूके पुष्परंग ४ गूढ रक्तवर्ण
पृथ्वीमालके सबसे मोलवाला होताहै
उसका गुण आगेभीमें कहे जाइगा ।
अंग्रेजीमत माणिक बहुतलाल सुरख
गुलाबी केसरी रंग पक्के हुवे निंबूके
रंगका होताहै और दूसरा आस्मानी
सुर्मेके रंग लाजवर्दी मिश्र आकाशी
रंग तथा पिस्तेके रंगका होताहै लाल
रंगके क्रम बहुत लाल १ गुलाबीलाल २
नारंजी लाल ३ केसरी लाल ४ ईस ला
ल माणिकमें गुरुत्वहैन तथा आस्मानी
रंग १ सुरमेई २ लाजवर्दी ३ ईस दूसले
रंगवाले माणिकमें गुरुत्वहै हरे रंग वा
लाभी होताहै ॥ अंग्रेजीमत हिंदुस्तान
से अरु लंकासेभी नदियांसे निकलतेहैं

सिक्ख होते हैं न लोहाभी मिला होता है
और हूंहेनस्टेन येलव नदीपर वियमा
ने है अरु ग्रेनसूवू तथा पेसपेली जो कि
और गन तथा आईसर के बीच है और
हुडी तथा फरांस बराजील हीरोंके ना
ल मिलेसते हैं अरु आसटर लिया और
नेश और सुमाटरादि देशोंमेंभी पाए
जाते हैं और शालो शान जो ईरानमें
है उहां माणकका जोड़ निकलता है
अरु सेलोन आवा मे सूर तथा बलो
विसतानादि देशोंमेंभी निकलता है
अरु शरब देशकी नदियोंमें जो हूही
मालमें हैं न तहां निकलते हैं न ॥
कितने सिंधूरके समान कितने लाखेल
कमलके समान कितने मूलीके समा
न कितने लाखवरके समान कितने
गहरे सराब और गहरे महावरके अ
अर्थात् लाखके समान कितने ऊस
म फूलके समान कितने नीलापनलि
येहुये लाखके समान और कितने
गोदारु और काएट कारी पुष्पके समान
कितने इंगुदके समान तथा माजीके औ

र कितने थोड़े खिले हुये लाल पद्म पु
ष्पके पेटके समान होतेहैं ९।०।१८
९ ॥ अंगरेजीमत और महाराजे रण
जीत सिंहके पास एक बड़ा माणिकथा
तोलमें थोड़ा १४ तोलेथा उसपर औ
रंगजेब = अहमदशाह = अरु औरनों
पादशाहोंके नामभी खोदे हुवेथे औ
रइही माणिक तोलमें १॥ छटांकथा
खोड़के आकारभी पास ४ के अमी
रोंके पास तोलमें २९॥ किरातथा
अरु लोईलीडो बोनीर नामपादशाह
के पास सिपरपर लगाया हुवा अंडे
का आकार तोलमें २४४ ३ किरातथा
सौगन्धिक मणि चमकमें है और भा
रीपनमें अकसर स्फटिकमें जो मा
णिक उत्पन्न होताहै उसके समानहै
और उसका रंग थोड़े नीलापन लि
ये हुये लाल कमल फूलके समान
है ९ ॥ जो कुरु विन्द थोड़े रंगवाला
होइ वह स्फटिकसेभी उत्पन्न होताहै
जेकर वह रंगमें थोड़ाभी होए परन्तु
उसके अंदर तेज ऐसा आताहै कि ब

कुल रंगदार और बुटा देनेवाला अर्थात
अति प्रभाविशिष्ट माणिक उसके समा
न नहि होताहै ४ ॥ रावण गङ्गामेंसे
जो कुरुविन्द उत्पन्न होताहै वह माणिक
के समान सुरख रंगवाला होताहै प
रंतु माणिकके समान दीप्तिमान नहि
होता ४२ ॥ मणिके अनुसार जो जो
नामहै वही सब नीचे लिखे जातेहै
जैसा जिसका रंग बन्धूजीव फुलके
समान उसको बन्धूजीवि कहतेहै जि
सका रंग गुंजचीके समान उसको शि
खाणी कहतेहै जिसका रंग इन्द्रगोप
कीटके समान उसको इन्द्रगोपि कह
तेहै जिसका रंग कनिल फुलके समा
न उसको औदु पुष्पकः जिसका रंग
सुरखीके समान उसको रक्ताख्यः जि
सका रंग अनारके समान उसको कुरि
मः कहते जिसका रंग पलाश पुष्पके
समान उसको पर्णि कहते और जिस
का रंग सिंधूरके समान होवे उसको
सीमन्तक कहतेहै ४२ ॥ जिसका रंग
गेरी मिटीके समान उसको गेरिक

कहते जिसका रंग केसरके समान उ
सका सूर्य्यमञ्ज: कहतेहै जिसका रं
ग लाखके समान उसको कुमामध्य
कहतेहै जिसका रंग कुसंभ पुष्पके
समान उसको महाराजनगथ्य कह
तेहै जिसका रंग गोल्हरके फूलके
समान उसको गोल्हर कहतेहै और
जिसका रंग कण्टकारी पुष्पके स
मान उसको कण्टकारिक कहतेहै
१४ ॥ जिसका रंग हिंगुलके समान
उसको मणिराग कहतेहै जिसका रं
ग कोयिलके नेत्रके समान उसको
कोकिलाह्ल: कहतेहै जिसका रंग
सारस पक्षीके नेत्र समान उसको सा
रसाह्व कहतेहै और जिसका रंग सा
लक पुष्पके समान उसको कोकन
द कहतेहै पृथ्वीपर यही प्रकारसे
बहुत प्रकारके माणिक उत्पन्न होते
है १५ ॥ अश्रु देशमें माणिक उत्प
न होताहै उसमेंसे जिसका जिस त
रहका रंग होवे उसका ऐसा मोल हो
ताहै १६ ॥ तुम्बुर देशमें स्फटिकसे

मणिकी तरह जो माणिक उत्पन्न हो
तौहै उसका मोल बहुत कम होताहै
१७ ॥ सादा रंग भारी चमक वाला
समान शुभ लक्षण छटा और कहूंमें
बड़ा यही सब रत्नका बड़ा खास गु
ण कहाहै १८ ॥ और कहतेहै जो
पैथारके अनार दाणे जैसा रंगहोवे
तब नाम रमानि कहतेहै जो लालि
में होला ऊब स्याही ऊपर होवे तब उ
सका नाम विनोस कहतेहै जो लालि
चट जरदी ऊपर होवे तब गुल अना
र कहतेहै जो लालि थोड़ी स्याही व
हुत होवे तब नीम रंगा कहतेहै ॥ प
त्वालालीमत ॥ जिस प्रकार मनुष्य
का ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र य
ह चार जाती होतीहै उसी प्रकार मा
णिककी चार प्रकारकी जाती कहीहै
अलग अलग उसका लक्षण कहतेहै
१९ ॥ माणिक ब्राह्मण वर्ण कुरु वि
न्द क्षत्रिवर्ण सोगन्धिक वैश्यवर्ण मास
खण्ड अर्थात् कटेहुवे मासके समान
होवे सो शूद्रवर्ण कहा जाताहै २० ॥

और जिसकी छाया नील कमल अ
थवा लोहके समान निकले तिसको
नील गंधि मणि कहतेहैं ॥ किसि
किसि पण्डितके मनके अनुसार ब्रा
ह्मण वर्ण माणिक लाल कमल वि
र काठके अंगारके समान वर्ण वि
शिष्ट होताहै २१ ॥ क्षत्रिय वर्ण
कुरुविन्द बुंबची अर्थात् गुञ्जा सि
न्दूर बन्धूक पुष्प नारंगी और अना
रके पुष्पके समान रंगवाला होताहै
२२ ॥ वैश्यवर्ण सौगन्धिक इंगुर
अशोकका पुष्प और थोडा पीला प
नसे लाल कनेर पुष्प और लाखके
समान रंगवाला होताहै २३ ॥ शू
द्रवर्णका मांसखण्ड कान्तिहीन वि
कृष्ण थोडा लाल रंग देताहै २४ ॥
कईयोंके मनमें लाली सफेदी माइ
ल ब्राह्मण वर्णहै बहुत लाल क्षत्रिय
वर्णहै लालीब माइल पीला वैश्य व
र्णहै लालबनीलापन शूद्रवर्णहै २५
माणिककी छाया इत्यादि । रत्न परी
क्षक पण्डित माणिकके मध्यमें सो

ला प्रकारकी छाया चार प्रकारका गुण
और अष्ट प्रकारका दोष कहे गयेहैं १ ॥
सिंहल देशके माणिकमें लाल कमल
खद्योत अग्नि कबूतर कोपिल सारस अ
रु चकोर इनके नेत्रके समान छाया
निर्मल होवे यही सात प्रकारकी छाया
शुभदायकहै २ ॥ कुरुविन्द मणिमें
सिंदूर लोध्र पुष्प गुञ्जा और पलाश
पुष्पके समान छाया निर्गत होतीहै
निकलतीहै ३ ॥ सौगन्धिक मणिमें
कुछ रोलीओं मिलेहुये जलके समान
और थोड़ा लाली मायल छाया निकल
तीहै उसके मध्य हृयके समान छाया
धनको नाश करतीहै ४ ॥ नीलगन्धि
मणिमें नीलाकमल और लोहेके समा
न छाया निकलतीहै ५ ॥ पद्मराग
यत्नाद्य मणिको एक अच्छे साफ सीसे प
र रखकर प्रभातके सूर्य्यके सामने रख
नेसे सोला प्रकारकी छाया उसमेंसे प्रका
श होवेगी ६ ॥ सवेरेके सूर्य्यकी किरण
के स्पर्शसे जिस माणिकमेंसे लालरंग
किरणकर सबनों स्थानोंको लालरंग

करदेवे वही माणिक महागुण विशिष्ट
अर्थात् अत्यंत निर्दोष और अच्छाहै ७ ।
जो माणिक अपनेसे सोगुणा ज्यादा उ
सको दूधमें पावनेसे सब दूधको ला
ल रंग करेगा अथवा दूधके अन्दरसे
लाल शिखा वाहर करेगी उही माणि
क वहुत अच्छा होताहै ८ ॥ अग्रेजी
मत जल गडुके माणकसे रुधिर दोष
वा और रोग भी हटताहै अरु कफ
संबंधी रोग दूर होतेहैन ॥ जो माणि
क अंधेरेमें सूर्यके समान तेज प्रकाश
करे वह वहुत उत्तम और पहला दरजे
का होताहै ९ ॥ जो माणिक कमल
के पुष्पकी कलिपर रखतेही कमल
को खोल देवगा उही माणिक सबसे
उत्तमहै और देवता ओंको दुर्लभहै ९ ॥
जो माणिक दूरसे अग्निके समान दिख
लाइ देवे उसको वंश कांति कहतेहै औ
र उस माणिकके द्वारा सब प्रकारकी
किमत प्राप्त होतीहै १० ॥ अग्रेजीम
त और किसी प्रकारका माणक गर्मी
के आगे ठहर नही सकता कई कहतेहै

जो माणिक अपने प्रमाणसे दोष गुण
नील रंग जल और दूध अथवा जलमें
पावनेसे इनहीं तीन वर्णोंका लालरंग
करदेवे तो दरजे बदरजे अच्छाहै अर्थात
नीलरंग जलको लाल करने वाला अ
वल दरजेका माणिकहै और दुग्धको
लाल करने वालाहोवे सो दूसरे दर्जेका
माणिकहै अरु जलको लाल करणेवा
ला तीन दरजेका माणिकहै और यह
तीनों माणिक सपदाके कारणहै ११ ॥
अंग्रेजीमत और किसी प्रकारका माण
क गर्मीके आगे ठहर नहीं सकता कई
कहतेहै कि गर्मीसे लाल माणककी
चमक बढतीहै। अरु कई कहतेहै स्वेत
माणक गरमी देनेसे लालरंग होताहै
परंतु इसबातकी प्रतीत नहीं आवतीहै
क्यों कि माणकको धुआं पसीना तेल
दुर्गंधि दुण कर सकतीहै गरमी अरु
सर्दीसे माणकपर कुछ दुणनहीं होता
है। माणकमें दूसरे दर्जेका गुरुत्व हो
ताहै। पीसे मासकेमें सर्दी अरु खुश
की दूसरे दर्जेकीहै २ भूसले माणकमें

पहले दर्जेकी गर्मीहै ३ अरु खुशकी
दूसरे दर्जेकीहै ४ अरु श्वेत रंगके माण
कमे गर्मी और सर्दी समानहै परंतु ।
खुशकी पहिले अरु दूसरे दर्जेकीहै
५। माणकके धारणसे अन्नकोष्ट ना
म स्वाद अरु सिर नीरोग और स्थित
होताहै । नेत्रोंपर फेरणसे वा अंजन
से नेत्र रोग दूर होतेहैन । अरु मुख
की दुर्गंध हटावताहै । रत्न पारखी
पंडित लोग माणिकके जो अठ प्रकार
के दोषकहेहैं उसको क्रमसे सब्यो
कहि जातीहै ६ ॥ छिद्धायत्व विर
यत्व सभेद कर्कर अशोभन कोकिल
जल अरु धूम यही अठ किसमके दो
ष माणिकमे देख जावेगे ७ ॥ जि
स माणिकमें दो प्रकारकी छाया नि
कले उसको छिद्धाय कहतेहैं छिद्धा
यका माणिक बन्धुको नाश करताहै
जिस माणिकमे पंछीके पाओंका नि
शान होवे उसको बीरूप दोष कहते
है बीरूप माणिक मालिकको सब
नाश होर देताहै ८ ॥ जो माणि

क असली टूटा नहिंहै परंतु भंग मा
व मालूम होताहै उसको संभेद कह
तेहैं संभेद माणिक मालिकको शस्त्र
घातका भयदेताहै माणिकमें जो कं
करसा दीखाजावे उसे कर्कर कहतेहैं
कर्कर माणिक पशु और बन्धुको नाश
करताहै १५ ॥ जिस माणिकमें रूग
के समान मालूम होताहै उसको अ
शोभन दोषवाला कहतेहैं अशोभन
माणिक बड़ा दुखदेने वालाहै १६ ॥
जिस माणिकमें मावीरके छिद्रके स
मान चिह्न होवे उसको कोकिल दोष
वाला कहतेहैं कोकिल माणिक आयु
संपदा और नाना वरीको नाश करताहै
इस कारण ऐसा माणिक कदी धारना
मनासिब नहीहै १७ ॥ जो माणिक
रंगदार नहिंहोवे उसको जडु कहतेहैं ।
जडु दोष युक्तका माणिक धन अरु धा
न्यादि नाश करताहै एवं जैसे रंगके
समान माणिक धूम्र कहतेहैं धूम्र दोष
वाला माणिक बिजली गिरावताहै १८ ।
जो सब दोष उपर मालूम होइवे यही

सब दोषवाला माणिक बहुत दोषवा
लाहै अरु निन्दाके योगहै और बहुत
थोड़ा मोल वालाहै ऐसे माणिक मु
फ्त मिलने सेभी अपने पास कदी
नारखे अरु अपने स्थानमेंना रखना
22 चाहिए १९ ॥ जिस माणिककी शो
भा दो प्रकारकीहै अर्थात कदी कोइ
रंग और किसि प्रकारका दिखलाया
देताहै वह बहुतही नुकसान करने
वालाहै अरु जिसके दो जगहमें पंछी
के पावोंका निशान होवे वह नुकसा
नका कारणहै २० ॥ जो माणिक
कर्करा अर्थात कर्कर वाला छेदवाला
मलिन प्रभाहीन तथा दीप्तिहीन कर्क
श अर्थात खरखरा और विवर्ण अर्था
त बेरंग ऐसा माणिक उत्तमभी होवे
अथवा और गुणोंसे भूषित होवे प
रन्तु कदी अच्छा नहिंहै २१ ॥ अगर
कोई आदमी अज्ञानी परीक्षासे दोष
वाला माणिक धारेगा तो जरूर उस
पुरुषको भाई और धन इत्यादि नाश
कार दुःख भोगताहै २२ ॥ और क

हतेहै जिस माणिक ऊपर सुपेदी वा
ईहोवे उसका नाम हृथक बोलतेहै उ
सके धारनेसें पशु नाश होताहै और
जिस ऊपर काला बिंदु नजर आवे सो
भी त्यागने योग्यहै और जिसमें तेजी
का चमकारा बंदहोवे उसको जड़ा क
हतेहै यहभी निंदहै और जो एक तर्फ
होला दूसरी तर्फ गहरा होवे दोरंग प्र
तीतहोवे सो दुरंगा नामभी त्यागनेयो
ग्यहै जो कर्कर दोष वालाहै उसको
खुरदरी बोलतेहै यहभी निंदहै जिस
में दूसरे रंगकी लंबीलकीरहोवे सो
बीरदोषकराहै पन्नालालीमत ॥
जिसके स्थानमें निर्दोष माणिक रहै
सो मनुष्य जेकर सर्वदा चौतरफी दु
श्मन रहनेवाले स्थानमें होवे अथ
वा बहुत प्रकारके प्रमादमेंभी वर्त
मानहोवे तोभी उसको कोई आपदा
पकड नहि सक्ति २३ ॥ जो मनुष्य
सर्वगुण संपन्न होवे एक माणिक
धारे और उसके साथ सो १०० माणिक
दोषवाला धारे तो कुछ नुकसान न

23

ही होसक्ता २४ ॥ कइयेक पण्डितोंके
मतसे ऐसाभी कहाहै कि एक ब्राह्मण
जिस प्रकारसे सौ हजार ब्राह्मणोंको
हर्षित करदेताहै उसी प्रकारसे एक
बिजाति .... सर्वगुण सम्पन्न
रत्नोंको हर्षित करताहै २५ ॥ अग्रेजी
मत जो माणक अपणे पास रखे तो जो
कदाचित् कुछ आपदा अथवा कोई
संकट इत्यादि प्राप्तहोवे तो उसका रं
ग बदल जाताहै जब फेर अपणी च
मक दमक उसमें पूरी होजावे तब स
मझो दुख दरिद्र आपदाभी दूर होतीहै।
सब प्रकार बिजाति मणि कबी सजा
त मणिके समान वर्ण हो नहि सक्ता
बहुत प्रकारके खानोंके भेदसे रंग
के हिसाबसे थोडा फरक होताहै २६ ॥
विजाती मणि सब प्रकारके गुण संप
न्न मणि सहित एक जगा जडे सोभी
धारना अच्छा नहींहै पण्डित लोक क
हतेहै विजाति मणि कोसुभ मणिके
समानबीहोवे धारणा अच्छा नहिहै २७
गुञ्जा फलके समान माणिक तोलमें

तीन अथवा सातवा दस गुञ्जाके बरा
बर होसक्ता है उसमेंसे जो जिस प्रका
र ज्यादा तोल होवेगा वह गुणमें ज्यादा
है २८ ॥ अथ जीमत

कष्टफल अर्थात् शणफलकी समान ब
डा माणिक तोलमें बारां अथवा अठवा
दो गुञ्जाके प्रमाण होताहै २९ ॥ जिस
का कद बेरके समानहै उसका रोज ब
जन तोलमें बारां अथवा दस और नौ
मासेहै जो दाख नेमं आमलेके फलके
समानहै वह तोलमें विस विस अथवा
सोला मासेतक होताहै ३० ॥ रीठातके
फलके समान माणिक तीन अथवा दो
वा एक मासा होताहै तामापाही फलके
समान जो माणिक होवे वह तोलमें वा
रतीन दो और एक तोला होताहै ३१ ॥

जिसका कद विंब फलके समान होवे
उसका तोल दस आठ वे तोले होताहै
इससे ज्यादा बड़ा और तोलमे भारी मा
णिक लब ता नहिहै जेकर किसे भा
ग्य वन्तके प्रारभथमे इससे ज्यादा तो
लका माणिक मिले वह तमाम वस्तुमे
सिद्धिको देताहै ३२ ॥ कितने विजाति
रत्न सजाति रत्नके समान मनोज्ञ अर्थी
त् मनको प्रसन्न करनेवाले होतेहै
परंतु पण्डित लोक इस प्रकारके रत्न
को त्याग कर देतेहैं ३३ ॥ अंगरेजीम
त पुष राजकी कठिनता आठ दरजेकी
होवे तो माणिककी कठिनता नौ ९ द
रजेकीहै हीरेकी कठिनता दस १० दर्जेकी
होतीहै और अच्छा हीरेके सदृश चमक
वाला पत्थरका टुकड़ाभी माणिकके
धोखेसे बेचतेहै ॥ अंगरेजीमत माणि
ककी चमक अधिक करणेके वास्ते
थोड़ा दिन तक उसको सिकोमें रख क
र भिगोवतेथे इसको यद्यपि थोड़े म
हीनेउं तक माणिककी चमक दमक
अधिक हो जातीथी परंतु फेर हट

जातीथी तिसके अनंतर इह कोमल औ
र टूटनेवाला होजाताथा और कूंज
नामा पंछी इस माणकको अपने
.... सर्पकी रक्षावास्ते
नेत्रकी प्रतिनिधि रखताहै । अरु औ
र माणकको पहिरके पुरुष प्रज्वलि
त शरीरवाला दिसताहै जैसा कि किस
के पास दीवा जलता होवे और इसमा
णकको बहुत वस्त्रोंसे आदमी ढपार
रखे तोभी इसकी चमक दमक नही
टूटसकती ॥ जो माणिक चमकदार
होके प्रकाश ना छोडे और जिसको
कपडेसे साफ करनेसे ऐसी चमक ।
थोडी होजावे और दो अंगुलीसे पक
डकर उठानेसे कालापन दिखलाई दे
देवे ऐसे प्रकारके माणिक कृत्रिम औ
र विजाति होताहै उसको मोलविना
भी मिले तो धारणा उचित नहिहै २४
अरु जल गडुका माणिक धारणेसे
चित्तको संतोष होताहै । अंगरेजीमत
याकूतको अर्थात माणकको लोहेके
चक पर रखकर रगडकर काटनेहै औ

र तांबेके चक्रूपर और त्रिपोलीके पथ्थ
र पर पाणीके नाल जिला चमकावट
देतेहैन और इसके जिला देनेवाले
इस देशका कारउम काम आवताहै
अब्बे और हठ माणक जोहै उह नीं
लमसे काटा जाताहै । किसे प्रकार
परीक्षा करनेसेभी जेकर सन्देह दूर
नाहोवे शानके जत्वपर घसनेसेही
कृत्रिम और असल माणिकका परी
क्षा हो जातीहै अथवा असल माणि
कसे झूठा माणिक छूट जावेगा २५ ॥
अगरजीमत अरु बहुत माणक ऐसे
भीहैन जिनके ऊपर मूर्तिभी खोदी
जातीहै । जो माणिक घसनेसे अरु
अच्छा होवे और तोलमें कमना होवे
उही माणिक उत्तमहै इसके बगैर सब
माणिक त्रि जातिमें सख्या किये गयेहैं
२६ ॥ अगरजीमत एक कागदके नं
खते ऊपर कोई माणक रखके तिस
ऊपर एक कबूतरका लहूको एक बूं
द छोड़ और दोनोंका रंग एक जैसा होवे
तो अच्छाहै । ऊहविन्द और हीरेके

वगैरा किसि जातका रत्न माणिकको
छूट नहि जावताहै १७ ॥ अगेरजीमत
बराजील देशके प्याजीरंगके पुखराज
माणकके धोकेसे बेचतेहै । सर्वगुण
संपन्न माणिकका जो मूल होताहै
वही मोल निर्दोष कुरुविन्द काभी
होताहै १८ ॥ अगेरजीमत अब वे
दगीके अनुसार माणकको शुद्धकर
भस्महोया जो ३२ पेक दिन १ प्रमाण
खानेसे मिरगी उन्माद विशूचिका रुधि
र विकार दूर होताहै तथा दुर्वासना
भी दूर होतीहै अरु स्वप्नमें वीर्य्यपात
होवे उहभी हटताहै अरु सर्पादि विषों
को दूर करताहै अरु शत्रुउने दियाहुवा
जहरसे बचताहै अरु मारीका भय नही
रहताहै अरु धरण विपरीत होई अपणे
ठिकाणे पर आवेगी मनुष्यके प्राण बलि
ष्ट होदेहैं अरु बिजलीका भय हट जाता
है और जो इच्छा होव सो पूर्ण होतीहै ।
जल गरुडका माणक जोहै तिसमें गर्मी
अरु सर्दी बराबर होतीहै उसमें दूसरे
दर्जेकी छिपाकी होतीहै रसको सोधक

रके अंजन बनाइकर नेत्रोंमें डाले तो दृष्टि शुद्ध होतीहै इसकी खुराक आ ठ८ या सोला ठ्ठो तकहै। निर्दोष कुरुविन्दका जितना मोल होवेगा सौगन्धिकका मोल उससे बारआने थोडा होवेगा अर्थात् कुरुविन्दका मोल जेकर एक रुपैया होवे तो सौ गन्धिकका मोल बारां आने होवेगा

३१॥ अंगरेजीमत माणक हीरेसे अधिक मोल वाला होताहैयथा परंतु इस समे उह माणकहै जो आधी रत्ती से थोडा और अंगरेजी नमूनेका का टा हुवा होवे उसका मोल चालीस रु पैयोंसे ४०) सौ १००) रुपए तक होता है अरु जो इही हिंदुस्तानका नमूना काटाहोया इतनाही प्रमाण होवे तो उसका मोल दसरुपैयों १० से चाली ४० रुपए तकहै अब हिंदुस्तानका माण कका ठीक और बराबर होताहै। माणकका मोल किरात १ का किरा त २ का किरात ३ का। मोल एकसौ चालीस १४०) २ दोसौ २०० रुपए त

क होताहै ढाईसो रुपैयोंसे २५०) सा
ढे तीनसौ रुपैये तकहै दोहजार से
२०००) ढाई हजार रुपैये तक है। तोल
चार किरातका ४। मोल चार ४०००)
हजारसे साढे चार हजार ४.५००) तकहै।
वैश्यवर्ण माणिकका जो मोल होवे
गा शूद्रवर्ण माणिकका उससे चार
आने थोडाहोवेगा ४०॥ सब प्रका
रके जवाहरात जुदा रंगसे अच्छा हो
ताहै और इसकी जराभि कमिसे उस
का मोल कम हो जाताहै ४१॥ आगे
जीमत बडे आकार होवणे पर इसका
मोल घटताहै। जेकर किसि रत्नको
समझकर संका उत्पन्न होवे तो एक
सच्चे रत्न साथ घसना चाहिए तो झूठा
रत्न चूर हो जावेगा ४२॥ आगे खोटे
माणिक कहतेहैं जो माणिकके तुल्य
दिखाई देतेहैं एक से गली नाम पत्थर
है उसका रंग किरमची कांति थोडी
सखतीमें जरा भ्रष्ट है बम कामनहिहै
दूसरा नरमनाम पत्थरहै इह सखती
में तोलमें बहुत घटहै इसकी सरषी

स्याही माइल नहींहै एभी माणिककी खांनसे पैदा होताहै इह दो प्रकारके माणिक झूठे बनाय वेचतेहै परंतु जउहरीओंमें इनका देखना कठनहै।

पनालालीमत। सर्वलक्षणाक्रान्त एक पद्मराग अर्थात् माणिक ध्याने मे रहनेसे अश्वमेध यज्ञका फल लाभ अनायाससे प्राप्त होताहै और उससे धन आयुर्दाकी वृद्धि और जय लाभ होताहै ४३॥ अगरेजीमत चार किरातसे अधिक तोलका माणिक दुर्लभ होताहै उनका मोलभी कल्पित होतेहै और जिस माणिकमें रेखा होवे खास पीलारंग होवे उह जो कदाचित बारां घोड़ नाम एकसो बीस (१२०) रुपएका भी होवे तबभी लेना उचित नहींहै। अगरेजीमत बलास नाम माणिकोंका मोल अपणियों नम्मुनियोंके अनुसार होताहै अरु लाल रुमनियोंका मोल एक किरातके पीछे पंजाह (५०) रुपयोंसे सौ रुपए तक १०० होताहै। और जो मध्यम पदके हैन

सुंदर होवे वर्णा जिनका तिनका एक
कीरात पीछे दोसो रुपैयेसे २००) चार
सो रुपैया तक होताहै ४००) । और इ
ही वाली कीरात तोलेका होवे शुद्ध
वर्ण तिसका मोल चार हजार रुपैया
होताहै । लाल रुम्मनी मुलका सुत्र
जमाके मुकुट परहै ॥ मतपनालालि
रसका पीछेलेका कियाहै फारसीमे
आगे माणिककी कीमत कहतेहै जो
पांचविश्वे चूनी तोलमें होवेगी सो ए
क आने रतीसेले पांच रुपैये रतीतक
विकतीहै और पांच विश्वेसे दस विश्वे
तक तीन आने रतीसे दसरुपैये रत्ती
तक विकतीहै और दस विश्वेसे पंद
रा विश्वे तक पांच आने रती सेले बा
रा रुपैये रतीतक विकतीहै और पंदरा
विश्वेसे एक रतीतक आठ आने रती
से पंदरा रुपैये रती विकतीहै यह मध्ये
ले घाटकी कीमत लिखीहै आगे ता
बड़ा घाटकी कीमत कहतेहै तांवड़ा
घाट एक रतीहोवे तो बारा आने रती
से लेके पचास रुपैये रतीतक विकता

है जो सवारत्ती होवेगी सो एक रुपैए र
त्तीसैले पैंठ ८१ रुपैए रत्तीतक विकता
है परंतु सर्व गुण युक्त निर्दोष होवे
तो एकसौ तकभी कीमतहै पैसे क्र
मसे तोल सवाई मोल हना बढता है
ओर कहतेहै एक दक्षिण देसका बा
दसाह तोने साहनाम कर्केथा उसके
पास एक उत्तम अमोल माणिकथा
सो दिल्लीके बादसाह साहजहां ने
सुना तो चढाईकर जंगकर्के उस मा
णिकको लेआयाआ सो अगूठीमें ज
डा हुआथा उसको देष बादसाहने प्र
सन होइके सब दिल्ली लावेनोंके जुवा
हरी इकठेकर पूछा इसका तोल औ
र मोल कहो कहतेहै सो मुंदरीमें जडा
हुआ माणिक देख रत्न पारखी कौम
के श्रीमाल राय मनोती दासजीने क
हा इह माणिक अति उत्तम तोलमें
चौबी रत्तीहै तब बादसाहने हुकुम
दिया आवारकर तोलोजब मुंदरीसें
जुदाकर तोला तो पांच विस्वेकम चौ
बीस रत्तीहुआ इतना सुन बादसाहने

हुकम देइके कहा आजसे एक टंक
पीछे पांचविस्वे तोल कम रतीकर थी
क्योंकि मेरा माणिक इरा चौबीस रती
रहेगा आगे इतनातोल तम कमतीक
र छोड़ा सो आजतक ओही प्रमान च
ला जाताहै फिर परीक्षा करनेकी आ
ज्ञा दे तब चांदीके थालबीच मोतियों
के मध्य माणिकरखा तब सभ मोति
ओंमे उस माणिकका रंग छायगया
तब सबनोंने संमति करके उस माणिक
की कीमत एक करोड़ रुपैया कहा
इतनासुन प्रसन्नहोइ अंगूठीमे जड़ाय
दिनरात बादसाह उसको अपने पास
रखताथा सोउतम माणिकथा बाद
साहने नाम छत्र धारी रखा ॥
अग्रेजीमत गुजरातदेश । कुमाऊन र
और समुद्र मेभी पाए जातेहैं । कई
इसमें अभ्रककीमाई जुड़ेहोए होतेहै
हौर मनुष्यके आंखकी माई इसकी आ
कृती होतीहै हौर माणककी खान से
भी निकलताहै इह बहुत सख्त अरु ब
हुत नर्मभी नहीं होताहै । और अमरे

का अर्थात् नैऋतिआके उत्तरी खिंडमे
और बन्नाजीलमारहोतामें और यूरल
पर्वतमें और हिंदुस्तानके खिंडोंमे प्राप्त
है और मुख्य लंकाका नीलके साथ
पाया जाताहै ॥ वैडूर्य अर्थात्
लसनियेका बयान ॥ किसि कि
सि पहाडमें कोरबेकी पृथ्वीमें बीचके
हिस्समें थोडी जिमीपर लसुनिया पाया
जाताहै १ ॥ पद्मराग बगैरा जवाह
रातमें जिस प्रकारका रंग देखलाई
देताहै उही रंग वैडूर्य अर्थात् लसनि
यामेंभी होताहै २ ॥ उसके बगैर
सफेद रंग बैंगणी रंग और थोडा सि
पाई पर यही तीन रंग लसुनियामें
देखे जातेहै ३ ॥ रत्नपरीक्षके पण्डि
त लोक कहतेहै कि जितने प्रकारका
लसनियाहै उसमेंसे जो रंग मोरके
गले और बांशके पत्तके समानहै उ
ही प्रधानहै और जिसका रंग नील
कण्ठ पक्षीके परके समानहै वह अ
च्छा नहिंहै ४ ॥ जिस प्रकारसे म
नुष्यके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शू

ह चार जातीहै इसी प्रकारसे लसुनि-
यां मेंभी चार जातीयांहै और यही चा
र जात सलतणाक्रान्त लशुनिया पृ
थ्वीसे उत्पन्न होताहै ५ ।। थोड़ा नीला
पन लियहुए सफेद रंग लसुनिया ब्रा
ह्मण जातिहै थोड़ा लाल मायेल स
फेद रंग वाला लसुनियां क्षत्रिय जा
तकाहै थोड़ा नीलापन पीला माये
ल लसुनियां वैश्य जातिहै और नील
वर्ण लसुनीयां होवे सो जातका शूद्र
होताहै ६ ।। अंगरेजीमत और इसमे
चार छायाहै पीत १ भूसली २ हरी ३
श्याम ४ इह चारहै परंतु श्याम छाया
बहुत थोड़ी होतीहै इसमें कोई दोष
नहीहोता इसकी किर्ण सदैव चिटीया
इह धनुष बनतेहै या अपक्क सेबकी स
ब जीवनया जेतून फलके रंगबनतेहै ।।
अंगरेजीमत जिस लसुनियामें हरी रे
खोकी लहर जैसी नजर आवे उसका
बहुत मोल होताहै इसमें खुशकी ह
मेर दर्जेकी होतीहै ।। मत अंगरेजी
लहसनी सूर्यके सन्मुख रखके हाथमें

हिलाउताजावे जो उसमें बिलीके नेत्र
वत छाया प्रतीत होवे सो उत्तमहै ॥
वांशका नवा पत्र मोरका गला बि॰
लीके नेत्र इनाही तीन चीजोंके समा
न लसुनियाकी छाया देखि जातिहै
और जो लसुनिया तोलमें भारी होवे
और बहुत स्निग्ध निर्दोष निर्मल औ
र स्वछहोवे पण्डितलोक उसको अ
ति शुभलक्षण कहतेहै ७ ॥ क
सवटीपर घसनेसे जिस लसुनियेको
स्वछता और सफाइ ज्यादातर होति
जाय उही लसुनिया श्रेष्ठ अर्थात अ
सलहै ८ ॥ मतअंगरेजो जेकर ल
सुनीको जेस तो इसबीच बिजलीकी
शक्ति प्रवेश करतीहै केयदि औं त
क ठ हर तीहै ॥ ॥

लसुनियेका गुणकहतेहै

बिलीके नेत्र और थोमके समान थो
डा निर्मल होवे और वेगनि होवे सो
देवता औंके लायकहै ९ ॥ स्तार
घन असच्छ कलिक और अंग होवन
यही पंच प्रकारकी लसुनियां बहुत

गुण संपन्नहै १० ॥ जिस लसनियेमें
आभा निकले उस हस्तार कहतेहैं जो
कटमें छोटा परंतु तोलमें भारीहोवे उ
सको घन कहतेहैं ११ ॥ कलंक आदि
दोषोंसे खाली लसनियेको अत्यच्छ
कहतेहैं जिस लसनियासे चन्द्रकलाके
जैसा चंचल सूत दिखलाइदेवे उसको
कलिक कहतेहैं कलिक लसनिया स
ब संपत्तीका कारणहै १२ ॥ अंगरेजी
मत जो इसको अधिक चमक वाला ब
नाउणा होवे तो अर्कीक पत्थरके न्याई
इसको किसी मिट्टीके भांडेमें पाइकर ।
आगदेवे जो इसका रंग तिस अग्निमें बा
ना रहे और गोल आकार दिसे तरतही
निकालके ठंडा करके जब मौका रहे
तब उसको बाबागोरी नाम कहतेहैं ।
और जो बहुत लाल वा कालाहोवे तो
उसको सिलेमानी कहतेहैन । और जो
दर्पणकी न्याई अथवा हरा वा पीला हो
वे उसको पेजल कूर कहतेहैं ॥

लसनिका दोषकहतेहैं

कर्कर शार्कर त्रास कलंक और देह ल

हसनियामें यही पांच प्रकारके दोषहै (उ
जो छूनेमें खुरदराय उसे कर्कर कहतेहै
कर्कर लहसनिया भाइयोंका नाश करता
है सो वंधु नाश करहै और रुखिया लहस
नियाको शर्कर कहतेहै १४ ॥ जिस
निशानके अनुसारसे लहसनिया टूटा
मालूम होवे उसको त्रास कहतेहै त्रास
दोषवाला लहसनियां कुलका नाश क
रनेवालाहै और जिस लहसनके मध्य
दूसरा रंग मालूम होवे उसको कलंक
कहतेहै कलंक दोषवाला लहसनियां
मनुष्यका नाश करने वालाहै और जि
सके मध्य मैला मालूम होवे उसको
देह कहतेहै देह दोष वाला लहसनि
या मनुष्यका शरीर नष्ट करताहै १५ ॥
गिरिकाच शिशुपालकाच और स्फटिक
इनही चीजोंके द्वारा झूठा लहसनियां
वनताहै १६ ॥ हीरेके बगैर और ची
जके जरियेसे जो नाकरे वह कांच ह
लका होनेसे शिशुपालहै दीप्तिना र
हनेसे गिरिकाच और ज्यादा उज्वल होने
से स्फटिक समझना चाहिए १७ ॥

फूटा रत्न जेकर बेरंग होवे और कटमें मछेके समान होवे परंतु तरह तरहकी परीक्षा द्वारा इसका हाल अमल मालूम होवेगा १८ ॥ रत्न पारखी पण्डित रेखा प्रभेद लघुता कोमलता इनही स व विजाति निशान अनुसारसे अनायास सजात मणिका विचार कर सकेहै ॥१९॥ मणिके जड़नेसे दस्तकारीके दोषसे वेड़ रत्नभी खराब होतेहै और उस्ताद हाथका जड़ाऊ होया बहुत थोड़ा कदर रत्नभी होवे अच्छा भासताहै २० ॥ महागुण संपन्न एक तोला इन्द्र नील का जो मोल होताहै गुणशाली दोषल क्षणियका वही मोल होताहै २१ ॥ भागशील अथवा बहुप्रकार मणिधारे राजा अथवा जितेन्द्रिय सन्यासी को इन कोई दोष वाला लक्षणिया धारणे से जरूर पतित होवेगा २२ ॥ औरे नामत वेदगीके मत अनुसार इह रत्न धारणेसे चित्तका प्रसन्नता होताहै और मुखकी दुर्गंधि दूर करताहै अरु बालकोंके कफरोग दूर होतेहैं ।

32

और जो शोधके अंजन कर नेत्रमें डाले
तो नेत्र रोग दूर हो जातेहैं जो मिसके
प्रकार दांतों पर लाया जावे दांत निर्म
ल पुष्ट होतेहैं और जो जलाइके चूरण
करके कंठमें लावे तो गलकी पीडा त
था वाउ रोगादि दूर होतेहैन और लहू
को शुद्ध करताहै और जो इस्त्रीको बा
लोंके साथ बांध्या जावे तो उह सुख
प्रसूता होतीहै पीडा नहीं पावतीहै
और इसके धारणेसे दुःस्वपनभी नहीं
आवतेहैन ॥ मोतीका व्याख्यान
हाथी मेघ सूकर शंख मछलि सरप
सिप और बांस इन सब वस्तोंमें मोति
उत्पन्न होताहै यह संसारमें प्रसिद्धहै
परंतु इन सबमेंसे मोति सिपमें ज़्यादा
उत्पन्न होताहै ॥ मतपंनालालि ।
इहसि पकामोति समुद्रमें सात ठोडि
ओंसे पैदा होतेहैं प्रथम संगला द्वीप
में काहल नाम जागामें पैदाहै दूसरा
बसरा नाम जागामें पैदाहै तीसरा से
लान देसमें पैदाहै चौथा मशाकतमें
पैदाहै पांचमा बरहनमें पैदाहै छेमा

जहां स्थानमें पैदाहै समम हरिकाकि
पश्चिम खाडिमें पैदाहै ॥
मेघ होकर जलके बूंदके अनुसारसें
जो मोती पैदा होताहै उसकी महा र
त्नमें संख्या होतिहै मनुष्योंको बहुत
दुर्लभहै देवता लोक आकाशहीमें उ
सको ले लेतेहै २ ॥ हाथी सरप सू
कर और मछलि इन सबके मस्तकमें
और बांश सिप और शंखके पेटमें मो
ति होताहै ३ ॥ हाथी और सर्पके म
स्तकमें जो मोति उत्पन्न होताहै विना
तपस्याके वह मोति बहुत दुर्लभहै मेघ
बांश सिप और शंखमें अछे अछे मो
ति उत्पन्न होताहै ४ ॥ पहिला जो
प्रकार मोतिकी वर्णा कहगए उसमें
से सिप मोति वेधा अर्थात् उसी जातका
मोति वेधा जाताहै उसके बगैर और
जातका मोति अवेध अर्थात् वेधनः
ही होसक्ता अरु पाणी वर्षणासे जो
मोति उत्पन्न होताहै वही सब मोति
प्रधानहै ५ ॥ बांश हाथी सिपि म
छलि शंख और सूकर इन सबसे जो

33

मोति उत्पन्न होताहै यही सब मोति नि
र्मल नहि होताहै परंतु मंगल कार्य्यमें
बहुत उत्तमहै ६ ॥ गज विद्याके पंडि
तोने हाथीकी चार प्रकारकी वर्णो
नाकहै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य श्रोर शू
द्र चार जातीहै इस कारण गजमोति
चार प्रकारका होताहै ७ ॥ जो मोति
पीला पनहै सफेद रंग होवे वह ब्राह्म
ण वर्णहै जो मोति पीलापन माइल
लाल रंग होवे वह क्षत्रिय वर्णहै जो
मोति पीलापन माइल श्याम वर्णहै
वह वैश्य वर्णहै जो मोति पीलापन
माइल नीलवर्ण होवे वह शूद्र वर्ण
होताहै ८ ॥ मच्छसे उपजा होवे मो
ति उसके बराबर श्रच्छा गोल तोल
में भाएहोवे श्रोर सूर्य्यके समान ते
जकी खान पेसा मोति देवताश्रोंके
भोगमें रहताहै मनुष्योंको दुर्लभहै
९ ॥ श्यामदेशके बीच कंबोज ना
म काबल नगरमें जो हाथी उत्पन्न
होताहै उसके मस्तकमें जो मोति
पेदा होताहै वह सब मोति श्रामलेके

समान तोलमें भारी जयादा पीला प
रन्तु थोडा सफा होता है १० ॥ जो स
र्पसे मोति उत्पन्न होता है वह अच्छा गो
ल देखनेमें अच्छा होता है और थोडा
नीलापन होवे अरु बहुत सफा चा
मकने वाला पुण्यहीन मनुष्योंको ए
सा मोति नेत्रोंसेभी देखना प्रारब्धमें
नही होता है ११ ॥ मेघसे जो मोति
उत्पन्न होता वह कदी पृथ्वी नही
छुता आकाशहीसे देवता लेजाते है
उस मोतिका एसा तेज है कि मध्या
नके सूर्य्यके समान उसपर नेत्र नहि
ठहरता है १२ ॥ मेघसे जो मोति उत्प
न्न होता है वह प्रकाशसे अग्नि चन्द्र
मा नक्षत्र तारा और ग्रह गणोंको म
न्द करदेता है अरु वहि मोति जिस प्र
कार दिनको प्रकाश होता है इसीप्रका
र गाढे अंधेरेमें प्रकाश करता है १३ ॥
उत्तम किरणों विशिष्ट रत्नोंसे भरि
कारी समुद्र भूषित रत्नोंसे भरि सारि पृ
थ्वीभी एक मेघ उत्पन्न होवे मोतिके
समानमें नहि हो सकति १४ ॥

34

बहुत छोटा मनुष्य प्रारब्धके जोरसे
किसी तरह एक मेघसे प्राप्त हुया
मोति और जितने दिन वह मोति उस
केपास रहेगा उतने दिन वह मनुष्य
सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्य करेगा ९ ॥
मेघसे उत्पन्न हुयाहोवे मोति ऐसा न
हिंह कि एक उसके मालिकका ही
भलाकरे परंतु जिस राजाके राजमें
ऐसा मोति रहे उसको छे योजनतक
हर रहनेवाली प्रजाका दुःखका नाश
करेगा ९ ॥ जल तेज और वायु इ
न तीन तत्वके मिलनेसे मेघ उत्पन्न
होताहै इसी प्रकार मेघसे उपजा हु
या मोति तीन प्रकारका होताहै अ
र्थात किसीमें पाणी किसीमें तेज
अरु किसीमें वायुका हिस्सा जयादा
अथवा थोडा रहताहै अर्थात जिस
मोतिमें पाणीका हिस्सा जयादा रह
ताहै वह बहुत साफ अच्छा तोलमें
जयादा और बहुत प्रज्वलितहै ९ ॥
जिसमें तेजका हिस्सा जयादा होताहै
वह बहुत चमकवाला बहुतगोल

श्रोर सूर्यके समान उसपर नेत्रनहि ठहरताहै श्रोर जिसमें वायुका हिस्सा जयादा होताहै वह जयादा प्रकाश वाला होताहै श्रुरु गोल बहुत साफ श्रोर तोलमें थोड़ा होवेगा १८ ॥ सूकरके मस्तकमें जो मोति उत्पन्न होताहै वह मोति सूकरके दंतके समान सफेदवर्ण होताहै परंतु किसी किसी जगामें सूकरके शिरीरके समान रंग होताहै १९ ॥ जिस प्रकार मनुष्यके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य श्रोर शूद्र चार जातीयांहै उसी प्रकार सूकरभी चार जातिका होताहै श्रोर उसमें उत्पन्नहुया मोतीभी चार जातिका होताहै २० ॥ ब्राह्मण जातका मोति सफेदवर्ण श्रोर चिकना क्षत्रिय जातका मोति सफेद मायेल लाल छूनेमें कर्कश कावहुरा २१ ॥ वैश्य जातका मोती सफेद मायेल पीलापन श्रोर छूनेमें चिकना श्रोर शूद्र जातका मोति सफेद नीलापन लियहुये श्रोर छूनेमें कर्कश २२ ॥ कर्कशकावहुरा

35

जो मोति बेर फलके समान और सू
करके दांतके समान सफेद होवे ऐ
सा सूकरके जातका मोति देखनेमे
बहुत अच्छा और पुण्यहीन मनुष्य
को नहि मिल सकताहै २३ ॥
जिस शंखका पीलारंग होवे और
मुखकाला रंग ऐसेही शंखमें मो
ति उत्पन्न होताहै इसवास्ते अब उस
के जातीके मोतिका हाल लिखा
जाताहै २४ ॥ शंखसे जो मोति उ
त्पन्न होताहै उसका कद बडे बेरके
समान होताहै और उसका रंग शं
खके पेट समानहै शंखवाला मोति
और हाथीके मस्तकका मोति सब
मे श्रेष्ठ और मंगल करनेवालाहै २५
शंखके मध्य पांचजन्य शंख सबमें
प्रधानहै उसके वंशमें जो शंख हो
ताहै उसका मोति कबूतरके अंडे
के समानहै और ओले पथ्थरके स
मान सफेद निर्मल प्रकाशमान औ
र देखनेमें मनको हरनेवाला होता
है २६ ॥ अश्विनी आदि नक्षत्रमें स

तारे नक्षत्र तक सत्ताईस प्रकारका
शंख पैदा होताहै इसी तरहसे शंख
में उत्पन्न हुया मोतिभी सत्ताईस प्रका
रका होताहै २७ ॥ शंखसे पैदाहुये
मोतिमें सफेद काला थोडापीला
बहुत लाल जयादा पीला हलका
खाकी और ईटका जैसा रंग इसी प्र
कारसे नौ प्रकारका रंग होताहै २८
अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रके मध्ये
अश्विनीसे आदि अश्लेषातक यही
नौ नक्षत्रमें जो उत्पन्नहुया मोति
तोलमें बहुत भारी होताहै और मघा
नक्षत्रसे ज्येष्ठा नक्षत्रक यही नौ नक्ष
त्रजातका मोति फकत तोलमें थो
डा भारी होताहै और मूला नक्षत्रसे
रेवती नक्षत्रतक यही नौ नक्षत्र जा
तका मोति तोलमें हलका होताहै २९
जो शुक्ति समुद्रमें पैदा होतिहै उ
सके मुखमें मोतिजो पैदा होतिहै
मछलिजातका मोति बहुत गोल दे
खनेमें छोटा तोलमें हलका और उस
का वर्ण बोयाल मछलिके पिठके

36

समान होताहै ३० ॥ तिमि मछलि
से जो मोति उत्पन्न होताहै उसकी
डौल घुघटी अर्थात् गञ्जाके समा
न होताहै तोलमें बहुत हलका पा
टली पुष्पके समान रंगमें होताहै
और अछा देखनेमें उससे और कदमें
तोल पर जयादा आबदार नहि हो
ताहै ३१ ॥ वायु १ पित्त २ कफ ३
वायुपित्त ४ कफपित्त ५ वायुकफ ६
और वायुपित्त कफ ७ यही सात प्रका
रकी मछलिभी होतिहै इसवास्ते मछ
लिसे उत्पन्न हुया मोतिभी सात प्रका
रका होताहै ३२ ॥ जिस मछलिमें प
वन जयादा होवे उससे उत्पन्न हुया
मोति तोलमें बहुत हलका अरुणाव
र्णहै जिस मछलिमें पित्त जयादा हो
वे उससे पैदा हुया मोति हलका पीला
रंगहै और कोमल होकरसे सितावी
हूटजावेगा जिस मछलिमें कफ जया
दा होवे उससे उत्पन्न हुया मोति तोल
मे भारा और सफेद रंग होताहै और
जिस मछलिमें वायुपित्त ज्यादा होवे

उसका पैदा हुआ मोति गोलमें बहु
त हलका और कोमल होकरके टूट
जावेगा ३३ ॥ जिस मछलिमें वायुक
फ ज्यादा होवे उससे पैदा हुया जो
मोति सो कदमें कुछ बडा होताहै और
जिस मछलिमें पित्तकफ ज्यादा हो
वे उससे उत्पन्न हुया मोति बहुत सा
फ शुद्ध निर्मल होताहै जिस मछलि
में वायु पित्त कफ तीनो समान हो
गा उससे पैदा हुया जो मोति सो पूर्व
लिखित ताल गुणयुक्त होवेगा और
इसी सात प्रकारकी मछलिके मोति
के मध्य जो मोति एक धातु प्रधान
अथवा सर्वधातु प्रधान मछलिसे
पैदा होवे वही शुभदायकहै ३४ ॥
सर्पके मस्तकमें जो मोति उत्पन्न हो
ताहै वह अच्छा गोल बहुत साफ औ
र ज्योति ऊपर तलवारके धारके समा
न नीलारंग होताहै ३५ ॥ जिस सर्प
के मस्तकसें मोति उत्पन्न होताहै व
ह वासुकि वंशका सर्प होताहै और
ऐसा सर्प पृथ्वीपर सबजागा नहि पै

37

दा होताहै कदाचित् किसी पवित्र देश
मे ऐसा सर्प देखा जाताहै ३६ ॥
सर्पके मस्तकका उत्पन्न हुया मोति
गोल होताहै देखनेमे बडा सुंदर नी
लरंगकी आभासहित बहुत प्रज्व
लित ऐसा मोति पुण्यहीन मनुष्यको
नेत्रसे देखनाभी प्रारब्धमें नहि हो
ताहै ३७ ॥ सर्पके मस्तकमें जो मो
ति पैदा होताहै वहभी ब्राह्मण क्ष
त्रिय वैश्य और शूद्र चार वर्णका होता
है उसमेंसे जो ब्राह्मण वर्ण होवे उ
सका कद ... कलफलके समान
होताहै जो क्षत्रिय वर्ण उसका कद
छोटे बेरके समान होताहै और जो
शूद्रवर्ण उसका कद गुञ्जाके समान
होताहै ३८ ॥ पुण्यवान मनुष्य ब
हुत रत्न धन लक्ष्मी या बहुत यत्नसे
प्राप्तहोनेवाली राजलक्ष्मीको हासिल
करके जिस तरहसे चमकनि ऐसा
नी और नाराणी चेहरा होताहै उसी
प्रकारसे सर्पके मस्तकका एक मो
ति धारण करनेसे तेजवाला होताहै ३९

जिसवक्त कोई मनुष्य इत्रपारसीके मत
के अनुसार अच्छे वक्तमें सर्पके मस्तकसे
इसनकृषेमें मोतिको स्थानमें रखतेहै उस
वक्तमें आकाश मण्डलमें चन चन दुन्दु
भि बाजेकी धुन होतिहै इसकारण जो
मनुष्य खजानेमें सर्पका मोति रखे वह
मनुष्य कहीं सर्प राक्षस निशाचर और
डाकू इत्यादि से नहि खताहै ४० ॥
किसि किसि जगामें मछिककेभी मस्त
में मोति होताहै पण्डित लोक उस मोति
कोभी सर्पके मोतिके समान कहतेहैं ४१। ।
सिंहल पारलौकिक अब इसवक्तमें न
हि मालूमकर्ते कि उसका नाम क्याहै
सौराष्ट्र सुराष्ट्र नामपर्ण पश्चिम चाह
पर्वतके पास पारसीक पारस्यदेश को
बीर केलास पर्वतके निकट पांच द्रावि
ड के अन्तर्गत विराट मत्स्यदेश इनो अ
ठों देशोंमें मोती उत्पन्न होताहै ४२ ॥
सूर्य्य जिस समे स्वाती नक्षत्रमें रहता
है उस समे में जो जलकी बुन्द सिपीमे
पडतिहै उसी जलकी बुन्दके द्वारा बडा
ने साफ अर्थात बहुत रोशन मोती पैदा

होताहै ४३ ॥ जलकी बूंद जिस प्रका
रकी वर्षेगी उसी प्रकार मोतिभी होता
है अर्थात् जेकर जलकी बूंद बडी हो
वेगी तो बड़ा मोति होवेगा और जो म
ध्यकी बूंदसें मध्यम मोति होएगा और
पतलि बूंदसे छोटा मोति होताहै ४४।
पन्नालालीमत ऐसा जिसमें शब्द दिखो
ई देताहै शुद्ध सुपेद चिकन ॥
सिंहलदेशी मोति बहुत चमकदार गो
ल होताहै और साफ मोमके समान रं
गहै पार लौकिक देशका उत्पन्न हुया
मोति उसमें चुबेजैसा चिन्हहै और तो
लमें बहुत भारी होताहै ४५ ॥ ता
म्रपर्णी देशका उपजाहुया मोति लोबे
के रंग होताहै पारस देशका मोति पीला
रंग होताहै कौबेर देशका मोति पीला
रंग होताहै कौवेर देशका मोति थोड़ा
श्याम रंग होताहै और बड़ा कर्कश होता
है खिहुरा पाण्डुदेशका मोति फिका
सफेद होताहै विराट देशका मोति शु
क्लवर्ण अरु कर्कश तथा खिहुरा होता
है ४६ ॥ पन्नालालिमत ॥

और बसरेका मोति चिटा चमक थोडिहै
सेलानका मोति जर्दि माइलहै नाम मग
ज कहतेहै मसकतका मोति स्याही मा
इल नामस्यानि कहतेहै विरहनका मोति
सुंदर चमक थोडीहै जद्देका मोति लंबा
ईकुपर नाम बावलिआहै चमक रहतेहै
द्वारिकाका मोति होला स्याही माइलहै
यह सात खाडिओंसे पैदा होतेहै ॥
जो निर्दोष मोती चार रती दाणाहोवे त
व कीमत ५०) रुपैए को विकताहै सो
चार रती पैनोवोआई एक दाणा ४५०)
सोइ चारसो भया जो चिटा चमक विक
नाई गोल छेकवरी कनवीन होवे सो
कीमत दारहै जो स्यानी मगज नामहै
सो अठ आने वोसे दस रुपैए वोनके
कीमतहै सात पड्देका मोति उत्तमहै
मध्यम मगज ऊपर पड्दे पांचहै अध
म स्यानीपे पड्दे तीन यादा होतेहै औ
र मोतीइ सब गोल मिलाय नीले कप
डीच राखे तब चमक दार रहताहै और
मोती ज्यादा गरमी पहिसे जादासी तब
तरसे सताबी बिगड जाताहै इसकी औ

39

भांमेसिफतहै ॥ मतंपन्नालालि ॥
रुक्मिणी नाम एक जातका सिप पैदा
होताहै परंतु उस जातका सिप थोड़ा
है उसमें जो मोति उत्पन्न होता वह नि
हायत खुश रंग सफेद और बहुत सा
फ और जायफलके समान बड़ा इस प्र
कारका मोति बहुत आदर वालाहै ४७ ।
रत्नपारखी पंडितोंके मतके अनुसार
उत्तम छुटा देने वाला और गोल देखने
में रमणीय और निर्दोष मोति बहुत दु
र्लभहै और बे कीमतहै और राजके यो
ग्यहै उस जातका मोति कम नसीबके
योग्य नहिंहै बड़े प्रताप मानके योग्य
होताहै ४८ ॥
जिस प्रकारके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य
और शूद्र चार जात होतिहै उसीप्रका
र सिपमेंभी चार जातहै उससे पैदा
हुआ मोतिभी चार जातकाहै ४९ ॥
जो मोति सफेद रंग सारा तोलमें भारी
चमकदार और तेजस्वी होवे उसको
ब्राह्मण वर्ण कहतेहै जो मोति थोड़ा
लालहोवे और देखनेमें बड़ा लाल रं

ग वह शुद्ध वर्ण मोतिहै ५१ ॥
बांशसे जो मोति पैदा होताहै वह देखने
मे वहमेंके समान शुक्ल वर्ण और उस
का कद कंकोल फलके समान बडा इ
स जातका मोति खास कोइ कोइ मनु
ष्य बहुत पुण्यके जोरसे दोघा एक पा
वेताहै ५२ ॥
पृथ्वी आदि पंच महाभूत अर्थात् मिट्टी
जल पवन अग्नि और आकाश इसी प
व तत्वके कमी बशीसे बांशभी पांच
प्रकारका होताहै इसकारण बांशजा
तका मोतिभी पांच प्रकारका होताहै ५३ ।
जिस मोतिमें पृथ्वीका हिस्सा जयादा
है वह तोलमें भारी अरु बहुत सफा
है जिस मोतिमें तेजका हिस्सा ज्यादाहै
वह तोलमें हलकाहै जिस मोतिमें ह
वाका हिस्सा जयादाहै वह थोडी ठोक
रसें टूट जाताहै और कदमें बडाहै और
जिस मोतिमें आकाशका हिस्सा जया
दाहै वह छूनेमें अच्छा और तोलमें थो
डा अर्थात् हलका होताहै ५४ ॥
जिस मोतिमें जलका हिस्सा जयादा

है वह चमकदार सादा और साफ: यही
पाव जातके मोति धारणेसे किसी प्रका
रकी व्याधि अर्थात शरीरके दुःखका
मे नहि होताहै ५५ ॥

रक्त पारसी पाण्डुर पीला मधुके स
मान रंग शुक्ल वर्ण और नील वर्ण
यही प्रकारका आभा मोतिकी कह
तेहै ५६ ॥

पीला आभा युक्त मोति लक्ष्मीका
नधारा करने वालाहै मधुके समान
आभा विशिष्ट मोति बुद्धिको देने वा
लाहै शुक्लवर्ण आभायुक्त मोति य
श देने वाला होताहै और नील आभा
मोति सौभाग्य देने वालाहै ५७ ॥

शुक्ल आभायुक्त मोति ब्राह्मण वर्ण
है प्रातःकालके सूर्यके समान आ
भायुक्त मोति क्षत्रि वर्णहै अरु पीत
आभायुक्त मोति वैश्य वर्णहै और
कृष्ण आभायुक्त मोति शूद्र वर्णमें
संख्या किया गयाहै ५८ ॥

मोतिका गुण

सुतारत्व सुवृत्तत्व स्वच्छत्व निर्मलत्व

ग्रनत्व स्निग्धत्व स्वछायत्व और अस्फु
टितत्व यही अठ प्रकारके गुण मो
तिमें होताहै ५९ ॥
जिस मोतिमें तारेके समान आभा
निकले वह सुतारःहै जो मोति गो
ला कारहै वह सुवृत्तहै ६० ॥
जो मोति निर्दोष होवे उसको स्वछ
कहतेहै जो मोति मलिन ना होवे उ
सको निर्मल कहतेहै और जो मोति
तोलमें भारी होवे उसको घन कहतेहै
जो चन्द्रमाके समान किरण विशिष्ट
होवे उसको स्निग्ध कहतेहै जो मोति
उत्तम छाया विशिष्ट आभा विशिष्ट
उसको स्वछाय कहतेहै और जो मो
ति साफ सुथरा होवे उसको अस्फु
टित कहतेहै ६२ ॥
जो सफेद रंग कांचके समान उत्तम
किरण विशिष्ट राहू मछलिके समान
आभायुक्त ऐसा मोति देवता ओंके
जेवरोंके योग्यहै ६३ ॥
एवंविध जिन सब गुणोंकी वार्ता कहि
गईहै वही सब गुणयुक्त मोति जो

41

मनुष्य धारणकरे उसकी आयुरदा औ
र लक्ष्मी दोनोंकी वृद्धि होतीहै सर्व
पापका नाश होताहै ९४ ॥
जो मोति तोलमें भारी अच्छा दीप्ति
विशिष्ट सुफेद गोल समान और वा
रिकबेध सिवाय खरीदके देखने वाले
कोभी आनन्द देनेवाला होताहै और
ऐसा मोति सबमें अच्छाहै ९५ ॥
जो मोति सब प्रकार निर्दोषहै वही
मोति अपने मालिकका सब दुःख ना
श करने वालाहै और उसके मालिक
का कोई दुःखहो नहि सक्ता ९६ ॥
जिस घरमें निर्दोष मोति रहताहै च
ञ्चल लक्ष्मी उस घरमें सर्वदा का
ल अचल रहतिहै ९७ ॥
मोतिके उत्पन्न इसकी जगहका देखना
कुछ जरूर नहि उसका दोष रंग और
रूप देखना चाहिये ना समझना चाहि
ये कि फलानी जगाका उत्पन्न हुया
मोति अच्छा होताहै और फलाने जगा
का पैदाहुया माठा होताहै क्यों कि
सब जगामें माठा चंगा दोनो प्रकारका

मोति उत्पन्न होताहै ८८ ॥

मोतिका दोष ॥

रत्नपारखी पंडितोंने मोतिके दस प्रकारके दोष कहेहैं उसमेंसे चारप्रकारके बड़े दोष कहेहैं और छे प्रकारके मध्यम दोष कहतेहैं अलग अलग उसका लक्षण लिखतेहैं ८९ ॥

जिस मोतिके किसी रंगसे सिपका टुकड़ा लगारह जाताहै उसको शुक्तिलग्न दोष कहतेहैं शुक्तिलग्न दोषवाला मोति धारणेसे बिमारि होतिहै ७० ॥

जिस मोतिमें मछलिके नेत्रके समान एक प्रकारका निशान रहनेको मीनात दोष कहतेहैं और वह दोष पुत्रका नाश करने वालाहै ७१ ॥

जो मोति दीप्ति और आभा ना रहनेको जठर दोष कहतेहैं जठर दोषवाला मोति धारणेसे दारिद्र होताहै इसकारण इस प्रकारका मोति धारना मनासिब नहि ७२ ॥

जिस मोतिमें मुंगेके समान आभा निकलनेको अतिरक्त दोष कहतेहैं अतिरक्त

दोषी धारनेसे जरूर मृत्यु होतीहै ७३ ॥

जिस मोतिमें कडेके समान तीन रेखा
होवे उसको त्रिशूल दोष कहतेहैं त्रिशू
ल दोषयुक्त मोति सौभाग्य नाशकरताहै ७४
जो मोती गोल नहि होवे उसको चिपिट
कहतेहैं चिपिट तीन धारनेसे सदाई
अयश अर्थात् बदनामी प्राप्त होतीहै ७६ ।
जो मोति त्रिकोण होवे उसका नाम त्रि
स्रु कहतेहैं त्रिस्रु दोषवाला मोति धार
णसे सौभाग्य नाश करेहै और जो मो
ति लंबा होवे उसको कृश कहतेहैं कृ
श दोषवाला मोति धारणसे बुद्धि जा
वेगी ७७ ॥
जो मोति किसी जगाहमें टूटा होवे उ
सको कृशपार्श्व कहतेहैं इस प्रकारका
मोति बहुत माड़ा होताहै और इस जा

तका मोति धारणेसे मनुष्य उद्योग रहि
त होताहै १८ ॥
जो मोति बिलकुल गोल नहि होवे
नाना प्रकारके बिमारी ओंके दोषोंसे
भराहुआ होवे और देखनेमेंभी सुन्द
र नहि होवे और बहुत गुणहीन होवे
ऐसा मोति सब प्रकारकी लक्ष्मीका
नाश करनेवालाहै इसकारण उसका
मोलभी बहुत थोडा होताहै १९ ॥

आगेपन्नालालिमतसे ।

और ऐबकहतेहै सो सात प्रकारकेहै
प्रथम गर्ज दोषहै इह मोति फूटेकी मा
निंद दिखाई देताहै दूसरा लहर दोषहै
इसमें बहुतबारीकलकीर दिखाई दे
तिहैं तीसरा गोडीनाम दोषहै जो चो
गोर्ड उगोलकीर दिखाई देतिहै चोथा
चोभा नाम दोषहै इह उस सीतलाकी
मानिंद जो अंदर पडेगो होवे पंचमकाग
वासी दोषहै जो मोति कालेरंगका हो
ताहै इह निपत बुराहै छेमा नामेसरी
दोषहै इह तांबेके रंगकी छाया प्रतीत
होतिहै सप्तम चिड्डा दोषहै जो एकत

43

कि दबाहुआ हमरा हुवा होताहै इस प्र
कार २२ सात पव लिखेहै पंनालालिमन ।
मोति बनाया होवे अथवा असल होवे
शक होनेसे रत्नपारखी पण्डितके द्वारा
उसकी परीक्षा करणा उचितहै ८० ।।
सवेरे सुके कपड़ेमे रखकर और थोड़ा
चाउल लेकर हाथसे रगड़ना चाहिए ८१
इसी प्रकार करनेसे असल मोति खरा
बना होवे औरभी साफ होवेगा और
बनायाहुया मोति उसीसमे टूट जावेगा ८२
नमक मिलाहुया गौके मूत्रके भरेहुवे
वर्तनमे मोतिको रखकर अग्निपर थोड़ा
थोड़ा गरम करना फेर उसको हाथसे
उठाकर धानके छिलकेके साथमे घ
सनेसे बनायाहुया मोति टूट जावेगा
और असल मोति औरभी साफ करेगा ८३
पहिले मछलिका पेट गरम होवे फेर
उसको दूध शराब या साफ पाणिमे
सामोती आस्ते आस्ते पकावना फेर
उसको साटे कपड़ेमे रखकर घसना
चाहिए असल मोति होनेसे बहुत सा
फ और आबदार होवेगा मोतिका जेक

र लेंबुके रसमें पकावे तों बे धनमें ।
बहुत सुलभ होताहै ८५ ८६ ॥
इति मोतिका बषान ॥ १९२ ॥

गोमेदका बयान २३। ॥

हिमालय पर्वत और सिन्धुनदमें गोमेद उत्पन्न होतेहैं स्वच्छ गुरु स्निग्ध गहरा रंग दीप्तिमान सफेद अथवा पीला रंग गोमेद बहुत कीर्ति लायक होताहै १ ॥ जिस प्रकारसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चार जाती होतेहैं उसी तरह गोमेदभी चार प्रकारका होताहै सफेद जात ब्राह्मण होताहै लालरंग क्षत्रियजात होताहै थोड़ापीला वैश्यजात होताहै और थोड़ा नीला शूद्रजात गोमेद होताहै सफेद लाल पीला और काला होताहै यही चार प्रकारकी छाया इसी चारजातके गोमेदसे निकलतेहैं २।३। भारी प्रभाविशिष्ट सफेद रंग स्निग्ध कोमल बहुत प्राण और स्वच्छ गोमेदसो बहुत धनको देनेवाला होताहै ४ ॥ हलका बदसूरत नयादा खुरदरा अथवा थोड़ा खुरदरा भ्रान्तिजनक अर्थात शक पैदा करनेवाला अस्निग्ध मलिन गोमेद लक्ष्मी भोग और बलको नाश करताहै ५ ॥

हीरेका जितना दोष कहा गयाहै सो
गोमेदमेंभी वही सब दोष पायाजाताहै
रत्नपारखी पण्डित अग्निया कसवटीसे
गोमेदकी परीक्षा करतेहैं ६ ॥
निर्दोष गोमेदका मोल सबके मतके
समान् नहि होताहै किसीके मतके अ
नुसार जेकर एक तोला गोमेदहोवे दो
तोला सोणा मोल इसका होताहै औ
र किसीके मतके अनुसार एक तोला
मूंगेका जो मोल होवे वही मोल एक
तोला गोमेदका होताहै अरु कोई कह
तेहैं चामरके समानभी मोल गोमेद
रत्नकाहै ७ ११६ ॥
कपटी सदागर स्फटिकमें गोमेद बना
तेहैं ब्राह्मणादि चार प्रकारका हीरा धा
रणेसे जो फल होताहै चार प्रकारका
गोमेद पहरनेसे वहीफल होताहै ८
११७ ॥
इति गोमेदका बयान ॥

45

अथ गोमेदका लक्षण ॥

यह हिमालय देस सिंधुनद अर्व देसमें
इसकी खानहै इसका रंग चार प्रकारका
है इसमें जरदी सुरखी मिलीहुई स्याही
कीछाया चमकथोड़ी तोलहलकाहै
या रंग सफेद सुरखी माइलहै या जरदी
सुरखी माइलहै या केवल नीला हुन
रखताहै यही ब्राह्मण आदी चारवरण
कहेहै और इसका खोटा कांचका बन
ताहै सो अंदरका चमकारा गुम रहताहै
इसकी कीमत चारदाव आठ आने को
डीसे बीस रुपये कोड़ीतक बिकाऊ हो
ताहै और गोमेदके अंदर चकमकड़ी जाल
बन जाला दिखाई देताहै सो एव अतिहा
नी करहै और त्रास दोषभी लगाने या
लहै और परीक्षा सांणके ऊपर रगड़ दे
खनेसे या सानका शब्द सुननेसे प्रतीत
होताहै गोमेदका शब्द नर्म आउताहै औ
र नीलमका शब्द बहुत सखत जैसे हा
थीका चिंकारहै और हीरेकी अवाज प
सेहै जैसे बड़े जोरकीहवा बंदहो तमामसे
निकलसो सांसन सेन सद होताहै ॥

विद्रुम अर्थात मुंगेका बयान ३३८
सफेद समुद्रके मध्ये वज्ररूपिणी एक
प्रकारका लताकार रत्न उत्पन्न होताहै
उसको विद्रुम अर्थात मूंगा कहतेहै ॥१॥
पण्डित जिस मूंगेको धारतेहै वह मूं
गा जिस प्रकार ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य औ
र शूद्र चार जाते होतेहै इसी तरह उस
कोभी चार जातीया होतीहै २ ॥
खरगोशके नेत्रके समान लाल कोम
ल और बहुत स्निग्ध मूंगा ब्राह्मण जा
त होताहै ब्राह्मण जातका मूंगा देख
नेसे बहुत अच्छा होताहै और जलदि
वेध होताहै ३ ॥ ३
कनेलका पुष्प बन्धूलीका फूल सिन्दू
र अथवा अनारके फूलके समान लाल
लेसा मुशकिलसे वेधनेवाला और अ
स्निग्ध मूंगा क्षत्रिय जात होताहै ४ ॥
पलाशपुष्प और पाटलीपुष्पके समान
सरव रंग स्निग्ध थोड़ा कान्तिविशिष्ट
मूंगा वैश्य जात होताहै ५ ॥
जो मूंगा लाल कमलके समान रंगवा
ला सख्त जिसकी चमक थोड़े दिन रहै

और जो बूझत जलदि बेधा जाय वह
शूद्र जातहै ६ ॥
लाल रंग स्निग्धता सरू कायिम रंग
और अच्छा सुंदर मुगा यही कहगये
सो खास गुण करहै और यही सब
गुणयुक्त मुगा धन धान्यकी वृद्धि क
रने वाला होताहै ७ ॥
हिमालय पर्वतेमे गहरा लाल रंगका
मुगा पैदा होताहै इसको धारणेसे
नेहरका रोग नाश होताहै ८ ॥
बदरंगी छिद्रधरापन यही दो मुगेके
प्रधान दोषहै इसके बगैर छीर काक
पद और छिटक बगैर हीरेमे जो दोष
होतेहै वही सब अधव मुगेमेभी अ
कसर होतेहै ९ ॥
छिर दोषमे यश और लक्ष्मीका नाश
होताहै आवर्त दोषवाला कुलका नाश
करताहै परिवर्त दोषवाला बिमारी पै
दा करताहै छिटावाला भी दौलतका
नाश करताहै त्रास दोषवाला त्रास दे
ताहै और नीला अंब वाला मृत्युका
कारणहै १० ॥

निर्दोष मुंगेका मोल उसके तोलसे दूना
खालिस चांदी होवगी ऐसे मुंगेको धार
णेका फल जिस प्रकार जान भेदके हिसा
बसे लिखेहुये रत्न देतेहै उसी प्रकारसे
मुंगाभी फल देताहै ११ ॥
कर नाम एक मुनिका वचनहै कि जो म
नुष्य बद सूरत विजाति नीवा ऊचा बद
रंग और खेरुरा मुंगा धारताहै वह आप
नि मोत आप लावताहै १२ ॥
गुरुता स्वच्छता कान्ति और कठिनताभी
कोइ एक रत्नके प्रधान गुण होवन् प
रंत हीरेके बगैर और रत्नोंका भारी हो
ना तारीफहै १३ ॥
धूर्तजन बुद्धिबल करके निर्दोष रत्नके
समान झूठा तैयार करसक्तेहै इसकार
ण शास्त्रके प्रमाणके बराबर रत्नकी प
रीक्षा लिखि जातिहै १४ ॥
हीरेके द्वारा झूठा हीरा बेतकलीफ घे
स्या जाताहै और झूठा मोति जलमें लू
ण मिलाकर धोनेसे नष्ट होजाताहै १५ ॥
रत्न पारखी पण्डित कहतेहै कि पास
र घसनेसे माणिक आदि झूठा ग्रह स

47

वा मालूम हो सक्ती है १६ ॥
ऐसे गाछकी छाल वगैरहसे जिसको
पाणीमें देकर पकावनेमें पाणीका रंग
बदरंग होजावेगा और उस पाणीमें क
स आजावेगा ऐसे जलमें जिस रत्नको
छोड़ देनेसे उसका रंग वदरंग होजावे
गा और घसनेसे नरम होवे उसको
झूठा कहते हैं १७ ॥
राजा लोकोंको मनासिब है इस प्र॰
कारके समान रत्नकी परीक्षा करके
फेर उस रत्नको खजानेमें रखनेकी
आज्ञा देवे इस सबबसे आयु लक्ष्मी औ
र पशु वृद्धि और जय प्राप्ति होवेगा १८
परिष्कृत कोमल स्निग्ध और उत्तम
वर्ण विशिष्ट मूंगा मनुष्योंको हित
कारी होताहै धन धान्य करनेवाला
होताहै और जहिरका रोग नाश क
रने वालाहै १९ ॥
इति मूंगका बयान ॥

१५० मरकत अर्थात पन्नेका बयान
नर्कि देशके समुद्रके करीब नीचि कु-
वी पृथ्वीमे पन्ना पैदा होताहै पन्नेका
गुनर और दोष संक्षेप करके बयान
होताहै १ ॥

पंना लालि मत

यह पंना चार किसम काहै एक पुरा-
णे खानका दूसरा नई खानका तीस-
रा नई खानका पुराणे जैसाहै और रंग
भी दो तराकाहै एक सबज दूसरा का-
हीहै काहीकीमतमे घटहै ॥
पन्नेके मध्य जो कर्कश अर्थात खुरदरा
नहि होवे सो चंगाहै और जिसका रंग
सबज तोतेके गलजैसा शिरीष फूल
खियानकी पिठ इन चास कोइ फूल
पाता और मयूरके पांखोके समान स-
बज रंग यही सब जो बहुत अच्छाहै २

मत पंना लालि ॥

और पुरातन खानका जोहै उसका रंग
ऐसें जैसें खेती बीच धानोंकी साखका
रंग जरदि माइल सबजिहै और नरम च-
मक चिकनाई तेज तोलमें हलका सो

उत्तम है ॥ पन्नेकी खानसे जो कुछ
उत्पन्न होवे वह सब जहरके रोगको
नाश करता है ३ ॥
सर्पका जहर जेकर मंत्र और दवासे द
रनही होवे वह पन्नेके जरियेसे नाश
होता है ४ ॥
पन्नेकी खानसे अगर और कोई दूसरे
किस्मकी निर्दोष मणि उत्पन्न होवे
तो उसको उमदा अथवा उत्तम क
हते हैं ५ ॥
जो पन्ना गुणहीन और तोलमें बहुत
हलका होवे अरु सब जगह रंगमें ब
राबर सूर्य्यकी किरणसे स्पर्श करके
सब मकानको रोशनी करे ६ ॥
अथवा जो रंगमें हलका लेकिन उस
के भीतरकी आभा जिस प्रकार बिजली
चमकनेसे घासके ऊपर दिखलाई देती
है अथवा जिसके देखने हीसे मनमें
बहुत खुशी प्राप्त होती है रत्नपारखी
पण्डितोंके मतके अनुसार वही पन्ना
निहायत अच्छा होता है ७ ॥ ८ ॥
जो पन्ना हाथपर रखनेसे सूर्य्यकी कि

रणके लगनेसे अपने किरणको निका
ले और चारों तरफ को रोशनसा करे
उस पन्नेको महा मरकत कहते हैं ९ ॥
रंगमें निहायत गहरा और जिसके बीच
का हिस्सा साफ चन अर्थात् गहरा रंग
स्निग्ध और मयूरके पुच्छके समान को
मल किरण विशिष्ट वही पन्ने मध्ये उ
त्तम पन्ना समझा किया गया है १० ॥
जो पन्ना साफ रोशन विशिष्ट परंतु व
ही रोशनि लेकर चञ्चल हो तो उसके
होनेसे उसका गुण पहिले कहयाहै
पन्नेके समान नहिहै ११ ॥
जिस प्रकारसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ
र शूद्र चार जात होतेहैं उसी प्रकार इस
में महा मरकत मणिमेंभी चार जातहै
छाया भेद और प्रकार प्रकारके लक्षण
के द्वारा चार जातका भेद मालूम होताहै १२
मरकत मणि अर्थात् पन्नेमें सत प्रकार
का दोष और पंच प्रकारका गुण और
अष्ट प्रकारकी छाया कहते है १२ ॥
जो स्वाभाविक स्निग्ध नहि उसको रू
ल कहते है ऐसा पन्ना धारणसे विना

री होतीहै और जो पन्ना किसी जगह पी
ला रंग रखताहै उसको विष्फोट कहते
है विष्फोट पन्ना धारणेसे शस्त्र घा
तसे मृत्यु होतीहै १४ ॥
पथ्थरके टुकडे सहित पन्ना धारणेसे
मनका अभिलाष नष्ट होताहै और जि
सका आकार मलिन होवे उस पन्नेको
विच्छाय कहतेहै ऐसा पन्ना होनेसे तर
ह तरहकी बिमारी पैदा होतीहै १५ ॥
वीनि अर्थात् सफेद शर्करके चूरके स
मान चूर युक्त पन्नेको कर्कर कहतेहै क
र्कर पन्ना पुत्रको नाश करताहै और का
न्तिहीन पन्नेको जठर बोलतेहै जठर प-
न्ना धारणेसे दंत देनेवाले जान वरोंका
भय उत्पन्न होताहै १६ ॥
पन्नालालिमत ॥
और जिसके अंदर सबजि माइल सुपेद
जाला नजर आवे सोभिचगा नहीहै औ
र जिसके अंदर बाहिर सबजिमे सुपेदी
कीछाया प्रतीत होवे उसका नाम अभ्र
रकिहै पभी मागने यापहै और जिसमें
काला बिंदुया लंबाईमें दिखाइदेवे सो

भीनिंदहै और जिसमें रेशा होवे सोभी
निंदहै और जिसकी जिलामें फर्क होवे उ
सको गंगाकानाम कहतेहै पभी निंदहै औ
र जिसका अक्षका चमकारा कम होवे उ
सको गमगमा कहतेहै पभी निंदहै ॥
उडदीके दालके समान वर्ण विशिष्ट अ
र्थात् रंग वाला पन्ना या ऐसे मसका
मध होताहै यहांसत प्रकारका अब ब
यान किया गयाहै संपति उनका ब
यान करतेहै ८ ॥
निर्मलत्व गुरुत्व स्निग्धत्व अरजस्कत्व
और सुरंगत्व यही पंच गुण पन्नेके प्र
धान गुणहै यही सब गुणयुक्त पन्ना
सब पापको नाश करताहै ८ ५
रत्नपारखी पण्डित कहतेहै कि धन
धान्यादि जयदा करणेके वास्ते लडा
ईके वक्त जहरके समै रोगके वास्ते अ
थर्ववेदकी विधिके कर्म करणेके समैं
उसी सब काममें पन्नेकी माणि बहु
त अच्छिहै २ ॥
मयूरकी कंठ नीलकण्ठ पंखीका रंग
सबज काच शिवाल टनानेकी पिठ ७

हके बड़े नवीनघास और शिरीषफूल
यही अठ प्रकारकी छाया पन्नेमें दिखला
ई दिती है और यही अठ प्रकारकी छाया
विशिष्ट पन्ना बहुत अच्छा है २१ २२ २३
पन्ना पहला जो पन्ना सिवाइ समान
छायायुक्त बहुत सुंदर रंग और आसके
दोषसे वर्जित पाइत उसको वेमोल और
सबको नहीसका नाश करनेवाला है २४ ।
पन्नेके बेगैर हमारा रत्न टूट जानेसे म
लाई चाहने वाले उसको धारे नहि
खरीदे नहि २५ ॥
जो पन्ना झूठा मालूम होवे उसको
किसी सच्चे पन्नेसे घसना चाहिये तब
झूठा पन्ना टूट जावेगा २६ ॥
जो हमारा एक प्रकारके लोहेकी कलम
की उड़ि जिससे ताल पत्र पर लिखते है
उससे खत देकर चूना लगानेसे झूठा प
न्ना मलिन हो जावेगा और असल पन्ना
बहुत साफ होवेगा २७ ॥
जिस पन्नेका रंग मिलाया हुइ शाकके स
मानहै वह विजातिमें किय गया है २८ ।
रेशमी कपड़ेमें घसनेसे पीतके एसा रं

गवाला फूटा पन्ना अपनि चमक छोड़
देवेगा और सबज़ कांचका बनाया हुया
पन्ना हलका होनेसे अनुसार मालूम हो
जावेगा २९ ॥
और खोटा पन्ना पांच प्रकारका है एक टो
रमाम पथ्थर है इह सावितिमे तोलमे ज्यादा
रंग होता स्याहीलिए जर्द है अंदरका चम
कारा नहि रखता है इसकी पहछान जेइह ए
की कठन है ऐसे देखे तो इसके नीचे चोन
के स्याही लभती है दूसरा मर्गोज़ नाम पथ्थ
र है इसकि सबजिमे चिट तार ऐसे चमक
ते जैसे लेहसनी चमक है इह जातिहीन तो
लमे भारा है तीसरा बिलोर एभी जडाओं
मे पन्ना लभता है सो पन्नेके एवजी के इस
के मोटे है आभाविकता ८ थोड़ी तोलमे
भारा है चौथा शाम देसमे अब नई खान
निकली है सो भी पन्नेके समान लभता है र
ग सबजनेका होता है इस ऊपर जिला नहि आउ
ती आवे तो ठहरती नहि इह तोलमे भारा
इसका पथ्थर भी नर्म है इसके अंदर जाला
मोटा जैसे बिलोरके अंदर होता है और की
मतभी बिलोरके बराबर है ४ पंचम कांचका

बनता है सो भी ऐसा प्रतीत होता है खोटा
जड़ाऊ भूषणमें देखना कठन है और एक
खोटा डुपलका नाम है जो एक पड़दा बिलो
री दूसरा निहायत होले ऐनेका जो पेटका
साफ होवे इह दो पड़दे मध्यरंगदे मसाले
साथ जोड़ते है सो खरे के बराबर हो जाता
है पछान ऐनेका पत्थर चिकन बिलौरका
रेषा तब इनके अंदरकी तर्फ़न जरदे र
खोपन देखे इह डुपलका देखना बड़ी च
तराईका काम है ऐसे देखना कठन है जे
कर जड़ाऊ होवे तब इस प्रकार देखे हाथ
की दो अंगुली साथ पकड़ एक गिठ भर
नेत्रके आगे नेत्रोंके सन्मुख रखे नीचे
अंगूठा देकर तर्जनी अंगुल ऐनेके मध्य
रखे फिर देखे तब डुपलका प्रतीत होता
है और लकीर खेंच नेसे भी प्रतीत हो
ताहै

एक अदद माणिक एक अदद पन्ना जो
कर तोलमें समानहो तो पद्मरागसे प
न्नेका मोल ज्यादा होवेगा ३० ॥
जिस दोषसे पद्मराग अर्थात् माणिकका
मोल थोड़ा होताहै पन्नेका उस दोष हो
नेसे बहुत मोल थोड़ा होवेगा ३१ ॥
इति मरकतका बयान ॥ ॥

52

आगे पंनेके घाटोंके नाम लिखतेहै ॥
तावड़ा १ मेथेला २ लंबीमणि ३ गोलमणि
४ केरकी इहनाम इसकाहै जो तोलमें एक
रत्तीसें घटहोवे ५ गोशवारा ६ तखति ७
ढालना ८ तावीज ९ खोरदारमणि १० खो
लदार ११ इहजारां तराके घाट लिखेहै आ
गे कीमत कहतेहैं प्रथम तावड़ा इह इस
पंनेका नामहै जो पहलदारहोवे इसकी
कीमत तीन रुपए रत्तीसेले तीनसौ रत्ती
तक विकताहै इसकी कीमत इस प्रकार
जादाहै जो इस घाटका विका विलायत
इंगलिस्तानमेंहै आर जो मेथेला नाम
घाटहै सो कछोपड़की सकल होताहै इस
की कीमत चार आने रत्तीसे ले सो रुपए
रत्तीतक विकताहै आर गोलमणि इहघा
ट गोलाकारहै इह दो रुपए रत्तीसें ले पचा
स रुपए रत्तीतक विकताहै आर ऐसेंही
गोसवारा घाट विकताहै इह घाट सरूंकी
सकलहै असली एकसौ रुपए रत्तीतक
इनका भावहै बाकीके सभघाट ऐसेही
विकतेहै आर कोरे पंनेको खड़ नाम करके
वोलतेहै आर जब खानसें निकलताहै

तब गेनेरीका घाट गोल लंबाई ऊपर नि
कलताहै इसके चुगिर्द थोड़ी सपेदी नज़
र आउतीहै और अब नईखान जरमन दे
समें निकलीहै उह पंनाभी सारीमे पुरा
ने पंने जैसा होताहै और टोडा नाम पथ्
र मगीज पथ्थर इनकी कीमत चार आने
रत्तिसे ले आठ आने रत्तीतक विकताहै
इन पथ्थरोंके नग कारीगर खोटे पंने बना
य सच्चे माफक करदेतेहै इनकी परीक्षा
जड़ाऊ भूषणोमें कठनहै ॥

मतपंना लाली ॥

जहां मानक नीलम पैदाहै तहां पुषराज
भी पैदाहै सो प्रभात सूर्यवत आभावा कु
दन सुवर्ण वत पीत छायाहो तब उत्तमहै
रंगचिटा शुद्ध चिमकदारहोवे बिलोर वत
सो सामान्यहै और उत्तम धारे तो धन आयु
कुलवृद्धी होतीहै और उरंग रूथकवीर
छिटक त्रास दोष आदिसागे और तांबड़ा
घाट आठ आने रत्तीसे सात रूपए रत्तीत
क विकताहै और जो चिटा रंगहै उसका
पर्व घाट हीरेके समान बनताहै नाम प
रबी पुषराज बोलतेहै उह खोटा पीलेके

कै नकका बनताहै दूसरा जर्द सवनहला
पथ्थरका बनताहै तीसरा पथ्थरका बन
53 ताहै चौथा नर्म कची पुखराजका भी ब
नताहै जो पर्वे चाटहै सो ॥) आठ आने
कोडीमें दस रुपैय ७) कोडीतक विक
ताहै ॥

१८८। पुष्पराग अर्थात पुखराजका बयान
थोड़ा पीलापन लियेहुये मनोहर थोड़ा
सफेद रंग पत्थरको पुष्पराग अर्थात पु
खराज कहतेहैं वही पुखराज थोड़ा पी
लापन लियेहुये लालरंग होनेसे को
रुण्डक कहतेहैं और थोड़ा लाली मा
यिल पीलारंग और स्वच्छ होनेसे कषा
य कहताहै और थोड़ा सुर्खी मायिल
सफेद रंग और स्निग्ध होनेसे सोमाल
क कहतेहैं और बहुतरंग होनेसे पद्म
राग कहतेहैं और बहुत नीला होनेसे
इन्द्रनील कहतेहैं १।२।३॥
रत्नपारखी पण्डित कहतेहैं पुखराजका
माल और धारणेसे फल लसुनियाके
समानहै खास कर बन्ध्या स्त्री पुखराज
धारणेसे लड़केवाली होतीहै ४॥
शणके पुष्प समान कान्तिविशिष्ट स
ज्जे चिकणा पुखराज बहुत पाक और इ
सी प्रकारका पुखराज धारणेसे अपुत्र
पुत्रवाला होताहै और निर्धनको धन
प्राप्त होताहै ५॥
रत्नपारखी पण्डितोंके मतके अनुसार

थोड़ा पीला रंग छायाविशिष्ट स्वच्छ औ
र मनोहर कान्तिविशिष्ट पुखराज उत्तम
है ६ ॥

जिस प्रकारसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ
र शूद्र चार जातका होतेहैं उसीप्रकार
पुखराजभी चार जातका होताहै और
वही चार प्रकारकी पुखराजमेभी छा
या होतिहै सफेद जरद थोड़ा सफेद
और काला यही चार प्रकारकी
छाया निकलतिहै ७ ॥

जो मनुष्य उत्तम उत्तम छाया विशि
ष्ट और निर्दोष जरद रंग भारी स्नि
ग्ध बहुत साफ गोल और ठण्डा पु
खराज धारणेसे उसकी नामावरी बल
लाव आयु और लक्ष्मी ज्यादा होतिहै ८ ।

जो पुखराज छिटेदार नीवा ऊंचा सा
दा रंग थोड़ा मैला लालमें हलका
कम रंग और रूपक ऐसा पुखराज
बहुत खराब होताहै ९ ॥

इति पुखराजका बयान ॥

मन पंना लालि ॥

और हिमालय देशमें सेलानमें और गे
लीनाम नागा सोभी सेलान देसमेंहै और
ब्रह्माके देसमें और शाम देसमें इन देसों
मे नीलमकी खानहै और सेलानकी उ
त्तम अलसी फूलका सा कंठ वतरंगहै प
रथान छोटा निकलताहै और गेलीकी
गहलका थान बडाहै ब्रह्मादेसका उत्त
मेहै तो थान छोटाहै शामदेसमे पैदाव
फलपर रंग अति कालाहै और जो हिमा
लय देसमें पैदाहै सो सभमें उत्तम रंग
सेग ढंगमें पदा बकुतेहै और जहां को
ला अभ्रक होताहै तहां नीलमकी खान
है जहां नीलम पैदाहै तहां मानक पुख
राजभी पैदाहै नीलमके साथ सपेदी जु
डी रहतीहै कोरे पथ्थरको खड कहतेहै
प्रथम इसको तोड पथ्थर चिटा नीला जु
दाजुदा कतेहै जब नीलेमें त्रास चीरदोष
होवे तो फिर काटतेहै फिर डलीका ढंग
देख जैसा चाट मेथेला धातावडाया तवी।
तया मणि आदि छावना उतेहै जब छुट
डली होवे तो तावडा चाटमें पांच आने र

55

हताहै रेशमीहोवे तो चहारमघा तीन आने
तक रहताहै जो कोईउत्तम डलीहोवे तो
कीमत पांच रुपए तोलेसे बीस रुपए तो
ले मिलतीहै जो पांच तोले अंदर तोल
होवे सो जो ऊपर बीसतोले तक होवे
सो पचास रुपए तोलेसे डेढसे रुपए तो
ला मिलतीहै और एक डली अंबरसर
मे छत्ती तोलेकी दस हजार रुपए को
विकी सो ढाईसे रुपैया तोलाभई औ
र तावडा घाट मजूरी मासीमे बारा आने
रत्तीसे तीन रुपए रत्तीहै जो सो रत्तीसे
ऊपर दो चारसे रत्तीका थानहोवे तो म
जूरी इनामकी तोरपर मिलतीहै और
जो मछेलाया मणि आदि घाट बनान
होवे तो मजूरी आध आना रत्तीसे चार
आने रत्तीतकहै और तवीत घाटकी म
जूरी आठ आने रत्तीसे एक रुपए रत्ती
तक मिलतीहै ॥

इन्द्रनीलया नीलमका बयान ३९२ ॥
सिंहलद्वीपके अन्तरगतमें रावण गंगाके
निकट पद्माकर देशमें इन्द्रनीलया नील
म उत्पन्न होताहै १ ॥
तमाम इन्द्रनीलका रंग नहि समान होता
है कोई कोई नील कमल नीलांबर ब
हुत साफ तलवार भ्रमर कृष्णजीका
शिरीर महादेवजीका कण्ठ मयूरके पु
छका चांद और काले अपरा जिताके
पुष्पके समान है २ ॥
समुद्रका निर्मल जल मयूरका गल नी
लरंग जलका बुदबुदा और कोकिल
का कण्ठ इन्ही सब चीजोंके समान
रंग इन्द्रनीलमें देखा जाताहै इसी प्रका
रका इन्द्रनील सिंहल देशमें पैदा होताहै २।४
जिस प्रकारसे ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य और
शूद्र चारजात होतेहै उसीप्रकार नील।
ममें चारजात होतेहै सफेद माथिल नी
ला लाल माथिल नीला जरद माथिल
नीला काला माथिल नीला यही चा
र जात होताहै ५ ॥
इसी चारजातका इन्द्रनीलमे चारजात।

की छाया है अनुसारसे जानिआ जाता है
ब्राह्मण वर्णकी छाया सफेद है क्षत्रि व-
र्णकी लाल छाया वैश्य वर्णकी जरद छा
या और शूद्र वर्णकी काली छाया क
ह गई है ६ ॥
उत्तम मध्यम और अधम अर्थात पहला
दूसरा और तीसरा दरजेके हिसाबसे जि
स प्रकारसे पद्मराग तीन प्रकारका हो
ता है उसी तरहसे नीलमभी तीन प्र
कारका होता है ७ ॥
जिस इन्द्रनीलके मध्यमें इन्द्र धनुषके
समान आभा निकलती है वह इन्द्रनील
बऊत दुर्लभ है अनायास मिलनेसे बऊ
त मोलको बिकता है ८ ॥
जो इन्द्रनील अपने एकसौ गुणे दूधमें र
हनेसे संपूर्ण दूधको नीलरंग करता है
उसको महानील कहते है ९ ॥
रत्नके मध्य जो नीलरंग वह इन्द्रनीलः
सुरखी मायिल वह पद्मरागः जो सबज
रंग वह पन्ना जो थोड़ा नीलापन लिये
ऊये और थोड़ा लाल वह कषायः जो
पीलापन लियेऊये थोड़ा सादा वह पुख

राज और वोही युवराज लालरंग होनेसे कोरण्डक कहलाताहै ११ ॥ ११ ॥

अब नीलका गुण

गुरुत्व स्निग्धत्व वर्णाढ्यत्व पार्श्ववर्तित्व और रंजकत्व यही पंज प्रकारका गुण गुरू इन्द्रनील श्रेष्ठ है १२ ॥

जो इन्द्रनील कदमे छोटा और तोलमें भरी उसको गुरू कहतेहै गुरू इन्द्रनील अभिलाखा जथादाभी करताहै और जिसके होनेसे सदा ही सुहबत होतिहै उसको स्निग्ध कहतेहै स्निग्ध इन्द्रनील लक्ष्मीकी वृद्धि करताहै १२ ॥

सवेरके सूर्य्यके सामने रखनेसे जिस इन्द्रनीलसे नीलवर्ण शिखो निकले उसको वर्णाढ्य कहतेहै और वर्णाढ्य इन्द्रनील धन और धामकी वृद्धि होतिहै १४ ॥

जिस इन्द्रनीलके एक जगहमें स्फटिक रूपा सोणा अथवा और कोइ चमकनेवाला पदार्थ देखोजाय उसका नाम पार्श्ववर्ती अर्थात् लाजवर्त कहतेहै उसके धारणसे नामावरी होतिहै १५ ॥

जो इन्द्रनील किसी बर्तनमें रखनेसे सारे

वर्तनको कुसंग करदेवे उसका नाम रं
जक है रञ्जक इन्द्रनील दौलत यश औ
र पुत्रोंकी वृद्धि करतेहैं १९ ॥

मतपत्तालालि ।

और गुण कहतेहैं जो नीलम निर्दोष अ
लसी फूल बतरंगहोवे सुंदर घाट विरु
नताहोवे सबजी सुपेदी विना चमकदा
रहोवे सो ऋद्धि सिद्धि धन यश आयु कर
है शस्त्रभय हरकरैहै विशेषकर्कै गर्भ
वतीकी रक्षाकरैहै जबलेनाचाहै तो प्र
थम परीक्षा करलेवे शनिवारको रात
समे पवित्रहो नवीनवस्त्रधार सुगंधी द्र
व्यसाथ नीलम शिरमें बांध सयनकरे
शुभ स्वप्नदेषलेवे अशुभ देष त्यागकरे
प्रथम द्रव्यसाथ नीलम धोय बांधे पू
पदेलेवे ॥

नीलाका दोष

अभ्रक त्रास चित्रक मृदगर्भ अश्मगर्भ
और रोस यही छे प्रकारका दोष इन्द्र
नीलमें होताहै १८ ॥
जिस इन्द्रनीलके ऊपरके हिस्सेमे अभ्रक
के समान छाया मालूम होवे उसको अ

भ्रक कहतेहैं इस प्रकारका इन्द्रनील या
रनेसे आयु और लक्ष्मीका नाश होताहै ९
जिस निशानके अनुसारसे इन्द्रनील टूटा
मालूम होवे उसको त्रास कहतेहैं त्रास दो
षवाला इन्द्रनील देत कटनेवाले जानव
रोंका भय उत्पन्न करताहै जो इन्द्रनील ।
कोई प्रकारका रंग रखताहै उसका नाम
चित्रकः चित्रक दोषवाला इन्द्रनील कुल
का नाश करताहै ९ ॥
जिसके बीचके हिस्सेमें मिटि जैसा रंग मा
लूम होवे उसको मृदगर्भ कहतेहैं मृद्
गर्भ दोषवाला इंद्र नील सिताबी बिमा
री पैदा करताहै २० ॥

पंनालालिमत ॥

दोष कहतेहैं जिसमें लाल रंगकी छिट
क होवे सो धन हानी करैहैं जिसमें धूध
वत छायाहोवे सो शस्त्रभय दायकहै ।
काली छिटक या त्रास दोषहोवे सो अति
भयदायक रोगकरैहै जो पांकर वर्णकी
होवे या सभ दोष प्रतीतहोवे सो सर्वस्व
नाश करैहै आगे खोटी नीलम कहतेहैं
एक नीलीनाम पथ्थरहै सो तोलमें हल

कांगा नीला मैला सवज़ी माइल हृयक र
हित चमक थोड़ी भुक्कै है उसकी कूटीब
नाय वर्ततेहै हमरा खोट काचका बना
य वर्ततेहै ॥
जिस इन्द्रनीलके अन्दर पथरका टुकड़ा
मालूम होवे उसका नाम अश्मगर्भ क
हतेहै अश्मगर्भका नीला जानको मार
डालताहै जिसमे चीनिके समान सफेद
छिटा मालूम होता अर्थात् हृयक होवे
उसको रोत्त करतेहै रोत्त दोषवाला
इन्द्रनील मनुष्य धारे उसको देश छोड़
कर नसना होताहै २१ ॥
निर्दोष गुणवाला इन्द्रनीलमणि जि
सके पास रहे उसकी आयु और यश
जयादा होवेगा २२ ॥
जो मनुष्य निर्दोष इन्द्रनील धारताहै
नारायण उसका प्रसन्न होतेहै और
उसकी आयुर्दा नामावरी लक्ष्मी बुद्धि
ऐश्वर्य्य जयादा होताहै २३ ॥
गुणयुक्त पद्मराग धारणेसे जो फायदा
होताहै गुणयुक्त इन्द्रनील धारणेसे उ
ही फायदा होताहै दोषवाले माणिक

धारणेसे जो नुकसान होताहै उसी प्रका
र दोष दार इन्द्रनील धारणेसे वही नुक
सान होताहै २४ ॥
भारी और सक्त होनेसे इन्द्रनीलको सच्चा
समझना चाहिये अर्थात् काचसे फर
क करना चाहिये २५ ॥
इन्द्रनीलके खानेमेंसे भ्रमर जैसे रंगकी
दीप्ति और छाया विशिष्ट जो मणि उत्पन्न
होतिहै उसको भ्रामर कहतेहैं २६ ॥
जिस इन्द्रनीलमें थोडा सराबी माथिल मा-
लूम होवे उसको टिटिभ कहते है टिटिभ
जातका मणि गर्भिणी स्त्रीका गर्भ बहुत
जलद आरामसे खलास करताहै २७ ॥
महागुणसंपन्न पद्मराग मणिका जो मोल
होताहै गुणसंपन्न इन्द्रनीलकाभी वही
मोल होताहै २८ ॥
इतिनीलाका बयान ॥ ४२४ ।

अब कर्केतनका बयान ।

स्निग्ध निर्दोष सब जगह समान रंग थो
डा पीलारंग तोलमें भारा देखनेमें म
नोहर और त्रास छल्ला गोमा दोष वगैरेसे
शुद्ध कर्केतक बहुत अच्छाहै १ ॥

और जो नीलमता वड़ाछोटकी हो निर्दोष
होवे उसकी कीमत एक रुपैए रत्ती से
सो रुपैए रत्तीतक विकतीहै और मझोला
छोट चार आने रत्तीसे दो रुपैए रत्तीतक
कीमतहै रंग ढंग संग देख कीमत वढ
ती घटतीहै ॥
लहूके समान लाल चन्द्रमाके समान
सफेद मधुके समान थोड़ा जरदरंग आ
मके समान कमल लालरंग अग्निके स
मान उज्वल नीलरंग अथवा बहुत सफेद
कर्कतक पापका नाश करने वालाहै पर
तु खूब नहि बनानेके ऐबसे चमक दे
नेवाला नहिहोता २ ॥
कर्कतक मणि सोनेके पत्रमें मढ़ कर
के गले अथवा हाथमें धारणसे देखने
में बहुत अच्छा मालूम होताहै रोग और
कलि युगके दोषका नाश करताहै और
आयु यश सुखकी वृद्धि करताहै ३ ॥
जो मनुष्य इस प्रकारका बहुगुण संपन्न
वैश्रव कर्कतक जेवरकेवास्ते धारताहै
वह मनुष्य लोक समाजमें पूजित और
बहु लक्ष्मीवान बहुत भार्योंवाला तेजस्वी

और सफाई प्रसन्न रहताहै ४ ॥
कर्केतक मणि जेकर परीक्षा कियाहुया वर्ण विशिष्ट और सूर्यके समान अच्छा प्रकाश पावे तो रत्नपारखी पण्डित मतके अनुसार उसका मोल उसके तोलके समान होवेगा ५ ॥

इति कर्केतकका बयान

अथ पुलकका बयान

हारका देश अर्थात् नर्मदा नदीके किनारेके देशमें उत्पन्न हुये गुञ्जाके मुखके समान कालारंग मधु कमलकी जड़ कस्तूरी अग्नि केलेके गर्भके समान रंगवाला पुलक बहुत अच्छा है १ ॥
शाख सफेद कमल भ्रमर सूर्य्यके समान वर्णविशिष्ट और सूतदार पुलक बहुत पवित्र और मंगल करने वाला है २ ॥
काक घोड़ा गदहा शृगाल लेकड़ बाघा हाड़ गोलाके मुखके समान निशान वाला पुलक मौत करताहै इसीवास्ते पण्डित उसको छोड़नेको कहतेहैं और पल तोलमें पुलकका मोल पंज सौ रुपैया तक हो सकताहै ३ ॥

560

इति पुलकका बयान ॥

अथ रुधिराक्षका बयान

बीज बहूटीके जैसा चिह्नविशिष्ट तो
तेके चोंचके समान लाल रंग और फु
टन्न पुष्पके समान रत्नको रुधिराक्ष
कहते हैं १ ॥

जिस रुधिराक्षके बीचके हिस्सेमें चन्द्र
माके समान पाण्डुवर्ण और आशपाश
निर्दोष इन्द्रनीलके समान नीलरंग व
ही प्रकार रुधिराक्ष धारणेसे पश्वर्यकी
वृद्धि होतिहै और रुधिराक्ष खूब पकने
से सर वज्रके समान वर्णविशिष्टहोताहै २

इति रुधिराक्षका बयान ॥

अथ स्फटिकका बयान

हिमालय पर्वत सिंहलदेश विन्ध्या पर्व
तके जंगल करैबेके पृथ्वीमे बहुत
प्रज्वलित प्रकार प्रकारका स्फटिक
उत्पन्न होताहै १ ॥

हिमालय पर्वतमें पूर्ण मासीके चंद्रमे
समान सफेद रंग सूर्य्यकान्त औरकान्त
नामे दो प्रकारका स्फटिक उत्पन्न होताहै २ ।
जो स्फटिक सूर्य्य किरणके स्पर्शसे अग्नि

देताहै रत्न पारखी पंडित उसको सूर्य
कान्त अर्थात् आतशी शीशा कहतेहैं ३
पौर्णमासीके चांदके किरण स्पर्शसे जो
स्फटिक अमृत देताहै उसको चन्द्रकान्त
कहतेहैं कलियुगमें चन्द्रकान्त स्फटिक
बहुत दुर्लभहै ४ ॥

विन्ध्याचल पर्वत जंगलके करीबकी पृथ्वीमे
जो स्फटिक उत्पन्न होताहै वह अशोक
पुष्पके समान छायायुक्त और अनारदा
नेके समान प्रभाविशिष्ट होताहै परंतु
ऐसा रोशन नहि होताहै ५ ॥

हिमालय देशके मध्यनीलक नामे खा
नमे कुलरंग स्फटिक उत्पन्न होताहै औ
र जिस जगह पद्मराग मणि पैदा होतिहै
आंहांभी स्फटिक प्रकार प्रकारका पै
दा होताहै ६ ॥

जो स्फटिक बहुत साफ और जिससे
साफ पाणी निकले औरु अग्निकी प्र
कार दीप्ती होवे उसको मुक्त मोतीरस
कहतेहैं अरु जैसा जातका स्फटिक ।
लालरंग होनेसे राजवर्त बोला जाताहै
नीलरंग होनेसे उसको राजमय कहते

है और अस्त्रहस्त्रके समान निशान होनेसे
अस्त्रमय उसको कहतेहै ७ ८ ॥
आकाशके समान निर्मल स्फटिकको
नैलाख्य कहतेहै नेत्रके सफेदी सफेद
कमल कमलकी जड शंखके समान
सफेद रंग और कोर रंग होवे और और
रत्नके समान इज्जतके काबिल और
पापका नाश करने वाला नहि होताहै
परंतु कारिगर उस्तादके हाथका बना
या हुया ऊख मोल रखताहै ९ ९

इति स्फटिकका बयान् ॥

अथ भीष्म मणिका बयान ॥
कलिंगदेश मगधदेश मलयगिरि और
हिमालय पर्वतमें भीष्मरत्न उत्पन्न होता
है वे वशनाल उसका कहा जाताहै १ ॥
भीष्ममणि शंख सफेद कमलके समान
सफेद रंग शोणाक पुष्पके समान पीला
रंग और नवे हीरेके समान चमक देने
वालाहै २ ॥
जो मनुष्य निर्दोष भीष्मरत्न सोनेमें
जड करके कंठ अथवा हाथमें धारे व
ह मनुष्य सदाह प्रकार प्रकारकी संप
दा विभागी होताहै ३ ॥
गुणयुक्त भीष्मरत्न धारणेसे सब प्रका
रके विष दोषका नाशक होताहै जेकर
वाकोसेर शरभ एक प्रकारका अठपा
आका हिंसक अर्थात् जानवर हाथी
शेर और जंगलके रहने वाले हिंसक
जानवर उसके पासभी आनहि सकते ४ । ५
भीष्मरत्न धारनेसे सांप चूहा बिच्छूका
विष और जल अग्नि दुशमन और चोरका
भय नहि रहता ६ ॥
सेवार मेघके समान रंग वाला कर्क।

62

श पीलारंग वे चमक मेला और बयरंग भीष्म मणिका पविऽत हरहीस ह्वो इनेको कहतेहै ७ ॥
पविऽतजन देश और समेके भेदसे भीष्म मणिका मोल बराबर कर सकतेहै अर्थात् बहुत हर देशका उत्पन्नहुया भीष्ममणिका ज्यादा और नेरे देशमें पैदाहुया भीष्ममणिका थोड़ा माल कहतेहै ८ ॥
इति भीष्म मणिका बयान ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः अब कहतेहैं सभ
प्रकारके रत्नों कि जाति परीक्षा गुण
अब गुण सभ जानना चाहिये जैसे नि
र्दोष रत्न धारनेसें लाभ होताहै तेसें
दोष वाला रत्न धारना दुःखका कार
णहै इसवास्ते सभ रत्नोंकी परीक्षा य
थार्थ लिखतेहैं प्रथम सभ रत्नोंके ना
म कहतेहैं हीरा १ मोती २ गोमेद ३ मा
णक ४ पन्ना ५ नीलम ६ नीला ७ ल
सनी ८ पुखराज ९ कर्कतक १० तामड़ा
११ नरम १२ स्फटक १३ मूंगा १४ ऐसेंचौ
दा प्रकारके रत्न कहेहैं यतन करके स
भ नोंका संग्रह करना चाहिये सो ग्रंथो
के अनुसार परीक्षा कर लेवे सो इनके
बीच अनेक तराके रंग गुण देखनेसे
दोष कीमत इह संभेद हार अग्नि इह
पीस हीरे ऊपर लेपकर धूपमें रख धोने
से असलिते चमक रूईमें चमक हूर
होतिहै मलूम होतेहैं और जो रत्न मा
ड़े दिनमें जैसे रिक्ता तिथि क्रूरवार मघा
ऐसे दिनमें और क्रूर लग्नमें जैसें लग्न
कास्वामी पापि ग्रहहोवे पापिग्रह देख

ताहोवे ओर माठे योगमें जो रत्न पैदा हो
ताहै सो गुण हीन दोष भागी होताहै क
हतेहैं जो राजा आपने शुभकी इछावाहै
तो परीक्षा करके जो निर्दोष रत्न होवे सो
संग्रह करे और धारण करे और कहते हैं
जो पुरुष रत्न शास्त्रमे निपुण होवे सदा
रत्नोंका ब्यवहार कर्ताहोवे और रत्न बना
ने छेदने जिला देनेमें चतुर होवे सोई र
त्नोंकी परीक्षामें चतुर कहाहै और रत्नों
के गुण दोषके प्रभावसें मनुष्योंके शुभ
अशुभ कार्य होतेहै सो स्यमंतक मणि
का हतांत भागवत दस मस्कंधमे लिखा
है यदु कुलमें अनन्मित्रका पुत्र निघ्न
नाम भया आगे निघ्नके दो पुत्रभए एक
सत्राजित दूसरा प्रसेनहै सो सत्रा जित
ने श्रीसूर्य भगवानकी आराधना करि
तब सूर्यजीने प्रसन्नहो सत्रा जितको स्य
मंतक नाम मणि देदई सोमणि प्रतिदिन
सत्रा जितको अठभार सुवर्ण देतिभई
सो भार परि भाषामें भारका प्रमान देख
लेणा और इसी मणिके प्रभावसें देसम
रमें अनावृष्टी सर्प अग्नि चोर इनका भय

2

हरक भया ऐसें मणि ओंके गुण बहुतहै
और द्विपद चतुष्पद आदिमें जो अति उत्त
म गुण युक्त होवे उसका नाम रत्न कहाहै
और इस ग्रंथमें पत्थर जाति हीरेथी आद
लेकर जो रत्नहै सो लिखतेहै ॥

नवरत्नवहोरा

पंना ४	हीरा ६	मोती २
पुषराज ५	मानक १	मुंगा ३
गोमेद ९	नीलम ७	लहसनी ८

उत्पत्ति हीरेकी दक्षण गोलकुंडेमें और
करना परनामें और मंदराजमें वेना
नदीके बीचसें निकलताहै और हिमा
लय देसमें पैदा होताहै यह खोदकर मि
ट्टि और कंकरके साथ मिला हुआ मि
लताहै प्रथम उह मिट्टि खाननिमपाय
खुला पाणिपाय धोनेसें सवजिमा इ
लन जर आउताहै जो गोला कुंडका हो
ताहै सो बडि चमक बडा थान सभसे

उत्तम होताहै परंतु थोड़ा मिलताहै इ
ह एक रत्तीसे ले पांचसे रत्तीतक मिल
ताहै कोह नूरभी इसी खानकाहै और
हैदरा वादमे नवाबके पांच तोलेका इ
सी खानकाहै परंतु इन दिनोंमें इह खा
न बंदहै और करने परनेका जोहै सोभी
चगाहै परंतु छोटे पांच विश्वेसेले सौ
रत्तितक मिलताहै। और हिमालेका
साहबसे सुनाहै आजतक देखानहि।
और वेनानदिका हीरा निकलता तीनरु
पैय रत्तिसेले पांच रुपैय तक होताहै।
अबजो हीरा नयानिकलाहै सोकेपके
मुलखमे निकलाहै सो वहुत जादा निक
लताहै सो दो हजार रत्ति तक निकलता
है थान वडा पर रंग जरद वहुत होनेसे
मोल कमहै सो पांच विश्वेसे दो रत्तित
कका मोल पांच रुपैय रत्तितक होता
है। और तीन रत्तिसें दस रत्तितक वीसरु
पैयतक मिलताहै और जारां रत्तिसें वी
सरत्तितक पचासया साठ रुपैय तक मि
लताहै और इकी रत्तिसें ले चालि रत्ति
तक मोल एकसौ रत्तिका होताहै इह

3

कीमत कोरे हीरेकी लिखीहै और जब
हीरेको बनाना चाहे तो पर्व बनानेमें
आधातोल घटताहै और तिलकडिहार
बनावे तबतो लच्छे आने रहताहै और
कवल बनानेमें बाकि पांच आने रहता
है मजूरी पर्व बनानेकी ८) रत्ति और
तिल कडीकी २) मजूरी और कवल
बनानेकी मजूरी ५) या २०) रूपेय प
रत्ति ऊपर मजूरी फैलती कोरे हीरे
ऊपरहै कीमत बनेरूप हीरेकी जो को
रा हीरा पांच रत्तिहोगा नवीनके प॰
की खानका तब उसका मोल २०) रु
पेयपरत्तितब सौ रूपेआ कीमत सौ
मजूरीलगी हीरा सारीमें रहगया उ
उ रत्तीखर्च २०) भया तब एकरत्ति १
३३) कीऊई त्यारभए हीरेके घाटोंके
नाम पर्वके ऊतवी १ अठमास २ छे
मास ३ चौरस ४ तुलानि अठमास
५ गिर्दा ६ पिआला ७ सरू ८ सिंहा
डा ९ त्रिकोन १० बदामि ११ पेस १२ ह
केपके हीरेका वृत्तांतहै अब उरा
ने हीरेके पर्वका विस्तार कहतेहै

जो कुतवी चाटका होवेगा तब कीमत
(२५) रत्तिहोगी जब दोरत्ति होगा तब
कीमत २०) रत्तिहोगी ऐसे तोल सवाई
बढेगा मोल इतना बढेगा कुतवीका ऐसे
और चाट पालेनक ७ चाटकी कीमत ५
रत्ति कमोवेसी रहतीहै बाकि ८ चाट
एकरत्ति २) चाटा बाटा रहताहै. आगे
परीक्षा कहतेहै हीरेके खोटे पांचहै
जो भ्रम रखतेहै अबल कांसला दूसरा
तुरमुलि ३ बिलोर ४ काच ५ पुखराज
पिरा जो कांसला उसकी सकल हीरे
से सखतिमे नरम तोलमे होला और
हीरेके अंदरके पडदेमे जो चमकाराहै
सो उसमें चटहै यह देखनेसे मलूम होता
है और कहतेहै जो हरहीरेके समानहै
और तुरमुलिहै सो जर्दि माइलमेलि कु
नेहै नर्मजादाहै और इसका दामा कूणा
है अर्थात् इसकि रेखामे चमकनहि.
यह जड़ाऊ हीरेकी सकल रखेगा ऐसें
तुरमुलि पत्थर देखनेसे मलूम होजा-
ताहै जिगरि इसकापाणि अच्छाहै और
बिलोर होवेगा तब चिकना ८ तोल

तेजीमें समतए घट होगा एक बिलौर
देखनेमें उसबीच एक धरकी सकल
लालिया नहीं माइल दिखाइदेती सो
हीरेमें नहिंहै और ऐसेभी इनकी पछा
नहै जो अपनि जातको हीरा काटनहि
सकता और हीनजाति होगा सो काट
सक्ताहै तब असल हीरेको पकड उस
के ऊपर लकीर खिचे जो रखा पड जावे
तबेरखा देख सम तराका खोटाए वसा
लूमहो जावेगा देखनेमें जेवाहरातमें
रंग संग टंग अंग इहचार होना चाहिए
और कोरे हीरेको अष्टाक करतेहै औ
र जो ऊतबी चाट लिखोहै सो लेबा
ईके ऊपर चौरस होताहै जेकर उसका
एक कोणा मारागयाहोवे तो सर्वस्व
नास करैहै नाम कोना भंग कहाहै

आगे पन्ना कहतेहै असलि उहहै जो
रंग धानकीसाख माफक जरदि माइल
सब जि होवे पुरातन इसीको कहतेहै अ
वउसमें चमक चिकनाई पथ्थर नरम
तोलमें हलका इह उत्तम जातिहै जो
मध्यमहोगा उसमें जाला सुपेद सबजि
माइल अंदर दिखाइ देताहै और इदजेका
उसके अंदर बाहिर सबजिमें सुपेदिकी
छाया प्रतीत होतीहै इसको अबरकि
कहतेहै त्यागने जोग्यहै और दो किस
मकाहै एक सबज दूसरा काहीरंगहै
काहीकी मतमें कमहै और इसमें पां
चएवहै अबरकि १ जाला २ कालाबि
दा ३ दुरंगी ४ गांफा ५ अबरकि जाला
लिखाहै और काला २ जोहै इस ऊपर
बिंदया लंबा दिखाई देताहै जो दुरंगी
है सो उसमे दोरंग प्रतीत होतेहै ४
जो गांफाहै उसमें जिलाद हलनहि
आउती और छे मो गुम गुमा नामहै
जो चमकमें गुम रहताहै और पन्ना
चार किसमकाहै एक पुरानी खान
का दूसरा नइखानका तीसरा नईखा

नेका पुरानेके माफक चौथा मिसर देस
का इसकी किसमके पांचछोटे जो पंने
के माफक दिखाई देतेहै प्रथम टोडा
पत्थरहै तोलमे अधिक सावतीमे जा
दारंग होता स्याही माइल जरदहै औ
रइसकी चमक थोडी रूखा जडाऊमें देख
ना कठिनहै इह देखनेसे इसके चारो
तर्फ नीचे स्याही देख पडतीहै १ दूसरा
मरगज इसकी पछान इसकी सवजी
मे सुपेद तारे जैसे रेतमे अवरक चम
कताहै जातीहीन तोलमे भाराहै २
तीसरा बिलोर इह जडाओमे पन्ना
प्रतीत होताहै इसकी पछान पंनेके
पत्थरीकहै बिलोरके पत्थमोटेहै औ
र आभा थोडिहै चिकना ८ थोडी तो
लमे भाराहै ३ चौथा शामदेसमे अब
नईखान निकलीहै सोभी पंनेके मा
फक रंग सबज काही जिलाकम हो
तिहै जेकर होवे तो वहूरतीनहि तो
लमे भारा पत्थर नरमहै इसके अंदर
जाला पंनेसे मोटा बिलोरके माफ
क जालाकीमत बराबरहै। और पं

बम काचका माफक पंनेके बनातेहै
इसका हाल देखनेसे मलूम होताहै।
आगे पंनेके चार कहतेहै तावडा १ म
छेला २ लबीमणि ३ गोलमणि ४ के
रकी इह नाम इसकाहै जो तोलमे प
क रत्तीसे कमती होवे ५ गोशवारा ६
नखति ७ छोलना ८ तावीज ९ मणि
खोरदार १० खोलदार ११ इहजारां तरह
के लिखेहै। और एक छोटा उपलका
नामहै जो एक पड़दा बिलोरि हसरा
निहायत कमति पंनेका जोपटेका सा
फहोवे इनेके मध्य रंगदे मसालेसे जो
डुतेहै एसा बनताहै जोखिरके माफक
होजाताहै इसकीपछान पंनेका पथ्थ
र चिकना बिलोरका रूखाहोना इसके
अन्दरके पडदेका रूखापन देख नव प्रती
नहोताहै। उसका देखना वकत कठ
नहै और जो जडाउ होगा सो एक गि
ठभर आंखके आगे नेजीके सामने र
खतजेसी अंगुल पंनेके ऊपर रखदे
खनेसे उपलका प्रतीतहो जाताहै।
आगे पंनेकी कीमत कहतेहै कीमत

तांबेडकी तांबड़ा इसका नामहै जो पहा
लूदार होवे इसकी कीमत तीन रुपैए
रत्तीसेले तीनसौ रुपैए रत्तितकहै इस
की कीमत ऐसेज्यादाहै जो इसकाबका
विलायत इंगलिस्तानमें जाताहै और
जो मथैलाहै सो कच्चा पड़के जाद होता
है कीमत चारआने रत्तीसे सोरुपैए र
त्तीतकहै और कीमत गोलमणीकी इ
हगोलीका आकारहै इह दोरुपैए र
त्तीसेले पचास रुपैए रत्तीतकहै और
ऐसाही गोसवारेका भाउहै इसकाचा
ट सहूकी न्याईहै असलि सौरुपैए रत्ति
तक इनकाभाउहै और भी ऐसे समझ
ना चाहिए जब पंना कोराहोवे उसका
खिउकहतेहै इहगनेरीके चाटकी नि
कलीहै कब इसके गिर्द सुपेदीभि र
हतीहै ऐसी अब नईखान जरमनद
सम निकलीहै सारीमें छरानेके मा
फक होताहै। औरटाउआचाट मजि
चाट खोटाहै कीमत चारआनि र
त्तिसे आठ आने रत्ती तकहै

8

ओर मानक कहते हैं इह बलख के देसमें
आभा नगरके पास पेशुनाम जंगलमें
माणक पैदा होताहै ओर सिली नदी
समें पैदाहै इह होस्यानका उतमहै ओ
र शाम देसमें ओर मशाकत देसमें ओ
र काबलकी तर्फमें ओर हिमाले देस
में माणक पैदा होतेहै जो एक रतिके
अंदर होगा तब नाम चूनी जो रतीसें
जादाहोगा तब नाम माणिकहै जब
खानसें निकलताहै तो कंकर मिटि
साथ मिलताहै इह धोनेसें लाल कं
कर मिलताहै इस कोरको भीखिर क
हतेहै ओर उतमरंग इहहै जो बढी
अनारके दाणे जैसा रंग होवे इसका ना
म रमानिहै ओर जो लालीमें होला ऊ
पर स्याही लिये नाम विनौस बोलतेहै
ओर तीसरा नाम गुल अनार इह लालि
कम जरदी मारलहै चोथा नाम रंगा
इसमें लालि कम सुपेदी जादा है इह
चार रंगहै ओर एक कहतेहै जिस
ऊपर सुपेदी छाई होवे उसको तूयु
क बोलतेहै जिसमें कालाबिंदु होवे

सोभि पेवदारहै और जटउा नामहै इस
मे चमक नहि तेज़ीवंदहै और डरंगा जो
एक तर्फ़ हौला एकतरफ गटरांहै जो
करकर दोषवालाहै उसकानाम बुरड
री दारहै जिसमे लंबी लकीरहोवे उ
सको चीर दोष कहतेहै आगे माणक
के खोटे लिखतेहै जो माणक जैसे
दिखाई देतेहै एक संगली नाम पत्थर
दूसरा नरम नाम पत्थरहै एभी माण
ककी खानसे पैदाहै जो संगलीहै उ
सकारंग किरमचि कांति थोड़ी सख
तीमें बराबरीसें कुछ घटहै शुभहै
और चमकारा नहीहै और जो नरम
पत्थरहै सो सखतीमे बहुत घटहै तो
लमेहौला इसकी खराबी स्याहीलिए
जर्दहै । आगे कीमत कहतेहै जो पाव
विस्व वूंनीहोगी तब एक आने रतीसे
पांच रुपए रतीतक विकतीहै और
पाव विस्वेसें दस विस्वातक तीनआने
रतीसे दस रुपए रतीतकहै और दस
विस्वेसें पंदरां विस्वातक कीमत पांच
आने रतीसें बारां रुपए रतीतकहै ए

दंगविश्वेसे एकरत्तीतक आठ आने रत्तीसे
एदंश रुपैए रत्तीतकहै ३६ तोमथैले ला
टकी कीमत लिखीहै आगे ताबड़ा ला
टकी लिखतेहै एक रत्ती तोलता बड़ा
वांश आने रत्तीसेले पचास रुपैए रत्तीत
क बिकताहै जो मवारत्ती होगा सो ए
करुपैए रत्तीसेले पैंठ रुपैए रत्तीतकहै
इससेभी कुछ अधिक कीमत होतिहै
एसे क्रमसे तोलसवाई मोल हुना ब
ढताहै और कहतेहै एक दक्षण देस
का बादसाह तानेसाह नाम करके था
उसके पास एक माणक उत्तमथा सो
जंगकरके दिल्लिवाले साहजहां बादसा
हने जंगकरके लेलिया उह माणक दि
लीमें आया तब जुआहरिओंसे इसका
३६ तोलमेंकेताहै सो मुदरीमें जड़ाकु
आथा उसकोदेख रत्न पारखी कोमके
श्रीमाल राम मोति दास जीनेकहा ३६
तोलमें चोवीरत्तीहै तब उकोउकर तो
लातो पांच विस्वेकम चोवी रत्तीहुआ
तब बात साहने हुकम देकहा किआज
से पांच विस्वेकम टककर दो को कि

हमारा माणक सूरत बीबी रखी रहेगा तु
म समटंक पीछे पांच विश्वे तोल कमती
करो सो आजतक यही प्रमाने है इस मा
णकमे इह सिफतथी जो मोतिओंके
थाल बीच रखनेसे अपना रंग दिखाता
था इस वखत उसकी कीमत एक करो
ड रुपैआथी तब बादसाहने प्रसंन हो उ
स माणिकका नाम छत्र धारी रखा

अव आगे मोतिका वृतांत कहतेहै मोति
प्रसिद्ध सिपकाहै जो वनेनमे आउताहै ।

और हाथी मछी सूर सर्प संख वांस बद
ल ऐसे आठ प्रकारके लिखेहै परंतु सी
पके मोतिका विस्तार लिखतेहै ३२ स
मुद्रकी सात खाडिओमे पैदाहै प्रथम १
मगलद्वीपी काहलमे २ बसरा ३ सेला
न ४ मसकत ५ विरहन ६ जदा ७ हार
का खाडिमे ३२ सात जागामे पैदाहै स
भमे अवलका हलका मोतिहै ३ हगोल
विकनाई चमकमे तेज ऐसा जिसमे मु
खदिखाई देताहै रंग शुद्ध सुपेदहै और ब
सरेका मोति सफेद चमक थोडिहै और
सेलानका मोति जर्दि माइलहै इसको म
गज बोलतेहै और मसकतका मोति
स्मानि नाम स्याही माइलहै विरहनका
मोति सुंदर सुपेद चमक थोडिहै और
जेदेका मोति बाबलिआ नाम लंबाई कु
पर होताहै चमकारा रहतेहै और हारिका
खाडिमे होला स्याही माइल होताहै
आगे ऐव कहतेहै गरज दोष इसमाति
दफुटकि दिखाई देताहै हसरा लहर

दोष इसमें बहुत बारीक लकीर दिखाई
देतिहै तीसरा गोडीनाम दोषहै जो वो
तिर्छी दूधी लकीर दिखाई देतीहै चौथा
दोषा जोगाढेसा निंद सीतलाकि इह
सीतल जो अंदर पड जातिहै सो दिखा
ई देतिहै पंचम कागाबासी इह काले
रंगका मोति निहायत बुराहै छे माता
मेसरी इह तांबेरंगकी छाया प्रतीत हो
तिहै सप्तम चिब्बा दोषहै जो एकतर्फ
दबाहुआ दूसरा ऊंचा होताहै इह सातप्र
व लिखेहै आगे चार कहतेहै इह बीस
प्रकारकेहै पाया १ बहला २

और मोतिजो उत्तम चार रत्तीका दाएगा
होगा सो उसकी कीमत २०) रुपैए वोत
क होतीहै सो चार रत्तीपे ९ वोमई एक
दाणेका ४५०) रुपैआ कीमत है जो रंग
षेत चमक चिकनाई गुलाई ठीकठीक
होवे तब कीमत दार होताहै और ब्राह्म
ण आदि चार वर्णकी छाया मोतीमे हो
तीहै इसी कारण टजेमाफक की कीमत घ
टती जातीहै और जो मोति प्याति अरम
गज नामहै सो १) वोसे १) रुपैए वोतक
मिल सकताहै इह कीमत नवीनकी है
जेकर पुरातन होवे उसकी कीमत कम
होजातीहै और अबल मोती ऊपर सात
पड़दे होतेहै और मगज ऊपर पांच अन्नी
पैतीन् पड़देथा होहोतेहै जो मोतिई सब
गोलकेसाथ मिलायरखे तो चमक छो
डतानहि और मोति जादा गरमीसे जादा
वतरसे सतावी विगड़ताहै

आगे नीलमका वर्णन कर्तेहैं इसकीखांन
अवल सेलानमें पैदाहै और उसी देसमें
गेली नाम जागामें खांनहै और ब्रह्माके
देसमें खांनहै और शांम देसमें पैदाहै
और हिमालय देसमें पैदाहै और कह
तेहैं सेलांन देसकी नीलम अति उत्तम
जैसे अलसीका फूल या मोरकेगले व
नरंग होताहै और थांन छोटा निकलता
है और गेलीका रंगमें हलका थांन जा
दाहै और ब्रह्माके देसका अति उत्तमहै
रंग अलसीफूल वतहै पर थोड़ा निक·
लताहै और शांमदेसकी बहुत निकल
ती सो रंगका काला होताहै और जो हि
मालय देसकाहै सो सबसे उत्तम रंग स
ग अंगमेंहै और जहां कोला अभ्रक हो
ताहै तहां नीलमकी खांन अकसर होती
है और जहां इह खांनहै तहां मानक पुख
राजभी पैदा होताहै और नीलाजोहै उ
सके साथ खपरी लगीहुई रहतीहै को
रको खोद कहतेहैं जब इसको बनाउतेहैं
तो प्रथम डली तोडतेहैं तो पिटे आई आ
दि हरकर रंग वाला जुदा कर्तेहैं और उस

मेंभी ग्रास चीर दोष आदि होवे तो कट जाते
है फिर उसडलीका ढंग देखकर जैसा घा
ट वनेमछेलाया तावडा पाना वीनया म
णि आदि घाट वना उते है जो छुट टुकडी
होवेतो तावडा चार पांच आने रहता है
जो टढी होवे तो चहार या तीन आनि त
क रहता है जो टुगडी उतम रंग होवे सो
पांच रुपए तोलेसें वीस रुपए तोले त
क कीमत होती है जो तोलमे पांच तो
लेके अंदर होवे और जो पांच तोलेसे ऊ
पर वीस तोलेतक होवे सो पचास रुप
एसें डेढसे रुपए तक तोलेकी कीमत है
और एक डली अकवरसरमें छसो तोलेकी
दस हजार रुपएको विकी है सो ढाईसे
रुपआ एक तोलेकी कीमत भई और ता
वडे घाटकी मजूरी बारा आने रतीसें ती
न रुपए रतीतक सारीमे लगती है और
जो सोर तीसे ऊपर दो वारेस रतीतक घा
न होवे तो मजूरी अधकउनामके तोरप
र मिलती है और जो मछेलाया मणि आ
दि घाट होवे तो मजूरी आधआने रतीसें
चार आने रतीतक होती है और नवीन या

टकी मजूरी आठ आने रत्तीसे एक रुपैया रत्ती
तक होतेहै और नावड़ा घाटकी कीमत एक
रुपैया रत्तीसे सौ रुपैया रत्तीतक विकताहै
और मथैला चार आने रत्तीसे दो रुपैया रत्ती
तक विकताहै ऐसे रंग संग ढंग देषकी
मत घटती बढती रहतीहै आगे गुण क
हतेहै जो नीलम असली फूलवत रंगकी
होवे निर्दोष होवे कोई दागकी हो पादरु
स्तहोवे कोणोंसे खंडत नाहोवे रंग सबजी
सुपेदी विनाहोवे चमक दारहोवे ऐसो धा
रनेसे ऋद्धि सिद्धी रहतीहै धन आयुष
सबृद्धी करैहै शस्त्रभय दूरहोताहै गर्भ व
तीको रक्षा करैहै और जब खरीद करनी
होवे तो प्रथम परीक्षा करलेवे सो कह
तेहै शनी वारके दिन पवित्रहो नीलमको
ले प्रथम दूधके साथ धो कर शनिश्चरका
ध्यानकर नवीन वस्त्रधार सुगंधी द्रव्य पा
सरख रातको शिरके साथ बांध सयनक
रे शुभ अशुभ जैसा स्वमहोवे तैसाकरै
ऐसा विचार संग्रहकर्ता जोग्यहै आगे दो
ष कहतेहै जिसमे लालीकी छिटकहो
वे सो धन हर करैहै और जिसमें दूधवत

छायाहोवे सो शस्त्र भयदायक है और का-
ली छिटक याजाम होयहोवे सो अति भ-
यदायक है और जो प्राकर वर्णकी होवे
सब दोष सहित होवे सो सर्वस्व नाशक
है और नीलमका खोट नीली नाम पथ्थ
र है सो तोलमे हलका रंग नीला मैला स
बजी माइल हयक रहित है चमक थोड़ी
शुष्क है इसराका चका खोटा बनता है
आगे पुखराज कहते है जहां मानक नील
मकी खानै है तहां पुखराजभी पैदा होता है
इसका बृहस्पति देवता है पछान प्रभातके
सूर्यवत आभाया कुंदन स्वर्ण वतरंग सो
पीत छाया उत्तम है और चिटारंग शुद्ध च
मकदार बिलौरवत होता है यह सामान्य
है और दोषसब नीलमके समान है और
विप्र आदि चार वर्णकी छाया होती है उत्त
म पुखराज धारनेसे कुल आयुधन वृद्धी
होती है यह दु रंगी छिटक हयक जास पे
से दोषहोवे सो त्यागे यह दुखका कारण है
चाटवज्र आदि एक जैसे है सो तोलउ चार
आठ आने रत्तीसे सात हवेय रत्तीतक की
मत है जो चिटा पुखराज है इसका एक

छाट पर्वनाम हीरेके समान बनताहै सो
नाम पर्व पुखराज बोलतेहै इसका खोटा
करके तकका बनता जो जर्द होवे हूसरा
सुनहला पभी जर्द होताहै तीसरा टोडा
इसको विहुजभी कहतेहै चौथा नाम
कच्ची पुखराजका भी खोटा बनताहै जो
पर्वछाटहोगा सो आठ आने कोडीसे
दस रुपैय कोडी तक की मतहै ॥

आगे लसनीका वर्णन करतेहै इह ब्रह्माके
देसमें पैदाहै और सेलानमें पैदाहै अक
सर पुखराजके साथ पैदाहै इसके चार
खेत होतेहै कणक खेत इसमे सबजी
रंग सबजी माइल अंदर चमकारा होता
है दूसरा शांभाखेत इह जर्दि माइल का
लाहै तीसरा धूमाखेत इसमे धुएकारंग
दिखाई देताहै चौथा हाडिआखेत इसमें
सपेदी छाईहुई चमकारा वदहै उत्तम उ
हहै जिसमे छाई सूतहोवे सो सुपेदरंग
की लकीर होतिहै जहां अधिकथन से
ग्रह होगा तहां निवास करेगी और दो
या तेढ या एक सूतभी होताहै सो अति
उत्तम छाई सूत कणक खेत कहाहै आ
गे गोमेद कहतेहै इह हिमालय देसमें
और सिंध नदीमें और अबि देसमें खा
नहै इसकारंग चारतराकाहै जर्दि सुर
खीमिलिहुई स्याहीकी छाया चमका
थोड़ी तोल हलका पत्थर नर्म होताहै
इसमें एक और दूसरा रंग सुपेद सुरखी
माइल होताहै तीसरा रंग स्याही सुर
खी जर्दि माइल होताहै चौथा नीला सा

रल होताहै एही विप्र आदी चार वर्ण क
हेहै इसका खोटाका चकाचनताहै इस
के अदरका चमकारा बंदहै कीमत या
टटेघ ॥ आनेकोडीसें २) रूपेए कोडी
बिकताहै इसमें एक ऐब अइजाला
दिखाई देताहै सो हानी कारहै और या
स दोषवाला भी लोग असलकी परी
खा माणसे पहचानलेवे और उसी समे
कानलगा एसानकेसा सब्द सने सब्द
नमें आउताहै और नीलमका सब्द इ
समें बहुत सावताहै जैसें हाथीका चि
काड़है और हीरेकी अवाज ऐसे जैसें
बड़े जोरकी हवा बंद होकर चलतीहै
सन सन सब्द होताहै ॥

जो हीरा पाणिसें पैदा रंग सबज खास
ऊपर पाणि बूंद वत चमक तोलमें १
तोला कीमत १०००००००)
एक क्रोडहै

आगे मूंगा कहतेहै इहतार समुद्रमें पैदा
और पश्चिम देसमे तूनस सहरके पास द
रिआओके बीच पैदाहै और फिरंगस्तान
केपास कसटाननग्रकेपास दरिआओके
बीच पैदाहै और टाउफ्रूमज सहरकेपास
पैदाहै और हिमालयदेसमान सरोवर आ
दिमेभी पैदाहै इह पाणिबीच जढपैदाहो
साखा निकलतीहै सो चाररंगकी होति
है अबल सुर्ख दूसरी गुलाबी तीसरी
स्याह जिस कोइकी फूल बहुत बोलतेहै
इसकी तसबी बनाय म्लेछ पास रखतेहै
चोथारंग सुपेद पैदी ब्राह्मण आदिचार
वर्णका भेद कहाहै और जो सुर्खहै सो
अनार फूलवत रंगहै और छिटक दोषहो
वे जो और रंगकी छिटकवाला या त्रास
दोषवाला मागे और इसकी पछान इह
मूंगा जढमे पैदाहै पर इह आग ऊपर
रखनेसे धूआं नहि उठता दूसरा अककी
लकडीकी सानपर या अबकीया सिंब
लकी लकडीकी सानपर पथरको जि
ला आउतीहै वैसे मूंगेको भीउसी ल
कडीकी सानपर जिला आउतीहै इसी

कारण जोरत्नवीच सामल है और इसकी
जड औषधिओं वीच वर्तते है और इसके
धारनेसें रुधिरदोष आदीरोग दूर होते है
और खोटाभी बनता है सो हाथीदांतका
खोतालमें दरुस्त रहता और जिलाभि
होतीहै और लकडीका या सखका घा
लाखका खोटा तोलमें घट रहताहै औ
र कीमत आठ आने तोलेसें पचास रुपे
ए तोलेतक विकताहै इसमें तोल औ
र मोल दोनो वढते चले जातेहै और
रंग ढंग दोष आदि सभ देखनेसें प्रतीत
होतेहै खोटा सानपर सनेसें मलूम
होताहै ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॐअथ रत्न सामान्यगु।
णः जोकोई धनी देशान्तरविषे धनले जाने
की इच्छाकरे तद सुवर्ण चांदीको उठाकर
16 नेणमे बडे भारके कारण बहुत भार वाहनादि
जोडनेमे प्रयत्न बहुतहै और एक हीरका
दि रत्न तिन्हां २ पैसोंदा लेकरनावे और ति
सजगा वेच लेवे तां सुगमतासे धन चला
गिआ इस करके भी रत्न संग्रह अवश्य क
रणा चाहिए १ और निर्दोष रत्नोंका संग्र
ह जिस जगा होवे उसजगा धन संतानकी
वृद्धि हुंदीहै अर संततिमे सुलक्षणता भी
हुंदीहै २ अर नवरत्नोंका बाहु भूषण
नक्षत्रमाला आदिभूषण धारणेते ग्रहदो
षादि निवृत्ति हुंदीहै ३ और शुभ नीलमा
दि रत्नोंको मध्या··· रत्नाकर शयन कर
ण वालेको दुःस्वप्न नहि आउंदा किन्तु
सुस्वप्न हि हुंदेहै ४ और बहुत धनकी
रक्षामे बहुत पुरुष बलवान प्रयुक्त हो
णतां रक्षसकेहै जेकर रत्न संग्रह करे
तद बहुत धनको एक भी पुरुष रक्ष
सक्ताहै ५ इसमे पंच तंत्र विषे एक
गाथाहै कोई धनी देशान्तरमे जाकर

वस्तु जात वेचकर चार किरोड़ रुपैया करे
कीते परन्तु अपने देशको आनेमें उपा
य कोई उनको नहि मिलया चार रत्न लेकर
अपने अपने देहमें रखकर वोरेहि यनी
ल्याउदेहोय ॥
शीसभूषणस्त्रीकेवक हिंदी मुवाफ १
वोटी २ मांगटिका ३ वोर ४ फूल ५ मा
ङनी ६ अर्धचंद्रन ७ झूमर ८ वेनावदी
टाउनी ९ वहीआं १० विंदी ११ पुरुषशीस
भूषण ० जिगा १ सिर्पेच २ कलगी ३
फतेपेट ४ तोड़ावांद ५ तुर्री ६ गोशवा
रा जड़ाऊपटी ७ कर्णभूषण कर्णफूल १
ढेडी २ मगरचौदानी ३ तरकी ४ कुंडल ९
वालिआपत्ते ६ वाले ७ विजली ८ वुंदे ९
झुमके १० लटके ११ कांन १२ इसमें सभभू
षणलगेरूप विनाछेद कंनवीचकसेरूप
रहते वाले १ वलीक २ छुटकी ३ लटक
न ४ भलका ५ लौंग ६ वेसर ७ मोगली ८
कंनपुरुषवाले १ वाला २ मुगरु ३ मघरे ४
मुर्कि ५ कंठभूषणस्त्रीके० माला १ महे
ल २ मुगनि ३ सतलड़ा ४ कंठा ५ चौप
कलि ६ गुलूबंद ७ चंद्रहार ८ चंद्रकला ९

फूलमाला ९ वथी ११ चौंकीनाइत
१२ हमीरी १३

17

ॐ
१

आगेमोतिओंकाब्यवहारखरीदफरोकनकालिखते
हैं इहववेआदिहिंदुस्तानमे चोकेहिसावसेंखरीदफ
रोकनहोतेहै इसकाहिसावआगेलिखतेहै सोनग
सेकेदेखनेसेंमलूमहोताहै सो ३३· टकेकेहिसा
वसेभागदेकर चौकीफलावटहोतिहै और एक
चौके ९· डकडेहोतेहै औरएकडकडेकेसोलों
१८ वदामहोतेहै और· ३३· टकेजोहै उनकीफला
वटएकटंककया २४ रतीऊपरआडतीहै सो एक
रतीके पौनेचौदां टकेहुए सो एकरतीकादाणा
एकटंकऊपर पोनेचोदां चो आई एकरतीभरके
दाणेपै एकटंककेचोवीदाणेभए सोएकटंककया
चौवीदाणेपै पोनेचोदांचोफेलिसो एकरतीके
एकदाणेऊपर आधीचो सवासातडकडेंतीनव
दांम इसतरहसें चोकाहिसावहोताहै ॥

ॐ ठंक १		चौ	डकडे	वदाम
२ दाणा १…		।	८	००
चौ ।)८				
2 दारणाचडता	५५५ दाणा	चौ· ।)	डकडे ८	वदाम)।।।
चडता	दाणा ५५८	चौ· ।)	डकडे ८	वदाम)१।।
चडता	दाणा ५५७	।	८	२

वरना	दाणा	चडो	डकडे	वदाम
एकट कपर १	चौ ३३०	००	००	००
२	चौ· १६५	००	००	००
३	चौ· ११०	००	००	००
४	चौ· ८२॥	००	००	००
५	चौ· ६६	००	००	००
६	चौ· ५५	००	००	००
७	चौ· ४७।	००	१४।	॥
८	चौ· ४१।	००	००	००
९	चौ· ३६॥	००	१८॥	२॥
१०	चौ· ३३	००	००	००
११	चौ· ३०	००	००	००
१२	चौ· २७॥	००	००	००
१३	चौ· २५।	००	१३।	३॥
१४	चौ· २३॥	००	७	२
१५	चौ· २२	००	००	००

ॐ.
३

3

दारणा १ टंककाच उना	चौ.	ड्कडे	बदाम
१६	२०।।	१२।।	००
१७	१९।	१६	२।।
१८	१८।	८।	२।
१९	१७।	११।।	१।।
२०	१६।।	००	००
२१	१५।।	२१।	२।।
२२	१५	००	००
२३	१४।	९।।।	।।
२४	१३।।।	००	००
२५	१३	२०	००
२६	१२।।	१९।।	००
२७	१२	२२।	००
२८	११।।।	३।।	१
२९	११।	१२।।।	३
३०	११	००	००
३१	१०।।	१४।।	००

दाणा	चो॰	डुकडे	वदाम
३२	९।	६।	००
३३	९॰	००	००
३४	९।।	२॰।।	२।।
३५	९।	१७।।।	१।।।
३६	९	१६।।	२।।
३७	८।।।	१६।।।	२।
३८	८।।	१८।	२।।।
३९	८।	२।	३।
४॰	८।	००	००
४१	८	४।।।	२
४२	७।।।	१॰।।	३।।
४३	७।।	१७।	१
४४	७।।	००	००
४५	७।	८।	१।
४६	७	११।	२
४७	७	२	२

	दाणा	चौ॰	कुकडे	वदाम
ॐ॰	४८	६।।।	१२।।	००
४	४९	६।।	१३।।	००
५	५॰	६।।	१॰	००
	५१	६।	२२	१
	५२	६।	५।।	२
	५३	६	२२।।	२
	५४	६	११	२
	५५	६	००	००
	५६	५।।।	१४।	।।
	५७	५।।।	३।।।	३।
	५८	५।।	१८।।।	३।।
	५९	५।।	८।	३।।
	६॰	५।।	००	००
	६१	५।	१६	००
	६२	५।	७।	००

दाणा·	चौ·	कुकडे	वदाम·
६३	५	२३।।।	१
६४	५	१५।।	२
६५	५	७।।	३
६६	५	००	००
६७	४।।।	१७।।	।।
६८	४।।।	९।	।।।
६९	४।।।	३।	००
७०	४।।	२१।	३
७१	४।।	१४।।।	।।।
७२	४।।	८।	२।
७३	४।।	२	१
७४	४।	२०।।।	३।
७५	४।	१५	००
७६	४।	९	३।।
७७	४।	३।।	२।।
७८	४।	२३।।	२।

ॐ

५

दाणा·	चौ·	डुकडे·	बदाम
७९	४	१७।।	३।।
८०	४	१२।।	००
८१	४	७।	२।।
८२	४	२।	३
८३	३।।।	२२।	१।
८४	३।।।	१७।।।	१।।।
८५	३।।।	१३।	००
८६	३।।।	८।।	३।।
८७	३।।।	४।	१
८८	३।।।	००	००
८९	३।।	२१।	००
९०	३।।	१६।।	२।।
९१	३।।	१२।।	२।
९२	३।।	८।।	३
९३	३।।	४।।	१।।
९४	३।।	१	१
९५	३।	२२।	२
९६	३।	१८।।।	००
९७	३।	१५	३।
९८	३।	११।।।	००
९९	३।	८।	१।।
१००	३।	५	००
१०१	३।	१।।।	००
१०२	३।	२३।।	।।
१०३	३	२०	२।
१०४	३	१७।	१
१०५	३	१४।	।।

ब्राण·	चौ·	कुकडे·	बदांम
१०६	३	११।	१
१०७	३	८।	२॥
१०८	३	५॥।	१
१०९	३	२॥।	००
११०	३	००	००
१११	२॥।	२२।	॥।
११२	२॥।	१८॥	२।
११३	२॥।	१७	॥
११४	२॥।	१४।	३॥
११५	२॥।	११॥	३।
११६	२॥।	९।	३॥
११७	२॥।	७	॥।
११८	२॥।	४॥	२॥
११९	२॥।	२।	१
१२०	२॥।	००	००
१२१	२॥	२२॥	३॥
१२२	२॥	२०॥	००
१२३	२॥	१८।	॥।
१२४	२॥	१६	२
१२५	२॥	१४	००
१२६	२॥	११॥	२॥
१२७	२॥	९॥।	१॥
१२८	२॥	७॥।	१
१२९	२॥	५॥।	१
१३०	२॥	३॥।	१॥।

ॐ.
६

6

	दाण.	चौ.	डकडे.	वदांम.
	१३१	३।।	१।।।	३।
	१३२	३।।	००	००
	१३३	३।	२३	२
	१३४	३।	३।।	००
	१३५	३।	१९।	३
	१३६	३।	१७।।	३।।
	१३७	३।	१५।।।	२
	१३८	३।	१४	२
	१३९	३।	१२।	३।।
	१४०	३।	१०।।	३।।
	१४१	३।	९	।।
	१४२	३।	७।	२।
	१४३	३।	५।।।	।
	१४४	३।	४	३।।।
	१४५	३।	३।।	१।।
	१४६	३।	१	।।
	१४७	२	२४।।	००
	१४८	२	२२।।।	।।
	१४९	२	२१।	३।।।
	१५०	२	२०	००
	१५१	२	१८।।।	।।।
	१५२	२	१७	१।।
	१५३	२	१५।।	३
	१५४	२	१४।	।।
	१५५	२	१३।।।	२।।
	१५६	२	११।।	।।
	१५७	२	१०	३
	१५८	२	८।।।	१।।।
	१५९	२	७।।	।।।

साल॰	चौ॰	डकडे॰	बदाम
१६०	२	६।	००
१६१	२	४॥।	३॥
१६२	२	३॥	३।
१६३	२	२।	३।
१६४	२	१	३॥
१६५	२	००	००
१६६	१॥।	२३॥।	॥।
१६७	१॥।	२२॥	१॥।
१६८	१॥।	२१।	२॥।
१६९	१॥।	२१॥	।
१७०	१॥।	१९	२
१७१	१॥।	१८	००
१७२	१॥।	१६॥।	१॥।
१७३	१॥।	१५॥।	००
१७४	१॥।	१४॥	२॥
१७५	१॥।	१३॥	२।
१७६	१॥।	१२॥	००
१७७	१॥।	११।	००
१७८	१॥।	१०।	२।
१७९	१॥।	९।	१॥।
१८०	१॥।	८।	१।
१८१	१॥।	७।	१
१८२	१॥।	६।	१
१८३	१॥।	५।	१।
१८४	१॥।	४।	१॥
१८५	१॥।	३।	२
१८६	१॥।	२।	२॥।

ॐ	दामा॰	चौ॰	डकडे॰	वर्दीम॰
७	१८७	२।।।	२।	३।।।
	१८८	२।।।	।।	।।
7	१८९	२।।	२४।।	२।।।
	१९०	२।।	२३।।	३
	१९१	२।।	२२।।।	।
	१९२	२।।	२१।।।	२
	१९३	२।।	२२	००
	१९४	२।।	२०	२।।
	१९५	२।।	१९	३।।।
	१९६	२।।	१८।	२।।।
	१९७	२।।	१७।।	।
	१९८	२।।	१६।।	३।।
	१९९	२।।	१५।।।	२।
	२००	२।।	१५	००
	२०१	२।।	१४	२।।।
	२०२	२।।	१३।	२।।।
	२०३	२।।	१२।।	२
	२०४	२।।	११।।।	।
	२०५	२।।	१०।।।	३।।
	२०६	२।।	१०	३
	२०७	२।।	९।	२।।।
	२०८	२।।	८।।	२।।
	२०९	२।।	७।।।	२।
	२१०	२।।	७	२।
	२११	२।।	६।	२।।
	२१२	२।।	५।।	२।।
	२१३	२।।	४।।।	३
	२१४	२।।	४	३।

दाणा·	चौ·	ढकडे·	वदांम·
२१५	२॥	३॥	००
२१६	२॥	२॥।	॥
२१७	२॥	२	२।
२१८	२॥	२।	२
२१९	२॥	॥	३
२२०	२॥	००	००
२२१	२।	२४।	२
२२२	२।	२३॥	२।
२२३	२।	२२॥।	३॥।
२२४	२।	२२।	२
२२५	२।	२१॥	२॥।
२२६	२।	२१	।
२२७	२।	२०।	२
२२८	२।	१९॥	३॥।
२२९	२।	१९	२॥।
२३०	२।	१८।	३॥।
२३१	२।	१७॥।	२॥।
२३२	२।	१७।	००
२३३	२।	१६॥	२
२३४	२।	१६	॥
२३५	२।	१५।	३
२३६	२।	१४॥।	२।
२३७	२।	१४।	००
२३८	२।	१३॥	२॥
२३९	२।	१३	२।
२४०	२।	१२॥	००
२४१	२।	११॥।	३
२४२	२।	११।	२॥

ॐ·
८

8

दाणा·	चौ·	टुकडे	वदाम·
२४३	२।	१०।।।	।।।
२४४	२।	१०।	००
२४५	२।	९।।	३
२४६	२।	९	२।
२४७	२।	८।	१।।
२४८	२।	८	१
२४९	२।	७।।	।।
२५०	२।	७	००
२५१	२।	६।	३।।
२५२	२।	५।।।	३।
२५३	२।	५।	३
२५४	२।	४।।।	२।।।
२५५	२।	४।	२।।
२५६	२।	३।।।	२।।
२५७	२।	३।	२।।
२५८	२।	२।।।	२।।
२५९	२।	२।	२।।
२६०	२।	१।।।	२।।
२६१	२।	१।	३
२६२	२।	।।।	३।
२६३	२।	।	३।।
२६४	२।	००	००
२६५	२	२४।।	।।
२६६	२	२४	१
२६७	२	२३।।	१।।
२६८	२	२३	२
२६९	२	२२।।	२।।।
२७०	२	२२	३।।

द्राम्मा:	बौ:	डुकडे:	वदाम:
२७१	१	२१|||	।
२७२	१	२१		१
२७३	१	२०				२
२७४	१	२०		३
२७५	१	२०	००
२७६	१	१९			१
२७७	१	१९	२
२७८	१	१८||	३।
२७९	१	१८|	॥
२८०	१	१७				१			
२८१	१	१७		३
२८२	१	१७	।
२८३	१	१६			२			
२८४	१	१६	३
२८५	१	१५|||	॥
२८६	१	१५		२
२८७	१	१४				३			
२८८	१	१४			२		
२८९	१	१४	३
२९०	१	१३							
२९१	१	१३		२		
२९२	१	१३	।
२९३	१	१२			२
२९४	१	१२		००
२९५	१	११				२
२९६	१	११		३			
२९७	१	११	२			
२९८	१	१०			००
२९९	१	१०		२

ॐ· ९

9

दाणा·	चौ·	ड्कडे·	बदाम·
३··	१	९·	००
३·१	१	९।।	३।
३·२	१	९।	।
३·३	१	८।।।	२।।
३·४	१	८।।	।।।
३·५	१	८	३।
३·६	१	७।।।	।।।
३·७	१	७।।	००
३·८	१	७	३।।
३·९	१	६।।।	।।।
३१·	१	६।	३।
३११	१	६	२।।।
३१२	१	५।।।	।
३१३	१	५।	२।।।
३१४	१	५	२
३१५	१	४।।।	।
३१६	१	४।	३
३१७	१	४	२।।।
३१८	१	३।।।	।।
३१९	१	३।	३।
३२·	१	३	२
३२१	१	२।।।	।।।
३२२	१	२।	३।।।
३२३	१	२	३।।
३२४	१	१।।।	२।।
३२५	१	१।।	।।।

दाना·	चौ·	कुकडे·	वदाम·
३२६	१	१	३।।।
३२७	१	।।।	२।।।
३२८	१	।।	१।।।
३२९	१	।	१
३३०	१	--	--
३३१	।।।	२४।।	३।
३३२	।।।	२४।	२।।
३३३	।।।	२४	२।
३३४	।।।	२३।।।	।।।
३३५	।।।	२३।।	००
३३६	।।।	२३	३।।
३३७	।।।	२२।।।	।।।
३३८	।।।	२२।।	२।
३३९	।।।	२२।	१।।
३४०	।।।	२२	१
३४१	।।।	२१।।।	।।
३४२	।।।	२१।।	००
३४३	।।।	२१	३।।
३४४	।।।	२०।।।	२।।
३४५	।।।	२०।।	२।
३४६	।।।	२०।	२
३४७	।।।	२०	१।।
३४८	।।।	१९।।।	१।
३४९	।।।	१९।।	१
३५०	।।।	१९।	।।

ॐ.	दाणा.	चौ.	ठुकडे.	बदाम.
१०	३५१	।।।	१९	।
	३५२	।।।	१८।।।	००
	३५३	।।।	१८।	३।।।
	३५४	।।।	१८	३।।।
	३५५	।।।	१७।।।	३।।
	३५६	।।।	१७।।	३
	३५७	।।।	१७।	३
	३५८	।।।	१७	३
	३५९	।।।	१६।।।	२।।।
	३६०	।।।	१६।।	२।।
	३६१	।।।	१६।	२।।
	३६२	।।।	१६	२।
	३६३	।।।	१५।।।	२।।
	३६४	।।।	१५।।	२।।
	३६५	।।।	१५।	२।।
	३६६	।।।	१५	२।।
	३६७	।।।	१४।।।	२।।।
	३६८	।।।	१४।।	२।।।
	३६९	।।।	१४।	३
	३७०	।।।	१४	३
	३७१	।।।	१३।।।	३
	३७२	।।।	१३।।	३।
	३७३	।।।	१३।	३।।
	३७४	।।।	१३	३।।।
	३७५	।।।	१३	००
	३७६	।।।	१२।।।	।
	३७७	।।।	१२।।	।।

साल॰	चौ॰	टुकडे	वर्तमान
३७८	।।।	१२।	।।।
३७९	।।।	१२	१
३८०	।।।	११।।	२
३८१	।।।	११।	२
३८२	।।।	१०।।।	३
३८३	।।।	१०।।	३।।।
३८४	।।।	१०।	३।।
३८५	।।।	१०।	२
३८६	।।।	१०।	००
३८७	।।।	१०	१
३८८	।।।	१०	।।।
३८९	।।।	९।।।	२।
३९०	।।।	९।।	२।।।
३९१	।।।	९।	३।।
३९२	।।।	९	३
३९३	।।।	८।।।	३।।
३९४	।।।	८।।।	००
३९५	।।।	८।।	।।।
३९६	।।।	८।	२।।
३९७	।।।	८	२।
३९८	।।।	७।।।	३।।।
३९९	।।।	७।।	३।।
४००	।।।	७।।	।।।
४०१	।।।	७।	।।।
४०२	।।।	७	२।।
४०३	।।।	६।।।	२।
४०४	।।।	६।।	३

ॐ·
११
॥

दाण·	चौ·	डकडे·	वटांस·
४·५	।।।	६।	३।।।
४·६	।।।	६।	।।
४·७	।।।	६	२।
४·८	।।।	५।।।	२
४·९	।।।	५।।	३
४१·	।।।	५।।	००
४११	।।।	५।	।।।
४१२	।।।	५	२।।
४१३	।।।	४।।।	३।।
४१४	।।।	४।।	३।।
४१५	।।।	४।।	।
४१६	।।।	४।	२।
४१७	।।।	४	३।
४१८	।।।	३।।।	३।
४१९	।।।	३।।।	।
४२·	।।।	३।।	२।
४२१	।।।	३।	३।
४२२	।।।	३	३।
४२३	।।।	३	।
४२४	।।।	२।।।	२।
४२५	।।।	२।।	३।
४२६	।।।	२।	३।
४२७	।।।	२।	।।
४२८	।।।	२	२।।।
४२९	।।।	१।।।	३।।।
४३·	।।।	१।।।	००
४३१	।।।	१।।	१

दाणा·	चौ·	टुकडे·	बदांम·
४३२	।।।	२।	३।
४३३	।।।	२	३।।
४३४	।।।	२	।।
४३५	।।।	।।।	३।।।
४३६	।।।	।।	३
४३७	।।।	।।	।
४३८	।।।	।	२।।
४३९	।।।	००	२।।
४४०	।।।	००	००
४४१	।।	२४।।।	२।
४४२	।।	२४।।	२।।
४४३	।।	२४।	३।।।
४४४	।।	२४।	२
४४५	।।	२४	२।।
४४६	।।	२४	००
४४७	।।	२३।।।	२।।
४४८	।।	२३।।	३
४४९	।।	२३।।	।।
४५०	।।	२३।	२।
४५१	।।	२३	२।।।
४५२	।।	२३	००
४५३	।।	२२।।।	२।।
४५४	।।	२२।।	३
४५५	।।	२२।।	।।
४५६	।।	२२।	२।।।

उँ.	ताणा.	चौ.	डुकडे.	वदाम.
२२	४५७	॥	२२	३।
	४५८	॥	२२	।।।
	४५९	॥	२१।।।	२।
12	४६०	॥	२१।।	३।।।
	४६१	॥	२१।।	२।
	४६२	॥	२१।	१।।।
	४६३	॥	२१।	।
	४६४	॥	२१	२।।।
	४६५	॥	२०।।।	३।
	४६६	॥	२०।।।	।।।
	४६७	॥	२०।।	१।
	४६८	॥	२०।	३।।।
	४६९	॥	२०।	२।
	४७०	॥	२०	३
	४७१	॥	२०	।।
	४७२	॥	१९।।।	१।
	४७३	॥	१९।।।	००
	४७४	॥	१९।।	२।।।
	४७५	।।।	१९।	३।।
	४७६	॥	१९।	२।
	४७७	॥	१९	३
	४७८	॥	१९	।।।
	४७९	॥	१८।।।	१।।
	४८०	॥	१८।।।	००
	४८१	॥	१८।।	२।
	४८२	॥	१८।	३।।

दाना·	चौ·	टुकडे·	वदाम·
४८३	॥	१८।	१।
४८४	॥	१८	३
४८५	॥	१८	।।।
४८६	॥	१७।।।	२।।
४८७	॥	१७।।।	।
४८८	॥	१७।।	२
४८९	॥	१७।	३।।।
४९०	॥	१७।	१।।
४९१	॥	१७	३।
४९२	॥	१७	२
४९३	॥	१६।।।	३
४९४	॥	१६।।।	१
४९५	॥	१६।।	३
४९६	॥	१६।।	१
४९७	॥	१६।	३
४९८	॥	१६।	।
४९९	॥	१६	२
५००	॥	१६	००
५०१	॥	१५।।।	२
५०२	॥	१५।।।	००
५०३	॥	१५।।	२
५०४	॥	१५।	३।।।
५०५	॥	१५।	१।।
५०६	॥	१५	३।।
५०७	॥	१५	१।।
५०८	॥	१४।।।	३।।

ॐ·

२३

13

दाणा·	चौ·	डकडे·	वदांम·
५०९	॥	१४।।।	२।।
५१०	॥	१४।।	३।।
५११	॥	१४।।	२।।
५१२	॥	१४।।	३।।
५१३	॥	१४।	२।।
५१४	॥	१४	३।।
५१५	॥	१४	२।।
५१६	॥	१३।।।	३।
५१७	॥	१३।।।	२।
५१८	॥	१३।।	३।
५१९	॥	१३।।	२।
५२०	॥	१३।	३।
५२१	॥	१३।	२।
५२२	॥	१३	३।।
५२३	॥	१३	२।।।
५२४	॥	१३	००
५२५	॥	१२।।।	२
५२६	॥	१२।।।	००
५२७	॥	१२।	२
५२८	॥	१२।	००
५२९	॥	१२	२।
५३०	॥	१२।	००
५३१	॥	१२	२।
५३२	॥	१२	॥
५३३	॥	११।।।	२।।।
५३४	॥	११।।।	।।।

दाणा॰	चौ॰	बकडे॰	बदाम॰
५३५	॥	११॥	३
५३६	॥	११॥।	१
५३७	॥	११।	३।
५३८	॥	११।	१॥
५३९	॥	११	३॥।
५४०	॥	११	१॥।
५४१	॥	११	।
५४२	॥	१०॥	२
५४३	॥	१०॥।	।
५४४	॥	१०॥	१॥
५४५	॥	१०॥	॥।
५४६	॥	१०।	३
५४७	॥	१०।	१।
५४८	॥	१०	३॥
५४९	॥	१०	१॥।
५५०	॥	१०	००
५५१	॥	९॥।	३॥।
५५२	॥	९॥।	॥
५५३	॥	९॥	२॥।
५५४	॥	९॥	१
५५५	॥	९।	३।
५५६	॥	९।	१॥
५५७	॥	९	३॥।
५५८	॥	९	२
५५९	॥	९	॥
५६०	॥	८॥।	३

ॐ·
१४

14

दाणा·	चौ·	डकडे·	वदांम·
५६१	॥	८।।।	२।
५६२	॥	८॥	३॥
५६३	॥	८॥	१।।।
५६४	॥	८॥	००
५६५	॥	८।	२॥
५६६	॥	८।	।।।
५६७	॥	८	३।
५६८	॥	८	१।।।
५६९	॥	८	।
५७०	॥	७।।।	२॥
५७१	॥	७।।।	।।।
५७२	॥	७॥	३
५७३	॥	७॥	१॥
५७४	॥	७॥	००
५७५	॥	७।	२।
५७६	॥	७।	।।।
५७७	॥	७	३।
५७८	॥	७	१।।।
५७९	॥	७	००
५८०	॥	६।।।	२॥
५८१	॥	६।।।	१
५८२	॥	६॥	३॥
५८३	॥	६॥	२
५८४	॥	६॥	॥
५८५	॥	६।	३
५८६	॥	६।	२।

𑆢𑆳𑆩𑆂	𑆖𑆿𑆂	𑆛𑆶𑆑𑆝𑆼𑆂	𑆧𑆢𑆳𑆩𑆂
𑇕𑇘𑇗	𑇆	𑇖	𑇓𑇆
𑇕𑇘𑇘	𑇆	𑇖	𑇒
𑇕𑇘𑇙	𑇆	𑇖	𑇆
𑇕𑇙𑇐	𑇆	𑇕𑇆𑇅	𑇓
𑇕𑇙𑇑	𑇆	𑇕𑇆𑇅	𑇑𑇆
𑇕𑇙𑇒	𑇆	𑇕𑇆𑇅	𑇐𑇐
𑇕𑇙𑇓	𑇆	𑇕𑇆	𑇒𑇆
𑇕𑇙𑇔	𑇆	𑇕𑇆	𑇑
𑇕𑇙𑇕	𑇆	𑇕𑇅	𑇓𑇆
𑇕𑇙𑇖	𑇆	𑇕𑇅	𑇒
𑇕𑇙𑇗	𑇆	𑇕𑇅	𑇆
𑇕𑇙𑇘	𑇆	𑇕	𑇓
𑇕𑇙𑇙	𑇆	𑇕	𑇑𑇆
𑇖𑇐𑇐	𑇆	𑇕	𑇐𑇐
𑇖𑇐𑇑	𑇆	𑇔𑇆𑇅	𑇒𑇆
𑇖𑇐𑇒	𑇆	𑇔𑇆𑇅	𑇑
𑇖𑇐𑇓	𑇆	𑇔𑇆	𑇓𑇆
𑇖𑇐𑇔	𑇆	𑇔𑇆	𑇒
𑇖𑇐𑇕	𑇆	𑇔𑇆	𑇆
𑇖𑇐𑇖	𑇆	𑇔𑇅	𑇓𑇅
𑇖𑇐𑇗	𑇆	𑇔𑇅	𑇑𑇆𑇅
𑇖𑇐𑇘	𑇆	𑇔𑇅	𑇅
𑇖𑇐𑇙	𑇆	𑇔	𑇓
𑇖𑇑𑇐	𑇆	𑇔	𑇑𑇆
𑇖𑇑𑇑	𑇆	𑇔	𑇅
𑇖𑇑𑇒	𑇆	𑇓𑇆𑇅	𑇓

१५

15

ॐ·	दाणा·	चौ·	डुकडे·	वदाम·
	८१३	।।	३।।।	२।।
	८१४	।।	३।।।	००
	८१५	।।	३।।	२।।
	८१६	।।	३।।	१
	८१७	।।	३।	३।।।
	८१८	।।	३।	२।।
	८१९	।।	३।	१
	८२०	।।	३	३।।।
	८२१	।।	३	२।।
	८२२	।।	३	१
	८२३	।।	२।।।	३।।।
	८२४	।।	२।।।	२
	८२५	।।	२।।।	।।
	८२६	।।	२।।	३।।
	८२७	।।	२।।	२।
	८२८	।।	२।।	१
	८२९	।।	२।	३।।
	८३०	।।	२।	२
	८३१	।।	२।	।।।
	८३२	।।	२	३।।
	८३३	।।	२	२।
	८३४	।।	२	१
	८३५	।।	१।।।	३।।
	८३६	।।	१।।।	२।
	८३७	।।	१।।।	१

साल.	चौ.	टुकड़े	बदाम.
६३८	॥	१॥	३॥
६३९	॥	१॥	२॥
६४०	॥	१॥	१
६४१	॥	१।	३।।।
६४२	॥	१।	२॥
६४३	॥	१।	१।
६४४	॥	१।	००
६४५	॥	१	२।।।
६४६	॥	१	१॥
६४७	॥	१	।
६४८	॥	।।।	३
६४९	॥	।।।	१।।।
६५०	॥	।।।	॥
६५१	॥	॥	३।
६५२	॥	॥	२
६५३	॥	॥	।।।
६५४	॥	।	३॥
६५५	॥	।	२।
६५६	॥	।	१
६५७	॥	००	३।।।
६५८	॥	००	२॥
६५९	॥	००	१।
६६०	॥	००	००
६६१	।	२४।।।	२।।।
६६२	।	२४।।।	१॥

ॐ·
१६

16

शाका·	चौ·	इकडं·	वदांस·
६६३	।	२४।।।	।
६६४	।	२४।।	३
६६५	।	२४।।	२
६६६	।	२४।।	।।।
६६७	।	२४।	३।।
६६८	।	२४।	२।।
६६९	।	२४।	१।
६७०	।	२४।	००
६७१	।	२४	२।।।
६७२	।	२४	१।।।
६७३	।	२४	।।
६८४	।	२३।।।	३।
६७५	।	२३।।।	२।
६७६	।	२३।।।	१
६७७	।	२३।।।	००
६७८	।	२३।।	२।।।
६७९	।	२३।।	१।।
६८०	।	२३।।	।।
६८१	।	२३।	३।।
६८२	।	२३।	२।
६८३	।	२३।	१।
६८४	।	२३।	००
६८५	।	२३	२।।।
६८६	।	२३	१।।।
६८७	।	२३	।।।

दाणा·	चौ·	टुकडे·	बदाम·
६८८	।	२२।।।	३।।
६८९	।	२२।।।	२।।
६९०	।	२२।।।	१।।
६९१	।	२२।।।	।।
६९२	।	२२।।	३।।
६९३	।	२२।।	२।।
६९४	।	२२।।	१।।
६९५	।	२२।।	।
६९६	।	२२।	३
६९७	।	२२।	१।।।
६९८	।	२२।	।।
६९९	।	२२	३।।
७००	।	२२	२।।
७०१	।	२२	१।।
७०२	।	२२	।।
७०३	।	२१।।।	३।
७०४	।	२१।।।	२
७०५	।	२१।।।	१
७०६	।	२१।।।	००
७०७	।	२१।।	२।।।
७०८	।	२१।।	१।।।
७०९	।	२१।।	।।।
७१०	।	२१।	३।।।
७११	।	२१।	२।।।
७१२	।	२१।	१।।।
७१३	।	२१।	।।।
७१४	।	२१	३।।।

ॐ

१८

17

दाणा	चौ	इकडे	वदाम
७१५	।	२१	२।।।
७१६	।	२१	१।।।
७१७	।	२१	।।।
७१८	।	२०।।।	३।।।
७१९	।	२०।।।	२।।।
७२०	।	२०।।।	१।।
७२१	।	२०।।।	।।
७२२	।	२०।।	२।।।
७२३	।	२०।।	२।।
७२४	।	२०।।	१।।
७२५	।	२०।।	।।
७२६	।	२०।	३।
७२७	।	२०।	२।
७२८	।	२०।	१।
७२९	।	२०।	।
७३०	।	२०	३।।
७३१	।	२०	२।।
७३२	।	२०	१।।
७३३	।	२०	।।
७३४	।	१९।।।	३।।
७३५	।	१९।।।	२।।
७३६	।	१९।।।	१।।
७३७	।	१९।।।	।।
७३८	।	१९।।	३।।
७३९	।	१९।।	२।।
७४०	।	१९।।	१।।
७४१	।	१९।।	।।
७४२	।	१९।	३।।
७४३	।	१९।	२।।

दाणा·	चौ·	डकडे·	वदांम·
७४४	।	१९।	२।।
७४५	।	१९।	।।
७४६	।	१९	३।।
७४७	।	१९	२।।
७४८	।	१९	१।।
७४९	।	१९	।।।
७५०	।	१९	००
७५१	।	१८।।।	३
७५२	।	१८।।।	२
७५३	।	१८।।।	१
७५४	।	१८।।।	।
७५५	।	१८।।	३।।
७५६	।	१८।।	२।।
७५७	।	१८।।	१।।।
७५८	।	१८।।	१
७५९	।	१८।।	।
७६०	।	१८।	३
७६१	।	१८।	२
७६२	।	१८।	१
७६३	।	१८।	००
७६४	।	१८	३
७६५	।	१८	२।
७६६	।	१८	१।
७६७	।	१८	।।
७६८	।	१७।।।	३।।
७६९	।	१७।।।	२।।।
७७०	।	१७।।।	१।।।
७७१	।	१७।।।	१
७७२	।	१७।।।	००
७७३	।	१७।।	३।
७७४	।	१७।।	२।

ॐ	दाणा	चौ	डुकडे	वदाम
	७७५	।	२७॥	२॥
१८	७७६	।	२७॥	॥
	७७७	।	२७।	३॥।
18	७७८	।	२७।	३
	७७९	।	२७।	२
	७८०	।	२७।	१
	७८१	।	२७।	००
	७८२	।	२७	३।
	७८३	।	२७	२।
	७८४	।	२७	१।
	७८५	।	२७	॥।
	७८६	।	२६॥।	३॥।
	७८७	।	२६॥।	२॥।
	७८८	।	२६॥।	२
	७८९	।	२६॥।	१।
	७९०	।	२६॥।	।
	७९१	।	२६॥	३॥
	७९२	।	२६॥	२॥
	७९३	।	२६॥	१॥
	७९४	।	२६॥	१
	७९५	।	२६॥	००
	७९६	।	२६।	३।
	७९७	।	२६।	२।
	७९८	।	२६।	१।
	७९९	।	२६।	॥।
	८००	।	२६।	००
	८०१	।	२६	३।
	८०२	।	२६	२॥
	८०३	।	२६	१॥।

दाराण॰	चौ॰	इकडे॰	वदाम॰
द॰४	॥	१८	।।।
द॰५	।	१८	००
द॰६	।	१५।।।	३।
द॰७	।	१५।।।	२।।
द॰८	।	१५।।।	१।।।
द॰९	।	१५।।।	१
द१०	।	१५।।।	।
द११	।	१५।।	३।।
द१२	।	१५।।	२।।
द१३	।	१५।।	१।।।
द१४	।	१५।।	१
द१५	।	१५।।	।
द१६	।	१५।	३।।
द१७	।	१५।	२।।।
द१८	।	१५।	२
द१९	।	१५।	१
द२०	।	१५।	।
द२१	।	१५	३।।
द२२	।	१५	२।।
द२३	।	१५	१।।।
द२४	।	१५	१
द२५	।	१५	।
द२६	।	१४।।।	३।।।
द२७	।	१४।।।	२।।।
द२८	।	१४।।।	२
द२९	।	१४।।।	२।
द३०	।	१४।।।	।।

ॐ	दाणा	चौ	डकडे	वदाम
१५	८३१	।	१४।।	३।।।
	८३२	।	१४।।	३
	८३३	।	१४।।	२।
19	८३४	।	१४।।	२।
	८३५	।	१४।।	।।।
	८३६	।	१४।।	००
	८३७	।	१४।	३।
	८३८	।	१४।	२।।
	८३९	।	१४।	२।।।
	८४०	।	१४।	१
	८४१	।	१४।	।
	८४२	।	१४	३।।
	८४३	।	१४	२।।।
	८४४	।	१४	२।।।
	८४५	।	१४	१
	८४६	।	१४	००
	८४७	।	१४।।।	३।।
	८४८	।	१३।।।	२।।।
	८४९	।	१३।।।	२
	८५०	।	१३।।।	२।
	८५१	।	१३।।।	।।
	८५२	।	१३।।	३।।।
	८५३	।	१३।।	३
	८५४	।	१३।।	२।
	८५५	।	१३।।	२।।
	८५६	।	१३।।	।।।
	८५७	।	१३।।	००

खारा·	चौ·	ठुकडे·	वदाम·
८५८	।	१३।	३।
८५९	।	१३।	२।।
८६०	।	१३।	१।।
८६१	।	१३।	१।
८६२	।	१३।	।।।
८६३	।	१३	३।।।
८६४	।	१३	३
८६५	।	१३	२।
८६६	।	१३	१।।
८६७	।	१३	।।।
८६८	।	१३	००
८६९	।	१२।।।	३।।
८७०	।	१२।।।	२।।।
८७१	।	१२।।।	२
८७२	।	१२।।।	१।।
८७३	।	१२।।।	।।।
८७४	।	१२।।।	००
८७५	।	१२।।	३।।
८७६	।	१२।।	२।।।
८७७	।	१२।।	२
८७८	।	१२।।	१।
८७९	।	१२।।	।।।
८८०	।	१२।।	००
८८१	।	१२।	३।।
८८२	।	१२।	३
८८३	।	१२।	२
८८४	।	१२।	१।।
८८५	।	१२।	।।।
८८६	।	१२।	००

ॐ
२
20

दाण	चौ	डकडे	वदाम
८८७	।	१२	३।
८८८	।	१२	२।।
८८९	।	१२	२।।।
८९०	।	१२	२।
८९१	।	१२	।।।
८९२	।	१२	००
८९३	।	११।।।	३।
८९४	।	११।।।	३
८९५	।	११।।।	२।
८९६	।	११।।।	१।।
८९७	।	११।।।	।।
८९८	।	११।।।	००
८९९	।	११।।	३।।
९००	।	११।।	२।।
९०१	।	११।।	१।।।
९०२	।	११।।	१।
९०३	।	११।।	।।।
९०४	।	११।।	००
९०५	।	११।	३।।
९०६	।	११।	२।।।
९०७	।	११।	२।
९०८	।	११।	१।।
९०९	।	११।	१
९१०	।	११।	।
९११	।	११	३।।
९१२	।	११	३
९१३	।	११	२।।
९१४	।	११	१।।।

दाला·	चौ·	कुकडे·	वदाम·
५१५	।	११	२।
५१६	।	११	।।।
५१७	।	११	००
५१८	।	१०।।।	३।
५१९	।	१०।।।	३।।
५२०	।	१०।।।	२।।।
५२१	।	१०।।।	२।
५२२	।	१०।।।	।।।
५२३	।	१०।।।	।
५२४	।	१०।।	३।।
५२५	।	१०।।	३
५२६	।	१०।।	२।।
५२७	।	१०।।	२
५२८	।	१०।।	१।।
५२९	।	१०।।	१
५३०	।	१०।।	।
५३१	।	१०।	३।।।
५३२	।	१०।	३
५३३	।	१०।	२।
५३४	।	१०।	१।।
५३५	।	१०।	।।।
५३६	।	१०।	००
५३७	।	१०	३।।
५३८	।	१०	३
५३९	।	१०	२।।
५४०	।	१०	१।।।
५४१	।	१०	१।

ॐ	दाणा	चौ	डकडे	बदाम
	९४२	।	९०	।।
२१	९४३	।	९०	००
	९४४	।	९।।।	३।।
२)	९४५	।	९।।।	३
	९४६	।	९।।।	२।
	९४७	।	९।।।	२।।।
	९४८	।	९।।।	२।
	९४९	।	९।।।	।।
	९५०	।	९।।।	००
	९५१	।	९।।	३।।
	९५२	।	९।।	३
	९५३	।	९।।	२।।
	९५४	।	९।।	१।।।
	९५५	।	९।।	१
	९५६	।	९।।	।।
	९५७	।	९।	३।।।
	९५८	।	९।	३।
	९५९	।	९।	२।।।
	९६०	।	९।	२
	९६१	।	९।	१।।
	९६२	।	९।	।।।
	९६३	।	९।	।
	९६४	।	९	३।।।
	९६५	।	९	३।
	९६६	।	९	२।।।
	९६७	।	९	२।
	९६८	।	९	१।।

दाण·	चौ·	टुकडे·	बदाम·
९६९	।	९	१
९७०	।	९	॥
९७१	।	९	००
९७२	।	८।।।	३॥
९७३	।	८।।।	३
९७४	।	८।।।	२॥
९७५	।	८।।।	२
९७६	।	८।।।	१।
९७७	।	८।।।	॥
९७८	।	८।।।	००
९७९	।	८॥	३॥
९८०	।	८॥	३
९८१	।	८॥	२॥
९८२	।	८॥	१।।।
९८३	।	८॥	१।
९८४	।	८॥	।।।
९८५	।	८॥	।
९८६	।	८।	३।।।
९८७	।	८।	३।
९८८	।	८।	२।।।
९८९	।	८।	२।
९९०	।	८।	१।।।
९९१	।	८।	१।
९९२	।	८।	।।।
९९३	।	८।	।
९९४	।	८	३।।।
९९५	।	८	३।

ॐ.	दाणा.	चौ.	डकडे.	वदाम.
२२	९९६	।	८	२।।।
	९९७	।	८	२
	९९८	।	८	२।।
22	९९९	।	८	।।।
	१०००	।	८	००

टंक	हाएा·	चौ·	डकडे·	वदांम·
०	−)	००	००	३॥
०	=)	००	।।।	२
०	≡)	००	२	।
०	।)	००	३॥	२।
०	।−)	००	५॥	१
०	।=)	००	८	१
०	।≡)	००	९।।।	३।
०	॥)	००	१४।	१
०	॥−)	००	१८	२
०	॥=)	००	२२।	२
०	॥≡)	०।	२	२।
०	।।।)	।	७॥	००
०	।।।−)	।	१२।।।	२
०	।।।=)	।	१८।।।	००
०	।।।≡)	॥	।	००
०	२)	॥	७॥	।।।
०	२−)	॥	१४॥	३
०	२=)	॥	२२॥	००
०	२≡)	।।।	५।।।	००
०	२।)	।।।	१४॥	३
०	२।−)	।।।	२३॥	३
०	२।=)	१	८।	१
०	२।≡)	१	१८।	२॥
०	२॥)	१।	४	००

ॐ	टंक	दाम	चौ	डुकडे	वदांम
२३	०	१॥-)	१।	१८॥।	१
23	०	१॥=)	१॥	१॥।	००
	०	१॥≡)	१॥	१३	३
	०	१॥।)	१॥।	००	॥
	०	१॥।-)	१॥।	१३	२
	०	१॥।=)	२	१।	३
		१॥।≡)	२	१५	००
		२)	२।	४	२॥
		२-)	२।	१८।	३
		२=)	२॥	९॥।	००
		२≡)	२॥	२४	२
		२।)	२॥।	१५	००
		२।-)	३	८।	२
		२।=)	३	२३	२॥
		२।≡)	३।	५।	१
		२॥)	३॥	८	२
		२॥-)	३॥।	१	३
		२॥=)	३॥।	१९॥।	००
		२॥≡)	४	१३॥।	००
		२॥।)	४।	८	॥।
		२॥।-)	४॥	३॥	२
		२॥।=)	४॥	२३॥	००
		२॥।≡)	४॥।	१९॥	००
		३)	५	१५॥	००
		३-)	५।	१२।	१

टंक	दाणा·	चौ·	कुकडे·	बदाम·
०	३=)	५॥	९॥	००
	३≡)	५।।।	७।	१
	३।)	६	५	१
	३।-)	६।	३॥	२॥
	३।=)	६॥	२॥	००
	३।≡)	६।।।	२।।।	००
	३॥)	७	१।।।	१
	३॥-)	७।	२।	२
	३॥=)	७॥	२।।।	१
	३॥≡)	७।।।	४	२
	३।।।	८	५॥	२।
	३।।।-)	८।	७।।।	००
	३।।।=)	८॥	९॥	००
	३।।।≡)	८।।।	१३।	१
	४)	९	१६।।।	००
	४-)	९।	२०।	१
	४=)	९॥	२४।।।	००
	४≡)	१०	४॥	२
	४।)	१०।	९।।।	२
	४।-)	१०॥	१५।	३
	४।=)	१०।।।	२१।	००
	४।≡)	११।	३	२
	४॥)	११॥	९	२॥
	४॥-)	११।।।	१७॥	००
	४॥=)	१२।	॥	१

ॐ. २४

24

टंक	दाणा.	चौ.	ढकडे.	बदाम.
०	४।।=)	१२।।	८।।।	२
	४।।।)	१२।।।	९।।	००
	४।।।−)	१३।	१।।।	२।।
	४।।।=)	१३।	११।	२।।
	४।।।≡)	१३।।।	२।।।	३
	५)	१४।	७।	००
	५−)	१४।।	१८।	२
	५=)	१५	१४।।।	१
	५≡)	१५।	१६।।।	००
	५।)	१५।।।	४	१।।
	५।−)	१६	१६।।।	२।।
	५।=)	१६।।	५	३
	५।≡)	१६।।।	१८।।।	३
	५।।)	१७।	८	१।।।
	५।।−)	१७।।	२२।	३
	५।।≡)	१८	१२।।	००
	५।।≡)	१८।।	३।।	।।
	५।।।)	१८।।।	१९।	००
	५।।।−)	१९।	१०।।	००
	५।।।=)	१९।।।	२।।	००
	५।।।≡)	२०	१९।।।	००
	६)	२०।।	१२।।	००
	६−)	२१	५।।	२।।
	६=)	२१।	२४।	००
	६≡)	२१।।।	१८।।।	००
	६।)	२२।	१२।।।	२।।।

टंक	दाणा॰	जौ॰	तुकडे॰	बदाम॰
०	६।-)	२२।।।	७॥	२।
	६।=)	२३।	३	२।
	६।≡)	२३॥	२४।	००
	६॥)	२४	२०॥	३
	६॥-)	२४॥	१७।	२।
	६॥=)	२५	१४।	३॥
	६॥≡)	२५॥	१२	२
	६।।।)	२६	१०।	२
	६।।।-)	२६॥	८।।।	३
	६।।।=)	२७	८।	१
	६।।।≡)	२७॥	७।	१॥
	७)	२८	७।	१।
	७-)	२८॥	७॥	००
	७=)	२९	८।	००
	७≡)	२९॥	५।	००
	७।)	३०	११॥	००
	७।-)	३०॥	१३॥	००
	७।=)	३१	१६।	००
	७।≡)	३१॥	१९	००
	७॥)	३२	२२॥	०१
	७॥-)	३२।।।	११॥	१
	७॥=)	३३।	६	००
	७॥≡)	३३।।।	१०॥	।
	७।।।)	३४।	१६	००
	७।।।-)	३४।।।	२०॥	००
	७।।।=)	३५॥	३	००
	७।।।≡)	३६	५॥	२।

ॐ.	टंक	दाण.	चौ.	डुकड़े.	वदाम.
२५		८)	३६॥	१६॥	२
		८-)	३७	२४।	२।
25		८=)	३७॥।	७	३
		८≡)	३८।	१५।	००
		८।)	३८॥।	२४॥	००
		८।-)	३९॥	८॥	००
		८।=)	४०	१८॥।	००
		८।≡)	४०॥।	३॥	२
		८॥)	४१।	१४।	२
		८॥-)	४२	॥	००
		८॥=)	४२॥	१२	००
		८॥≡)	४३	२४	००
		८॥।)	४३॥	२॥।	००
		८॥।-)	४४।	२४।	००
		८॥।=)	४५	१२॥	००
		८॥।≡)	४५॥।	३	००
		९)	४६।	१५।	३
		९-)	४७	५।	००
		९=)	४७॥	२०।	००
		९≡)	४८॥	१	००
		९।)	४९	२	१
		९।-)	४९॥	१८॥	००
		९।=)	५०।	१०॥	००
		९।≡)	५१	२॥।	००

टंक	हाला·	चौ·	टुकड़े·	वदाम·
०	९।।)	५१।।	२।।	००
	९।।-)	५२।	१४	००
	९।।=)	५३	७।।	१।।
	९।।≡)	५३।।।	२।।।	००
	९।।।)	५४।	२२।	००
	९।।।-)	५५	१६।	००
	९।।।=)	५५।।।	१७।।।	००
	९।।।≡)	५६।।	।।।	००
	१०)	५७।	४।	००
	१०-)	५८	१	००
	१०=)	५८।।	२३।	००
	१०≡)	५९।	२२।	००
	१०।)	६०	१९।	००
	१०।-)	६०।।।	१७।।	००
	१०।=)	६१।।	१७	००
	१०।≡)	६२।	१६।	२
	१०।।)	६३	१६।	२।
	१०।।-)	६३।।।	१६।।।	००
	१०।।=)	६४।।	१७।।	००
	१०।।≡)	६५।	१९।	००
	१०।।।)	६६	२।।।	००
	१०।।।-)	६६।।।	२३	००
	१०।।।=)	६७।।।	७।।।	००
	१०।।।≡)	६८।।	३।।	००
	११)	६९।	७।	००

ॐ	टंक	दाण	चौ	तुकडे	वदाम
२८	०	११-)	७०।	११।	००
		११=)	७०।।।	१५।।।	००
२८		११≡)	७१।।	२०।।	२।
		११।)	७२।।	००	००
		११।-)	७३।	८।।	००
		११।=)	७४	१३	००
		११।≡)	७४।।।	२०।	००
		११।।)	७५।।।	१।।।	००
		११।।-)	७६।।	९।	३
		११।।=)	७७।	१७।	३
		११।।≡)	७८।	।।।	२
		११।।।	७९	९०	००
		११।।।-)	७९।।।	१९।।।	००
		११।।।=)	८०।।।	४।।	००
		११।।।≡)	८१।।	१४।	००
		१२)	८२।।	००	००
		१२-)	८३।	११।	००
		१२=)	८४	२२।।।	००
		१२≡)	८५	९।।।	००
		१२।)	८५।।।	२२।।	००
		१२।-)	८६।।।	२०।	००
		१२।=)	८७।।	२३।।	००
		१२।≡)	८८।।	१२।।	००
		१२।।)	८९।।	९।।।	००
		१२।।-)	९०।	१८।।	००

टंक	हाणा·	चौ·	डकडे·	वदाम·
०	१२।।=)	९१।	६।।।	००
	१२।।≡)	९२	२२।	००
	१२।।।)	९३	१३।।।	००
	१२।।।-)	९४	६।।	००
	१२।।।=)	९४।।।	२२।	००
	१२।।।≡)	९५।।।	१६।	००
	१३)	९६।।।	७।।।	००
	१३-)	९७।।।	।।।	००
	१३=)	९८।।	१९।।	००
	१३≡)	९९।।	१३।।	००
	१३।)	१००।।	८।	००
	१३।-)	१०१।।	३।।	००
	१३।=)	१०२।	२४	००
	१३।≡)	१०३।	२०	००
	१३।।)	१०४।	१६।	००
	१३।।-)	१०।।	१३।	००
	१३।।=)	१०६।	१०।।	००
	१३।।≡)	१०७।	८।।	००
	१३।।।)	१०८।	६।।।	००
	१३।।।-)	१०९।	५।	००
	१३।।।=)	११०	४।।।	००
	१३।।।≡)	१११।	४	००
	१४)	११२।	९	००
	१४-)	११३।	४।।।	००
	१४=)	११४।	५।।	००
	१४≡)	११५।	७	००

ओं·	टंक	शाण·	चौ·	डुकडे·	बदाम·
२७	०	१४।)	११६।	८।।।	००
27		१४।-)	११७।	११।	००
		१४।=)	११८।	१३।।।	००
		१४।≡)	११९।	१७	००
		१४।।)	१२०।	२४।।।	००
		१४।।-)	१२१।	२४।।	००
		१४।।=)	१२२।।	४	००
		१४।।≡)	१२३।।	९	००
		१४।।।)	१२४।	१४।।	००
		१४।।।-)	१२५।।	२०।	००
		१४।।।=)	९	१।	००
		१४।।।≡)	१२६।।।	७८।।	००
		१५)	१२८।।।	१५।।	००
		१५-)	१२९।।।	२३।	००
		१५=)	१३१	१६।	००
		१५≡)	१३२	१४।।।	००
		१५।)	१३३	२३।।।	००
		१५।-)	१३४।	८।	००
		१५।=)	१३५।	१८	००
		१५।≡)	१३६।।	३।।	००
		१५।।)	१३७।।	१४।।	००
		१५।।-)	१३८।।।	।।	००
		१५।।=)	१३९।।।	१२	००
		१५।।≡)	१४०।।।	२३	००
		१५।।।)	१४२	११।।	००
		१५।।।-)	१४३	२४।।	००
		१५।।।=)	१४४।।	१३।	००

टंक	ग्राम·	तो·	रुकडे·	वर्गम·
				००
०	१५॥≡	१४५॥	३	००
	१६	१४६॥	१६॥।	००
	१६-	१४७॥।	६॥	००
	१६=	१४८॥।	२१॥	००
	१६≡	१५०	१२।	००
	१६।	१५१।	३॥	००
	१६।-	१५२।	२०॥	००
	१६।=	१५३।	११॥।	००
	१६।≡	१५४॥।	५	००
	१६॥	१५५॥।	२२॥	००
	१६॥-	१५७	१६॥।	००
	१६॥=	१५८।	९॥।	००
	१६॥≡	१५९॥	४।	००
	१६॥।	१६०॥	२३॥।	००
	१६॥।-	१६१॥।	१९	००
	१६॥।=	१६३	१४॥	००
	१६॥।≡	१६४।	१०॥।	००
	१७	१६५॥	७।	००
	१७-	१६६॥।	४	००
	१७=	१६८	१॥	००
	१७≡	१६९	२४॥	००
	१७।	१७०।	२२॥।	००
	१७।-	१७१॥	२१॥	००
	१७।=	१७२॥।	२०॥	००
	१७।≡	१७४	२०॥	

	टंक	दाग॰	चौ॰	टुकडे॰	बदाम॰
ॐ॰		१७॥)	१७५।	२०॥।	००
२८		१७॥-)	१७६॥	२१	००
		१७॥=)	१७७॥।	२२	००
28		१७॥≡)	१७९	२३॥	००
		१७॥।)	१८०॥	॥	००
		१७॥।-)	१८०॥।	२॥	००
		१७॥।=)	१८३	५।	००
		१७॥।≡)	१८४।	८॥।	००
		१८)	१८५॥	१३॥	००
		१८-)	१८६॥।	१६॥	००
		१८=)	१८८	२२	००
		१८≡)	१८९॥	१२	००
		१८।)	१९०॥।	६॥।	००
		१८।-)	१९२	१३॥	००
		१८।=)	१९३।	१५	००
		१८।≡)	१९४॥।	॥।	००
		१८॥)	१९६	८	००
		१८॥-)	१९७।	१५॥।	००
		१८॥=)	१९८॥	२४	००
		१८॥≡)	२००	७॥	००
		१८॥।)	२०१।	१६॥	००
		१८॥।-)	२०३॥।	११	००
		१८॥।=)	२०४	११	००
		१८॥।≡)	२०५।	२३॥	००
		१९)	२०६॥।	७।	००

टंक	हाएल·	चौ·	तुकडे·	वदाम·
	१९-)	२०८	१८।।	००
	१९=)	२०९।।	५।	००
	१९≡)	२१०।।।	१७	००
	१९।)	२१२।	९।।।	००
	१९।-)	२१३।।	१७।।।	००
	१९।=)	२१५	८।।	००
	१९।≡)	२१६	२०।	००
	१९।।)	२१७।।।	१०	००
	१९।।-)	२१९।	००	००
	१९।।=)	२२०।।	१५।	००
	१९।।≡)	२२२	७	००
	१९।।।)	२२३	२२।	०१
	१९।।।-)	२२४।।।	१४	१
	१९।।।=)	२२६।	८	२
	१९।।।≡)	२२७।।	२३।।।	००
	२०)	२२९	१८।।।	००
	२०-)	२३०।।	१०	००
	२०=)	२३२	३।।।	००
	२०≡)	२३३।	२२।	००
	२०।)	२३४।।।	१६	००
	२०।-)	२३६।	१३।।	००
	२०।=)	२३७।।।	९	००
	२०।≡)	२३९।	५।	००
	२०।।)	२४०।।।	०२	००
	२०।।-)	२४२	२३।।।	००

ॐ· २९

29

	टंक	दाम·	चौ·	डकडे·	बदाम·
		२·॥=)	२४३॥	३।।।	००
		२·॥≡)	२४५	१९	००
		२·।।।)	२४६॥	१७।	००
		२·।।।-)	२४८	१६॥	००
		२·।।।=)	२४९॥	१५।।।	००
		२·।।।≡)	२५१	१५।	००
		३)	२५२॥	१५॥	००
		३-)	२५४	१६॥	००
		३=)	२५५॥	१७	००
		३≡)	२५७	१९	००
		३।)	२५८॥	२·।	००
		३।-)	२६·	२२।।।	००
		३।=)	२६१॥	२।।।	००
		३।≡)	२६३।	४।	००
		३॥)	२६४॥	६	००
		३॥-)	२६६।	१२।	००